एम.पी.एच.आई.एन.२०१२/४५०६९ ।।ओ३म्।। डाक पंजीयन : एम.पी./.आई.डी.सी./१४०५/२०२१-२३

प्रत्येक माह दिनांक २५ को प्रकाशित एवं २८ को प्रेषित

हिन्दी-मासिक

वैदिक संसार

● वर्ष : १२ ● अंक : ११ ● २५ सितम्बर २०२३, इन्दौर (म.प्र.) ● मूल्य : ५०/- ● कुल पृष्ठ : ३६

उस देश की, उन व्यक्तियों की अत्यन्त दुर्दशा क्यों नहीं होगी जो एक परमात्मा को छोड़कर इतर की उपासना करते हैं। -महर्षि दयानन्द सरस्वती

वैदिक संसार, इन्दौर एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती विद्यार्थी आवास आश्रम, बड़वानी द्वारा सम्पन्न विविध गतिविधियाँ

कृपया पत्रिका के सम्पादक परिवर्तन और मूल्य वृद्धि पर ध्यान दें।

सहकारी निरीक्षक श्रीमती प्रभा बघेल के आश्रम पधारने पर सत्यार्थ प्रकाश किया गया भेंट। (विस्तृत समाचार पृष्ठ २९ पर)

पारिवारिक महिलाओं की आश्रम पर किटी पार्टी के प्रारम्भ में यज्ञोपवितधारी दैनिक अग्निहोत्री श्रीमती दुर्गा शर्मा के नेतृत्व में देवयज्ञ

आर्य समाज राजोदा (देवास) में आर्य वीरों का किया गया अभिनन्दन (विस्तृत समाचार पृ.२९ पर)

महर्षि दयानन्द सरस्वती विद्यार्थी आवास आश्रम, बड़वानी पर हर्षोल्लास पूर्वक स्वतन्त्रता दिवस मनाया गया। (विस्तृत समाचार पृष्ठ २९ पर)

परमपिता परमेश्वर के आनन्द की वर्षा के संग घनघोर वर्षा के मध्य स्वामी हरिश्वरानन्द सरस्वती अहमदाबाद के ब्रह्मत्व में तथा जिला शाजापुर (म.प्र.) के आर्य समाज बेरछा के प्रधान श्री आनन्दीलालजी नाहर एवं आर्य समाज झोकर के वरिष्ठजन श्री रमेशचन्द्रजी इन्द्रिया एवं अधिवक्ता श्री रमेशचन्द्रजी पाटीदार के दो दिवसीय महर्षि दयानन्द सरस्वती विद्यार्थी आवास आश्रम, बड़वानी आगमन पर आपके आतिथ्य में दिनांक १६ सितम्बर को बेटी प्रज्ञा बमनका का जन्म दिवस एवं दिनांक १७ सितम्बर को साप्ताहिक यज्ञ-सत्संग के साथ बेटी मोनिका डावर व सुपौत्री स्वस्ति का जन्म दिवस अत्यन्त हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया एवं वेद ज्ञान की प्रवाहित गंगा में विद्यार्थियों व उपस्थित धर्मप्रेमियों ने स्नान किया। -सुखदेव शर्मा

ऋत्विक वरण रूप में यज्ञब्रह्मा एवं अतिथियों का सम्मान करते हुए बेटी प्रज्ञा।

मुख्य यजमान के स्थान पर अपनी बहन पद्मावती के साथ विराजित होकर आश्रम दादीजी श्रीमती दुर्गा शर्मा एवं सखियों के साथ यज्ञाहुति प्रदान करते बेटी प्रज्ञा।

उपस्थित अतिथियों के करकमलों द्वारा सत्यार्थ प्रकाश, व्यवहार भानू, कुछ करो कुछ बनो, विद्यार्थी की दिनचर्या साहित्य भेंट कर आश्रम संचालक सुखदेव शर्मा धर्मपत्नी श्रीमती दुर्गा शर्मा तथा विद्यार्थियों के द्वारा बेटी प्रज्ञा को शुभाशीष/शुभकामनाएँ प्रदान की गई।

सखियों द्वारा बेटी मोनिका का अभिनन्दन

सुपौत्री स्वस्ति का अभिनन्दन करते बेटी सुनीता संग है दादी

मुख्य यजमान के आसन पर विराजित हो यज्ञाहुति प्रदान करती बेटी मोनिका एवं सुपौत्री स्वस्ति

साप्ताहिक वृहद यज्ञ के साथ जन्मदिवस की विशेष आहुतियाँ प्रदान करती बालिकाएँ। उपस्थित अतिथिगण एवं परिजन।

उपस्थित अतिथियों एवं परिजनों तथा बालिकाओं द्वारा बेटी मोनिका, सुपौत्री स्वस्ति को शुभाशीष/शुभकामनाएँ प्रदान की गई तथा अतिथियों के करकमलों द्वारा बेटी मोनिका, बेटी ललिता एवं सुपौत्री स्वस्ति को वैदिक साहित्य भेंट किया गया।

जो बिना भूख के खाते हैं और जो भूख लगने पर भी नहीं खाते, वे रोग सागर में गोता लगाते हैं। –महर्षि दयानन्द सरस्वती

प्राणी मात्र के हितकारी वैदिक धर्म का सजग प्रहरी

वैदिक संसार

वर्ष : १२, अंक : ११

अवधि : मासिक, भाषा : हिन्दी

प्रकाशन आंग्ल दिनांक : २५ सितम्बर, २०२३

- स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक
  सुखदेव शर्मा, इन्दौर
  ०९४२५०६९४९१
- सम्पादक
  ओमप्रकाश आर्य, आर्य समाज रावतभाटा (राज.) चलभाष : ९४६२३१३७९७
- पत्र व्यवहार का पता
  महर्षि दयानन्द स. विद्यार्थी आवास आश्रम
  ४७, जांगिड भवन, कालिका माता रोड, बड़वानी (म.प्र.) पिन–४५१५५१
- अक्षर संयोजन–
  नितिन पंजाबी (वी.एम. ग्राफिक्स), इन्दौर
  चलभाष : ९८९३१२६८००

वैदिक संसार का आर्थिक आधार

अति विशिष्ट संरक्षक सहयोग	५१,०००/–
पुण्यात्मक विशेष सहयोग	११,०००/–
पंचवार्षिक सहयोग	२,१००/–
त्रैवार्षिक सहयोग	१,३००/–
वार्षिक सहयोग (प्रेषण व्यय सहित)	५००/–
एक प्रति (प्रेषण व्यय रहित)	५०/–
विज्ञापन : रंगीन पृष्ठ (भीतरी)	११,०००/–

(पंजीकृत डाक व्यय पृथक से देय होगा।)

खाता धारक का नाम : वैदिक संसार
बैंक का नाम : यूको बैंक
शाखा : ग्राम पिपलियाहाना, तिलक नगर, इन्दौर
चालू खाता संख्या : 05250210003756
आई एफ एस सी कोड : **UCBA**0000525
कृपया खाते में राशि जमा करने के पश्चात् सूचित अवश्य करें।

अध्यात्म के विषय में व्याप्त अन्धकार को दूर करने एवं वेदोक्त ज्ञान के प्रकाश को प्रकाशमान करने में सहायक ज्योति पुंज : **'वैदिक संसार'**

अनुक्रमणिका

विषय	शब्द संग्रहकर्ता	पृष्ठ क्र.
अमृतमयी वेदवाणी : साम–अथर्ववेद शतक पुस्तक से	स्वामी शान्तानन्द सरस्वती	०४
...आर्यावर्त भू–मण्डल के विशेष पर्व एवं दिवस	संकलित	०४
वैदिक संसार पत्रिका के उद्देश्य	वैदिक संसार	०४
हमारा अभिवादन क्या हो? अथवा मनुष्य मात्र का अभिवादन कौन सा?	सम्पादकीय	०५
नमस्ते	धर्मवीर गुलाटी	०५
महान् विभूतियाँ : ...१४८ महान् विभूतियों का पावन स्मरण	आचार्य राहुलदेव आर्य	०८
महर्षि दयानन्द सरस्वती द्विजन्मशताब्दी स्मरणोत्सव हेतु भारत सरकार द्वारा गठित उच्च स्तरीय समिति	भारत का राजपत्र	०९
संघर्ष	शान्ति नागर	१०
यजुर्वेद में विद्या और अविद्या	पं. शिवनारायण उपाध्याय	११
आर्यो! क्या आपको स्मरण है– हिन्दी रक्षा सत्याग्रह का रक्तरंजित संघर्ष?	रामफलसिंह आर्य	१३
विभीषण का राज्याभिषेक	देवकुमार प्रसाद आर्य	१४
महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय (गतांक से आगे)	ई. चन्द्रप्रकाश महाजन	१५
वैदिक ज्ञान–विज्ञान संस्थान, आगरा : एक परिचय	आचार्य विश्वेन्द्रार्य	१६
विजयादशमी का सन्देश : दानव दल का नाश करो	पं. नन्दलाल निर्भय	१७
वर्तमान में युवाओं की भूमिका	ओमदीप आर्य	१८
कैसे चुकाऊँ?	आदर्श आर्या	१८
गुरु–शिष्य संवाद:यह दुनिया कैसी है? इस दुनिया में रहना किस तरह?	आर्य मोहनलाल दशोरा	१९
मेरे देश की कन्या हो महान्	सुन्दरलाल चौधरी	२०
हिन्दी की वर्ण मंजु मंजरी (गतांक से आगे)	चौधरी बदनसिंह आर्य	२०
भारत में सद्गुरु के नाम पर ठगों का टिड्डी दल	डॉ. गंगाशरण आर्य	२१
नारी का मान और अपमान	देशराज आर्य	२२
महर्षि दयानन्द जी महाराज का वर्चस्व व वर्तमान राजनीति	पुरुषोत्तमदास गोठवाल	२२
ज्ञान का अक्षय कोष आर्य समाज, कार्य का अछोर आर्य समाज	ओमप्रकाश आर्य	२३
हम हैं ऋषियों की सन्तान	खुशहालचन्द्र आर्य	२४
राष्ट्र पितामह महर्षि दयानन्द सरस्वती की...आयोजित विश्व वेद सम्मेलन	मुनि शुचिषद्	२५
म. दयानन्द आर्ष कन्या गुरुकुल : अन्नपूर्णायोजना प्रारम्भ	प्रकाश आर्य	२६
आर्य शिरोमणि डॉ. श्वेतकेतु सम्मानित	संकलित	२६
अद्भुत, विलक्षण, अकल्पनीय, अविश्वसनीय आर्य जगत् के गौरव...	सुखदेव शर्मा	२७
वैदिक संसार द्वारा सम्पन्न गतिविधियाँ	सुखदेव शर्मा	२९
सुन्दर देश मॉरीशस से एक पत्र आर्यो के नाम	आचार्य आनन्द पुरुषार्थी	३०
आर्य जगत की विविध सम्पन्न गतिविधियाँ		३१
इस्लाम मुक्त भारत (ISLAM FREE INDIA- IFI)	राधाकिशन रावत	३२
स्वास्थ्य परिशिष्ट : चित्रक हरीतकी अवलेह	प्रभात आ. संस्थान	३३
बिहार राज्य स्तरीय सत्य सनातन वैदिक धर्म प्रचार यात्रा	सुशील कान्त	३३

विश्व जागृति का आधार महर्षि दयानन्द कृत महान् ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' एवं उत्तम जीवन निर्माण के लिए 'संस्कार विधि' अवश्य पढ़ें और जीवन में प्रगति पथ पर आगे बढ़ें।

अमृतमयी वेदवाणी

साम-अथर्व वेद शतक पुस्तक से

● **स्वामी शान्तानन्द सरस्वती**
(एम.ए. दर्शनाचार्य)
प्रभु आश्रित कुटिया, सुन्दर नगर, रोहतक (हरियाणा)
सन्त ओंधवराम वैदिक गुरुकुल, भवानीपुर (कच्छ), गुजरात
चलभाष : ९९९८५९४८१०, ९६६४६३०११६

सख्ये त इन्द्र वाजिनो मा भेम शवसस्पते।
त्वामभि प्र नोनुमो जेतारमपराजितम्।। (४२)

– सामवेद उ. २.१.१९.२

शब्दार्थ– हे इन्द्र! **ते सख्ये** = आपकी मैत्री में हम **वाजिनः** = अन्न और बल युक्त हम **मा भेम** = किसी से न डरें। **शवसस्पते** = हे बलपते! **जेतारम्** = सबको जीतने वाले **अपराजितम्** = और किसी से भी न हारने वाले **त्वाम् अभिप्रनोनुमः** = आपको हम बारम्बार प्रणाम और आपकी ही स्तुति करते हैं।

विनय : हे महाबलवान अनन्त ऐश्वर्यवान् परमेश्वर! आप सब प्रकार के दुष्टों व दुर्गुणों के नाशक हैं। हे प्रभु! जो मनुष्य आपकी शरण में आ जाते हैं व आपसे मित्रता करके आपके गुणकर्मों को धारण करते हैं वे सब प्रकार के भय से मुक्त हो जाते हैं तथा सर्वत्र विजय को प्राप्त करते हैं क्योंकि आप स्वयं परमात्मा कभी किसी से पराजित न होने वाले, कभी किसी से भयभीत न होने वाले व कभी भी बल शक्ति से क्षीण न होने वाले अजर, अभय, अपराजित, अनन्त शक्तिमान हैं। हे प्रभु! आपकी शरण में आकर आपकी स्तुति, उपासना करते हुए हम आपके उपासकगण बारम्बार आपको प्रणाम करते हुए आपको पुकार रहे हैं।

हे परम दयालु नाथ! हमारी पुकार को सुनिये और हमारी समस्त शुभ मनोकामनाओं को पूर्ण करते हुए हमें सब प्रकार के भय, बन्धन, रोग, शोक, दुःख, कष्ट से मुक्त करके आपके ज्ञान, बल, आनन्द से आनन्दित करिये।

पद्यार्थः *दया सिन्धु भगवन् महतारी, शरणागत पर तुम बलिहारी।*
शक्तिमान, बलवान पिताजी, वीर बनाओ जीतें बाजी।
आए हैं हम शरण तुम्हारी, विमल द्विलोक अभय हों भारी।। ■

● **दर्शनाचार्या विमलेश बंसल (विमल वैदेही), दिल्ली**
चलभाष : ८१३०५८६००२

विभिन्न स्रोतों से प्राप्त अक्टूबर मास, २०२३ के कुछ राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय पर्व–दिवस

०१. विश्व शाकाहारी दिवस, राष्ट्रीय स्वैच्छिक रक्तदान दिवस, विश्व वृद्ध दिवस, ०२.–०८ : ६९वाँ राष्ट्रीय वन्य जीव संरक्षण सप्ताह, विश्व अहिंसा दिवस, लालबहादुर शास्त्री एवं महात्मा गाँधी जयन्ती, विश्व वास्तुकला दिवस (प्रथम सोमवार), पर्यावास दिवस (प्रथम सोमवार), विश्व आवास दिवस (प्रथम सोमवार)। ०३. विश्व प्रकृति दिवस, जर्मनी एकता दिवस। ०४. **पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा जयन्ती,** विश्व पशु कल्याण दिवस। ०५. रानी दुर्गावती जयन्ती, विश्व शिक्षक दिवस, ०६. डॉ. मेघनाथ शाह जयन्ती, विश्व सेरेब्रल दिवस। ०७. वीरांगना दुर्गा भाभी बोहरा जयन्ती, गुरु गोविन्दसिंह पुण्यतिथि, विश्व कपास दिवस। ०८. भारतीय वायुसेना दिवस, जयप्रकाश नारायण व मुंशी प्रेमचन्द पुण्यतिथि। ०९. गुरु रामदास जयन्ती, प्रादेशिक सेना स्थापना दिवस, विश्व डाक दिवस, काशीराम पुण्यतिथि। १०. विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस, राष्ट्रीय डाक–तार दिवस। ११. नानाजी देशमुख व जयप्रकाश नारायण जयन्ती, अन्तर्राष्ट्रीय बालिका दिवस। १२. राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग स्थापना दिवस, डॉ. राममनोहर लोहिया पुण्यतिथि, विश्व दृष्टि दिवस, आर्थराईटिस दिवस, कोलम्बस दिवस। १३. अन्तर्राष्ट्रीय प्राकृतिक आपदा न्यूनीकरण दिवस। १४. विश्व मानक दिवस। १५. अग्रसेन महाराज जयन्ती, वीरांगना दुर्गा भाभी बोहरा, पं. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' व ए.पी.जे. अब्दुल कलाम पुण्यतिथि, अन्तर्राष्ट्रीय ग्रामीण महिला दिवस, विश्व श्वेत छड़ी दिवस, विश्व विद्यार्थी दिवस। १६. राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड स्थापना दिवस, विश्व खाद्य दिवस। १७. **कर्मवीर जयानन्द भारती जयन्ती,** अन्तर्राष्ट्रीय निर्धनता उन्मूलन दिवस। १९. डॉ. सुब्रह्मण्यम चन्द्रशेखर जयन्ती। २०. विश्व सांख्यिकी दिवस, विश्व ऑस्टियोपोरोसिस दिवस। २१. आजाद हिन्द फौज स्थापना दिवस, पुलिस स्मृति दिवस, विश्व आयोडीन अल्पता दिवस, २२. अश्फाक उल्ला खाँ व स्वामी रामतीर्थ जयन्ती, अन्तर्राष्ट्रीय हकलाना जागरूकता दिवस। २३. हिम तेन्दुआ दिवस। २४. विश्व पोलियो दिवस, विजयादशमी, संयुक्त राष्ट्र दिवस, विश्व विकास दिवस। २६. गणेश शंकर विद्यार्थी जयन्ती, जम्मू–कश्मीर विलय दिवस, सन्त नामदेव जयन्ती। २७. जतिन्द्रनाथ दास जयन्ती, ७७वाँ राष्ट्रीय इन्फेन्ट्री दिवस, विश्व दृश्य–श्रव्य विरासत दिवस। २८. महर्षि वाल्मीकि जयन्ती, विश्व लेमूर दिवस। २९. विश्व स्ट्रोक दिवस। ३०. डॉ. होमी जहाँगीर भाभा जयन्ती, विश्व मितव्ययिता दिवस। ३१. सरदार वल्लभभाई पटेल जयन्ती, राष्ट्रीय अखण्डता दिवस, संकल्प दिवस, श्रीमती इन्दिरा गाँधी पुण्यतिथि।

वैदिक संसार के उद्देश्य

- जगत् नियन्ता परमपिता परमात्मा द्वारा मानव की उत्पत्ति के साथ सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याणार्थ दिए गए ज्ञान–वेदों की महत्ता को पुनर्स्थापित करने हेतु वैदिक सिद्धान्तों, ऋषि–मुनियों एवं ऋषि दयानन्द प्रणीत सन्देशों को प्रकाशित करना।
- महान् योगी, संन्यासी, अखण्ड ब्रह्मचारी, वेद प्रतिष्ठापक, तत्वज्ञानी, युगद्रष्टा, स्वराष्ट्र–प्रेमी, स्वराज्य के प्रथम उद्घोषक, नवजागरण के सूत्रधार, शोषित–पीड़ित वर्ग एवं महिला उद्धारक, समाज सुधारक, खण्डन–मण्डन के प्रणेता, अन्धविश्वास नाशक, पाखण्ड खण्डिनी ध्वजा वाहक, आर्य समाज संस्थापक, अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश एवं वेदानुकूल सद्–साहित्य के रचयिता, दयालु, दिव्य, अमर बलिदानी महर्षि दयानन्द सरस्वती के समस्त मानव जाति पर किये गये उपकारार्थ कार्यों को गतिमान बनाए रखने हेतु प्रयत्न करना।
- आमजन में व्याप्त अज्ञानता, धर्मान्धता, अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियों के विरुद्ध जन जागरण कर उन्मूलन हेतु प्रयास करना।
- आर्य (श्रेष्ठ) विद्वान् महानुभावों के मन्तव्यों, सन्देशों का प्रचार–प्रसार कर प्रतिजन को उपलब्ध करवाना।
- आवश्यक सूचनाओं, गतिविधियों, समाचारों को प्रतिजन तक पहुँचाने का प्रयास करना।

हमारा अभिवादन क्या हो? अथवा मनुष्य मात्र का अभिवादन कौनसा?

वर्तमान में शास्त्रोक्त शिक्षा के अभाव में मनुष्य जान-समझ हीं नहीं पाता है कि उसे किसी बात को, किसी कार्य को, किसी व्यवहार को क्या, कब, क्यों और किस प्रकार करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। इस कारण वह ईश्वर, धर्म, रीति-रिवाज, पर्व-त्योहार तथा दैनिक व्यवहार की बहुत सी बातों को जान-सीख-समझ ही नहीं पाता जिसके कारण वह अन्य मनुष्यों को जो कुछ करते देखता है वह उनका अनुसरण करते हुए उन बातों और व्यवहारों को अपने जीवनचर्या का अंग बना लेता है। वह उन बातों और व्यवहारों को अपने जीवन का अंग तो बना लेता है किन्तु उन बातों और उन व्यवहारों को कब, कहाँ, क्यों और किस प्रकार करना है अथवा नहीं करना है के वास्तविक स्वरूप को जान-समझ ही नहीं पाता है और ना ही इस ओर उसका ध्यान जाता है ऐसी स्थिति में स्वाभाविक है कि वह जानने का प्रयास भी नहीं करता और वह अपने द्वारा किए जाने वाले कार्य-व्यवहारों को बिना उनके सत्य-असत्य, व्यावहारिक- अव्यावहारिक स्वरूप का, उनकी लाभ-हानि के परिणाम के विचार किए बिना ही करता चला जाता है, इसे ही अन्धानुकरण कहा जाता है।

विषय अभिवादन से सम्बन्धित है। **आओ! जानने का प्रयास करते हैं कि मनुष्य मात्र का अभिवादन क्या हो और पृथक्-पृथक् हो अथवा एक हो?**

वर्तमान में हम देखते हैं कि अभिवादन के नाम पर अनेक प्रकार के वाक्य प्रचलन में हैं जैसे नमस्ते, नमस्कार, प्रणाम, राम राम जी, जय राम जी की, जय श्री कृष्णा, राधे-राधे, जय श्री श्याम, जय योगेश्वर, जय बजरंग बली, जय बालाजी, जय भोले, बम-बम भोले, हर-हर महादेव, जय महाकाल, जय शिवशंकर, जय शिव, जय सांईराम, जय बाबोसा, जय गुरुदेव, जय विश्वकर्मा, जय माता दी, जय वैष्णो देवी, जय माँ शेरा वाली, जय भवानी, जय भगवती, जय माँ नर्मदे, जय भीम आदि-आदि असंख्य वाक्य प्रचलित हैं। इसके अतिरिक्त अनेक लोग अपनी उच्च शिक्षा तथा पद प्रतिष्ठा का प्रभाव दर्शाने के लिए आयातित विधर्मी विकृत सभ्यता के हाय, हेलो, गुड मॉर्निंग, गुड इवनिंग, गुड नाइट आदि वाक्यों का भी प्रयोग करते हैं और जिन पर देश व हिन्दी भाषा भक्ति दर्शाने की सनक होती है वे इनका हिन्दी रूपान्तरण सुप्रभात, शुभरात्रि आदि उपयोग करते भी देखे जा सकते हैं। स्थिति इतनी विकट है कि सम्पूर्ण प्रचलित वाक्यों को एक व्यक्ति द्वारा दृष्टि में ला पाना भी असम्भव कार्य है और ये प्रचलित और छूट गए असंख्य वाक्य सम्पूर्ण मानव जाति के व्यवहार में लाए जाने वाले वाक्य न होकर मात्र सनातन धर्मावलम्बियों में हिन्दी भाषी क्षेत्रों के प्रचलित वाक्य हैं। अन्य भाषा क्षेत्रों व असंख्य मत-पंथों, सम्प्रदायों के अभिवादन सूचक असंख्य वाक्य पृथक्-पृथक् हैं।

प्रश्न उपस्थित होता है कि जब सम्पूर्ण मनुष्य जाति एक है तो उसका अभिवादन सूचक वाक्य पृथक्-पृथक् कैसे?

आइए! विचार करते हैं। **सर्वप्रथम तो मनुष्य मात्र को यह जानना और समझना चाहिए कि अभिवादन क्या है? व्यक्ति की जब अपने किसी प्रियजन से भेंट होती है तो परस्पर प्रसन्नता और सम्मान तथा कल्याणात्मक भावनाओं की अभिव्यक्ति का नाम अभिवादन है।**

प्रश्न उपस्थित होता है कि प्रचलित अभिवादन वाक्य जिनमें से अनेक वाक्य ऊपर दिए गए हैं क्या अभिवादन की श्रेणी में आते हैं या नहीं?

उत्तर होगा नमस्ते ही सर्वोपरि और सर्वश्रेष्ठ है। इसके अतिरिक्त अन्य कोई नहीं, क्योंकि अभिवादन के नाम पर प्रचलित इन वाक्यों में से कुछ वाक्य छोड़कर अधिकांश वाक्य अभिवादन वाक्य न होकर उद्घोष वाक्य हैं। इन वाक्यों से भेंट करने वाले सज्जन के प्रति सम्मान तथा किसी प्रकार की प्रशंसात्मक व कल्याणात्मक भावनाओं की अभिव्यक्ति नहीं होती। जैसे कि हमने

नमस्ते

'नम' और 'ते' की सन्धि से सुन्दर शब्द बन जाये 'नमस्ते',
सप्रेम हार्दिक 'आदर' यूँ 'आपके लिए' दर्शाये नमस्ते।
श्रद्धा से दोनों हाथ जोड़, जब किया जाता नमस्ते उच्चारण,
अत्यन्त शोभनीय लगता यह प्राचीनतम संस्कृति द्योतक अभिवादन।।
दोनों हाथ जोड़कर जब हृदय के समीप हैं लाए जाते,
और श्रद्धा से थोड़ा शीश झुका वाणी उच्चारे 'नमस्ते'।
ऐसे नम्र अभिवादन से होता स्वाभाविक ही प्रेम सत्कार प्रवाह,
और नमस्ते अभिवादन द्वारा परस्पर होती प्रसन्नता अथाह।।
हृदय समीप दोनों जुड़े हाथ माने जाते हैं आत्मशक्ति प्रतीक,
भुजाएँ दोनों शारीरिक बल द्योतक भरती हैं रक्षा भाव असीम।
मानसिक शक्ति द्योतक मस्तिष्क पूर्ण आदर को दर्शाये,
इन सभी दैवी शक्तियों के संगम से ही अभिवादन 'नमस्ते' कहाए।।
गुड मॉर्निंग, ईवनिंग अथवा नाईट तो केवल समय बोध कराते,
हाथ मिलाना, गले मिलना अथवा चुम्बन छूत रोग भय दिखाते।
दूर से हाई-बाई तो निरादर एवं तिरस्कार समान संकेत जतलाते।
सभी दोष मुक्त हर समय उपयुक्त अभिवादन है केवल 'नमस्ते'।।
छोड़ो यह हाई-बाई, गले मिलना, चुम्बन अथवा हाथ मिलाना,
अपनाओ सर्वोत्तम नमस्ते जो चला आ रहा सनातन अभिवादन पुराना।
आदर, सत्कार, श्रद्धा, प्रेम, सभी सार्थक होते जब नमस्ते से हो अभिनन्दन,
केवल 'नमस्ते' अभिवादन में ही समावेश इन सभी गुणों के होते दर्शन।।
माता-पिता, पति-पत्नी, छोटे-बड़े हो अथवा बहन-भाई,
सेवक-स्वामी, धनी-निर्धन, मित्र-बन्धु अथवा सखा-सहाई।
सभी देश-विदेश, जाति-धर्म के लोग मिलें अथवा करें पत्राचार,
'नमस्ते' से किया अभिवादन सबके लिए सदा फिट बैठे सभी प्रकार।।

● धर्मवीर गुलाटी, मुम्बई

हमारे किसी स्नेहीजन से भेंट होने पर कहा '**जय राम जी की**'। यह एक उद्घोष वाक्य है जो राम जी की जय करने की प्रेरणा दे रहा है। राम जी की जय होना अच्छी बात है, राम जी की जय होना भी चाहिए किन्तु यहाँ पर हम जब परस्पर किसी से मिले तो हमारी अभिव्यक्ति सन्बन्धित व्यक्ति के प्रति होना चाहिए जो इसमें नहीं है।

इसी प्रकार हमने गुड मॉर्निंग अथवा गुड नाइट या इसका हिन्दी भाषा का रूपान्तरण सुप्रभात अथवा शुभ रात्रि कहा तो यहाँ पर हमने परस्पर वातावरण के अच्छे होने की प्रसन्नता व्यक्त की कि अभी तो जलवायु अच्छी है बाद का कोई विश्वास नहीं और यह भी अन्य देशों में उपयोग किया जाता है क्योंकि वहाँ दो-चार घण्टे में वातावरण अनुकूल-प्रतिकूल होता रहता है। अच्छी खिली हुई धूप निकलने पर भी दो-चार घण्टे बाद बर्फबारी भी हो सकती है। इसलिए वे लोग सुखद वातावरण में परस्पर भेंट होने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए जैसा काल हो वैसा कहते हैं गुड मॉर्निंग अथवा गुड इवनिंग अथवा गुड नाइट अर्थात् अभी तो सुबह अच्छी है अथवा अभी तो दोपहर अच्छी है अथवा अभी तो रात्रि अच्छी है बाद का पता नहीं जबकि भारत में ऐसा नहीं है और इन वाक्यों में परस्पर किसी प्रकार की भावनाओं की अभिव्यक्ति भी नहीं है इसीलिए ये वाक्य भी अभिवादन वाक्य कैसे माने जा सकते हैं?

नमस्ते ही क्यों, नमस्ते में ऐसा क्या है?

सर्वप्रथम नमस्ते पिछड़ेपन का परिचायक नहीं अपितु मनुष्य को मिली श्रेष्ठ शिक्षा-दीक्षा का परिचायक है। नेपाल का राष्ट्रीय अभिवादन नमस्ते है। नमस्ते छोटे-बड़े, आयुवृद्ध, विद्यावृद्ध, समस्त सज्जनों को किया जाता है। वर्तमान में माता-पिता, शिक्षक को ही नमस्ते का अर्थ और महत्व नहीं पता इस कारण भावी पीढ़ी भी इस सर्वश्रेष्ठ और सर्वोपरि अभिवादन से दूर होती जा रही है।

नमस्ते शब्द दो शब्द नम+ते से मिलकर बना है। नम अर्थात् सम्मान स्वरूप झुकना, ते अर्थात् तुम्हारे लिए। संयुक्त अर्थ होगा मैं विनम्रतापूर्वक आपकी प्रशंसा करता हूँ अर्थात् आपका सम्मान करता हूँ, आपके कल्याण की कामना करता हूँ। (नमस्ते शब्द को विस्तारपूर्वक जानने के लिए गोविन्द कुमार हासानन्द, दिल्ली द्वारा प्रकाशित '**नमस्ते**' की व्याख्या पुस्तक अवश्य पढ़े)।

नमस्ते अभिवादन मनुष्य जाति का शास्त्रोक्त, प्रामाणिक, ऐतिहासिक अभिवादन है। प्राचीन ऋषि-मुनियों से लेकर दशरथ जी, भगवान श्री राम, माता सीता, लक्ष्मण, भरत, हनुमान, भगवान श्री कृष्ण, युधिष्ठिर आदि महापुरुष व समस्तजन नमस्ते ही करते थे जिसके प्रमाण वेद-शास्त्र, वाल्मीकि रामायण, महाभारत, गीता आदि पुस्तकों से अनेक स्थानों से प्राप्त किये जा सकते हैं। जिसमें स्थान-स्थान पर परस्पर भेंट होने पर '**नमस्ते**' शब्द का उल्लेख प्राप्त होता है। नमस्ते की मूल प्राप्ति का स्रोत सनातन धर्म-संस्कृति के मूल ग्रन्थ वेद और शास्त्रों का स्वाध्याय करने पर स्थान-स्थान पर नमस्ते शब्द दृष्टि में आता है।

यजुर्वेद का १६ वाँ अध्याय नमस्ते अध्याय के नाम से ही जाना जाता है। यजुर्वेद में २०० से अधिक बार नमस्ते शब्द आया है तथा अथर्ववेद में ४० बार नमस्ते शब्द का प्रयोग हुआ है। सर्वप्रथम परमपिता परमेश्वर को नमस्ते करते हैं तो यहाँ परमेश्वर से सुख-शान्ति, समृद्धि की कामना की जाती है।

इसके अतिरिक्त अभी-अभी समूचे जगत् ने नमस्ते का प्रभाव कोरोना काल में देखा, जाना और माना है कि नमस्ते अभिवादन संक्रमित बीमारियों से बचाने वाला है। कोरोना काल में हाथ मिलाने वाले और गले मिलने वाले सभी हाथ जोड़कर नमस्ते करने लगे थे और इस अभिवादन को विश्वगुरु की सन्तति का प्रतिनिधित्व करने वाले भारत के यशस्वी प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने ही आगे बढ़ाया था। जिसे अपार विश्वव्यापी जन समर्थन प्राप्त हुआ था।

प्रश्न उपस्थित होता है कि अभिवादन वाक्य '**नमस्ते**' न करते हुए उद्घोष वाक्यों अथवा जलवायु को उत्तम दर्शाने वाले प्रसन्नता सूचक वाक्यों का भी उपयोग करें तो इसमें हानि क्या है?

विचारणीय तथ्य है कि राम जी की, कृष्ण की, भारत माता की अथवा अन्य किसी महापुरुष अथवा देवी-देवता की जय कह देने मात्र से जय नहीं होगी। वर्तमान में बीड़ी, सिगरेट, शराब, मांसाहार आदि अभक्ष्य पदार्थों का सेवन करने वाले दोष-दुर्गुणों में लिप्त भी जय राम जी की, भारत माता की जय, जय श्री कृष्णा आदि-आदि का प्रयोग इस प्रकार कर रहे हैं जैसे उनसे बड़ा रामभक्त, कृष्णभक्त अथवा देशभक्त कोई हो ही न।

प्रश्न उपस्थित होता है कि क्या इतना भर कह देने से जय हो जावेगी? क्या राम, कृष्ण, शिव आदि महापुरुषों की जय कहने वालों के जीवन-व्यवहार में इन महापुरुषों का आचरण-व्यवहार का कुछ थोड़ा बहुत अंश भी है या नहीं? या ये उस पथ पर अग्रसर होने को उद्यत भी हैं ? इसके साथ ही एक और ध्यान देने योग्य तथ्य है कि ये समस्त जयकारे अथवा उद्घोष किसी महापुरुष के नाम पर हैं। जैसे जय राम जी की अथवा जय श्री कृष्ण, प्रश्न उपस्थित होता है कि इन महापुरुषों के जन्म से पूर्व के लोग अर्थात् इनके माता-पिता, ताऊ-ताई, दादा-दादी, प्रपितामह-प्रपितामहि, नाना-नानी, सास-ससुर आदि पूर्वज और उनसे भी अनेक पीढ़ियों के पूर्व के लोग कौन सा अभिवादन करते थे? क्योंकि जय राम जी की तो राम जी के उत्पन्न होने के बाद प्रचलन में आया होगा। जय श्री कृष्ण तो कृष्ण जी के जन्म के पश्चात् प्रचलन में आया होगा। यहाँ यह भी अवगत करवाता चलू की किसी कार्य को ठीक-ठीक न जानने के कारण अनेक सैद्धान्तिक दोष हमारे कार्य-व्यवहार में आ जाते हैं और वे शनैः-शनैः अपना स्थान बनाकर प्रचलित हो निरन्तर वृद्धि को प्राप्त हो बढ़ते चले जाते हैं। जैसे कि जय श्री कृष्णा। इसका शुद्ध स्वरूप जय श्री कृष्ण है क्योंकि कृष्णा स्त्रीलिंग शब्द है। किसी स्त्री का नाम जब रखा जाएगा तो कृष्णाबाई अथवा कृष्णादेवी रखा जाएगा। ठीक वैसे ही जैसे मनीष और मनीषा। आपके घर कोई सुपुत्र होगा तो आप उसका नाम मनीष रखेंगे अथवा मनीषा? और सुपुत्री होगी तो आप उसका नाम मनीषा रखेंगे अथवा मनीष? इसी प्रकार कृष्ण और कृष्णा है। कृष्ण पुल्लिंग शब्द है जबकि कृष्णा स्त्रीलिंग शब्द है। एक वाक्य सनातन धर्मियों में बहुत ही अत्यधिक प्रचलित है राधे-राधे। अब किसी से पूछा जाए कि यह राधे-राधे क्या है और यह शब्द कहाँ से आया? तो ऋषि दयानन्द के भक्तों को छोड़कर कोई भी उत्तर नहीं दे सकेगा। सर्वप्रथम तो राधा अथवा राधे शब्द कृष्ण से सम्बन्धित किसी भी ग्रन्थ यथा महाभारत, गीता, भागवत पुराण आदि में नहीं है। वैसे भी कृष्ण की पत्नी रुक्मणी थी। हाँ, ब्रह्मवैवर्त पुराण में अवश्य राधा का प्रसंग मिलता है किन्तु यहाँ उसे कृष्ण के भाई रायण की

पत्नी बताया गया है। अब आप समझ सकते हैं कि कंस के भाई की पत्नी से कृष्ण का क्या सम्बन्ध होगा? किन्तु राधे-राधे की रट लगाने वालों को इससे क्या लेना-देना? उनके मनमानेपन से ब्रह्मचर्य व्रत तपधारी, उज्ज्वल चरित्र के आदर्श महापुरुष श्री कृष्ण जी का जीवन चरित्र धूमिल होता हो तो होता रहे और विधर्मियों में वे हास्यास्पद बने तो बनते रहे। ना तो वे ऐतिहासिक और सैद्धान्तिक तथ्यों को जानते हैं और ना ही वे इसे जानने की आवश्यकता समझते है। (राधा के विषय में अत्यधिक और प्रामाणिक वास्तविक तथ्य जानने के लिए स्मृति शेष सन्तोष कुमार जी द्वारा लिखित तथा प्राच्य साहित्य परिषद,आगरा द्वारा प्रकाशित '**राधा रहस्य**' पुस्तक अवश्य पढ़ें)

एक और अत्यन्त हानिप्रद तथ्य यह है कि मनुष्य जाति में एकता तभी सम्भव है जब वैचारिक ऐक्यता हो। संसार में प्रचलित यह सबसे बड़ा झूठ है कि अनेकता में एकता होती है या हो सकती है। अनेकता में एकता कभी नहीं हो सकती क्योंकि सत्य का कोई विकल्प नहीं होता। सत्य एक ही होता है दो-चार, दस-बीस नहीं। जब कोई बात कही जा रही है अथवा कोई तर्क-तथ्य प्रस्तुत किया जा रहा है तो उससे भिन्न उसके विकल्प भी प्रस्तुत किए जा रहे हैं तो उनमें से कोई एक ही तथ्य या विकल्प सत्य होगा अन्य सभी अनिवार्य रूप से असत्य ही होंगे, चाहे वे अज्ञानीजनों में सत्य के रूप में ही क्यों न प्रचलित हो जाए। वे कभी सत्य का स्थान नहीं ले सकते।

यह मानव जाति का दुर्भाग्य है कि महाभारत के युद्ध के लगभग एक सहस्त्र वर्ष पूर्व से वैदिक सिद्धान्तों के विपरीत शिक्षा व आचरण से मानव जाति विशेषकर विश्वगुरु की सन्तति आर्य जाति अनैक्यता के रोग से ग्रसित हुई। इसी अनैक्यता के रोग का परिणाम था कि सम्पूर्ण मानव जाति को पतन की गहरी अन्ध खाई में धकेलने वाला महाविनाशक महाभारत युद्ध उपस्थित हुआ। जिसके कारण से आर्य जाति अपनी सुध-बुध खो पतन के गाल में समा गई और इसी का परिणाम आगे जाकर पराधीनता के रूप में उपस्थित हुआ। जो मानव जाति के मणि मुकुट आर्य (श्रेष्ठ) थे, जो चक्रवर्ती थे, जो विश्वगुरु थे, जिनके पुण्य प्रताप से यह धरा स्वर्ग से सुन्दर सोने की चिड़िया के रूप में सुविख्यात थी। जिन आर्यों के ज्ञान, वैभव, शौर्य, पराक्रमशीलता, शूरवीरता, त्याग-तपस्या, समर्पण, सेवाभाव से सम्पूर्ण धरा आह्लादित होती थी। '**वसुधैव कुटुम्बकम्**' और '**सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया....**' जिनकी थाती थी। आर्यों से भयभीत होकर मानवता के शत्रु अनार्य (दस्यु) लोग जो निर्जन भू-भागों में लुक-छिपकर अपनी अमानवीय गतिविधियाँ संचालित करते थे।

आर्यों के अनैक्यता के रोग से ग्रसित होने के कारण फूट रूपी विषबेल का रोपण हुआ और जिसका फल महाभारत युद्ध के रूप में उपस्थित हुआ। महाभारत युद्ध भयावह विभीषिका के रूप में सामने आया। पाँच पाण्डव, एक श्री कृष्ण और तीन अन्य महापुरुषों को छोड़कर इस युद्ध में दोनों पक्ष के योद्धा काल के गाल में समा गए। एक प्रकार से यह वीर प्रसूता भूमि की कोख नीति वेत्ताओं, ज्ञानियों, धर्म-धुरन्धरों से रिक्त हो सूनी हो गई। वैदिक ज्ञान रूपी सूर्य अस्ताचल की ओर चल पड़ा, अज्ञानता के अन्धकार का साम्राज्य स्थापित हो गया। वेद विरुद्ध भिन्न-भिन्न मान्यताओं, रूढ़ियों, कपोल-कल्पित दन्तकथाओं, कुरीतियों, अनैक्यता (फूट) की कारागार में आर्यों की सन्तति जकड़ गई। आर्यों का पतन होते ही जो अनार्य (दस्यु) आर्यों के भय से दुबकते थे वे सिर पर चढ़ आये उन्होंने जी भर कर लूटा-खसोटा-नोचा-रोंदा , पददलित किया और फूट रूपी विषबेल को जी भरकर खाद-पानी दिया। वह तो ईश्वर की कृपा से देव दयानन्द का अवतरण हो गया और उस महामानव ने अपनी दिव्य दृष्टि से आर्य जाति का रोग पकड़ लिया कि आर्य जाति की दुर्दशा का प्रमुख कारण वेद विमुख होना है जिसके कारण यह अनैक्यता से संक्रमित हो मतभेद से आगे बढ़कर मनभेद (फूट) से भयानक रूप से पीड़ित है। उस महामानव ने आर्यों की सन्तति को इस घातक असाध्य रोग से उबरने हेतु अचूक उपचार '**वेदों की ओर लौटो**' के रूप में दिया और जिस प्रकार एक चिकित्सक औषधि के साथ में कुछ आहार-व्यवहार सम्बन्धी निर्देश भी करता है उसी प्रकार ऋषि ने सुझाया कि '**एक भाषा, एक भूषा, एक भाव के बिना जातीय उन्नति होना दुष्कर है।**' ऋषि का स्पष्ट निर्देश मतैक्यता का था। राष्ट्र रक्षा यज्ञ में समिधा बनकर आहूत ऋषि और ऋषि के असंख्य मानस पुत्रों से देश तो स्वतन्त्र हो गया किन्तु वेदोक्त शिक्षा के अभाव में आज भी वेदों की ओर लौटो का उपचार होना शेष है और जब तक यह उपचार नहीं होता तब तक मानव जाति अनैक्यता के रोग से मुक्त नहीं हो सकती। वर्तमान में इतनी दयनीय स्थिति है कि इस आर्य जाति का सर्वमान्य एक ईश्वर नहीं, एक उपासना पद्धति नहीं, एक धर्मग्रन्थ नहीं, एक भाषा नहीं, एक भूषा नहीं, एक भाव नहीं, गुण-कर्म-स्वभाव योग्यता आधारित वर्ण व्यवस्था न होने से गुण-कर्म-स्वभाव आधारित एक पहचान नहीं, यहाँ तक कि परस्पर एक अभिवादन तो दूर एक अभिवादन क्या, क्यों और कैसे का पता नहीं। जिनसे अनेक वर्षों की पराधीनता के पश्चात् भीषण संघर्ष के उपरान्त स्वतन्त्र हुए उनकी कुशिक्षा, कुव्यवस्था (कानून), कुभाषा, कुसंस्कार, कुरुतियों, कुपोषण से स्वतन्त्र होने के स्थान पर और अधिक परतन्त्र हुए और तिव्रगति से होते जा रहे हैं। स्थिति इतनी विकट और दयनीय है कि लॉर्ड मैकाले की योजना हम शरीर और नाम से मात्र भारतीय होंगे किन्तु मानसिकता से अंग्रेज होंगे वर्तमान की दिशा-दशा को देखकर यह सफलीभूत होती दिखाई देती है। भारतीयता की मूल सभ्यता-संस्कृति हमसे कोसो दूर दिखाई देती है। हाँ, यह अवश्य है कि समय रहते उपचार नहीं हुआ तो यह पुनः मरणासन्न (पराधीनता) की स्थिति को भी अतिशीघ्र प्राप्त हो सकती है। **आओ लौट चलें वेदों की ओर।**

आर्य शब्द का अर्थ

भगवान ने आदेश दिया कि '**सम्पूर्ण विश्व को आर्य बनाओ**'

इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।

अपघ्नन्तो अराव्णः।। (ऋ ९/६३/५)

अर्थ : हे परम ऐश्वर्य युक्त आत्मज्ञानी! तुम आत्मशक्ति का विकास करते हुये गतिशील, प्रमादरहित, होकर कृपणता, अदानशीलता, अनुदारता, ईर्ष्या आदि का विनाश करते हुये सारे संसार को आर्य बनाओ।

प्राचीन कोष में 'आर्य' शब्द के अर्थ

संस्कृत के शब्दकल्पद्रुम, वाचस्पत्य, बृहदभिधानादि कोषों में आर्य शब्द के अर्थ निम्न पाये जाते हैं

आर्य : पूज्यः, श्रेष्ठः, धार्मिकः, धर्मशीलः, मान्यः, उदारचरितः, शान्तचित्तः, न्यायपथावलम्बी, सततं कर्तव्य-कर्मानुष्ठाता यथोक्तम्।

आर्य समाज के १४८वें स्थापना दिवस की बेला पर१४८ महान् आर्य विभूतियों का पावन स्मरण

परोपकारिणी सभा के सर्वप्रथम कार्यकारिणी सदस्य

मैं स्वामी दयानन्द सरस्वती निम्नलिखित नियमों के अनुसार तेईस सज्जन आर्यपुरुषों की सभा को वस्त्र, पुस्तक, धन और यन्त्रालय आदि अपने सर्वस्व का अधिकार देता हूँ और उसको परोपकार–सुकार्य में लगाने के लिए अध्यक्ष बनाकर यह '**स्वीकार पत्र**' लिखे देता हूँ कि समय पर काम आये।

१) महाराणा सज्जन सिंह : श्रीमन्महाराजाधिराज महिमहेन्द्र यादवार्य–कुलकमलदिवाकर महाराणाजी श्री १०८ सज्जनसिंहजी वर्मा जी.एस.आई. उदयपुराधीश राज मेवाड़, परोपकारिणी सभा के प्रधान बने।

२) लाला मूलराज साहब एम०ए० एक्स्ट्रा असिस्टेंट कमिश्नर प्रधान आर्यसमाज लाहौर, परोपकारिणी सभा के उपसभापति बने।

३) श्रीयुत् कविराज श्यामलदासजी, राज मेवाड़ परोपकारिणी सभा के मन्त्री बने।

४) लाला रामशरणदास रईस व उपप्रधान आर्यसमाज मेरठ परोपकारिणी सभा के मन्त्री बने।

५) पण्ड्या मोहनलाल विष्णुलालजी शर्मा, उदयपुर, जन्मस्थान मथुरा, परोपकारिणी सभा के उपमन्त्री बने।

६) श्रीमन्महाराजाधिराज श्री नाहरसिंहजी वर्मा शाहपुराधीश, परोपकारिणी सभा के सभासद् बने।

७) श्री राव तख्तसिंहजी बेदले, राज मेवाड़, परोपकारिणी सभा के सभासद् बने।

८) श्रीमद्रावतद्राजा श्री फतहसिंहजी वर्मा, भीलवाड़ा, परोपकारिणी सभा के सभासद् बने।

९) श्रीमद्रावत श्री अर्जुनसिंहजी वर्मा, आसीन्द ।

१०) श्रीमन्महाराज गजसिंहजी वर्मा, उदयपुर ।

११) श्रीमद्रावत बहादुरसिंहजी वर्मा, मसूदा जिला अजमेर।

१२) रावबहादुर पं० सुन्दरलाल सुपरिटेण्डेण्ट वर्कशाप अलीगढ़, आगरा।

१३) राजा जयकृष्णदास सी०एस०आई० डिप्टी कलेक्टर, बिजनौर।

१४) साहू दुर्गाप्रसाद, कोषाध्यक्ष आर्यसमाज फर्रुखाबाद।

१५) साहू जगन्नाथप्रसाद, फर्रुखाबाद।

१६) सेठ निर्भयराम प्रधान आर्यसमाज, फर्रुखाबाद, ब्यावर राजपूताना।

१७) लाला कालीचरण रामचरण मन्त्री आर्यसमाज फर्रुखाबाद।

१८) बाबू छेदीलाल गुमाश्ते कमसरियट, छावनी मुरार ग्वालियर।

१९) लाला साईंदास मन्त्री आर्यसमाज लाहौर ।

२०) बाबू माधवदास मन्त्री आर्यसमाज दानापुर।

२१) रावबहादुर राजागल राजेश्वरी पं. गोपालराव हरिदेशमुख मेम्बर कौन्सिल गवर्नर मुम्बई व प्रधान आर्यसमाज मुम्बई, पूना।

२२) रावबहादुर महादेव गोविन्द राणाडे जज, पूना ।

२३) पण्डित श्यामजीकृष्ण वर्मा प्रोफेसर संस्कृत, यूनिवर्सिटी आक्सफोर्ड लन्दन, मुम्बई।

(गतांक पृष्ठ १४ से आगे)

● **आचार्य राहुल देव**
पुरोहित आर्य समाज बड़ा बाजार
कोलकाता (प. बंगाल)

आर्य बलिदानी

१) पंडित तुलसीराम : बलिदान – १९०३ रुडागाँव, पंजाब। आयु ३२ वर्ष फरीदकोट में स्टेशन मास्टर थे आर्यसमाज के जलसे के उपलक्ष में बाजारों में प्रचार कर रहे थे। जैनियों ने आँखों में लाल मिर्च डाला और छुरा मार दिया।

२) वीर रामचंद्र : बलिदान – २० जनवरी १९२३ कठुआ हीरानगर जम्मू कश्मीर। अछुतोद्धार करते हुए जम्मू के राजपूतों ने भटेरा गांव में लाठियाँ मार कर मार डाला।

३) लाला नंदलाल : बलिदान – १२ नवम्बर १९२७ आयु १९ वर्ष। मुस्लिम युवती को शुद्ध कर आर्य युवक से विवाह करवाने और ईस्लाम की आलोचना करने पर मुस्लिमों ने गला घोंटकर मार दिया और लाश रावी नदी में फेंक दी।

४) बाबू नारायण सिंह : जन्म १८६८ अबला बालिकाओं को मुस्लिम होने से बचाने के कारण मुस्लिमों ने गोलियों तथा भालों से शरीर छलनी कर हत्या कर दी।

५) धन्ना सिंह जी : बलिदान – १९३० बटाला, लुधियाना। सिख खानदान में पैदा हुए आर्यसमाज का रंग चढ़ गया अकाली दुश्मन हो गए और धन्ना सिंह को आर्य समाज का प्रचार करने से रोकने लगे जो वह न रुका तो लाठियों से मार–मार कर कत्ल कर दिया।

६) लोरिन्द राम जी : बलिदान – ५ नवम्बर १९३४ एम ए, एल एल बी थे, निर्धनों के मुकदमे लड़ने के कारण किसी मुसलमान ने बन्नू में गोली मार कर हत्या कर दी।

७) विद्यासागर जी : बालिदान – १५ अप्रैल १९३९ एक मुसलमान ने छुरा मारकर हत्या कर दी।

८) सुनेहरा : बलिदान – ८ जून १९३९ बुटाना रोहतक, आयु २० वर्ष, गौना होने के बाद भी सत्याग्रह करने चले गए और औरंगाबाद जेल में अधिकारियों के अत्याचार से इनका बलिदान हो गया।

९) श्री वेद प्रकाश जी : बलिदान – १८३९ गंजोरी रियासत हैदराबाद। जुनूनी मुसलमानों ने घर घेर लिया और लाठी मार कर मार डाला।

१०) श्री भीमराव पटेल :

११) मानक राव जी : आप दोनों हुवला हैदराबाद निवासी थे। मानक राव की बहिन को बहलोल खाँ ने उठा लिया। भीमराव जी ने बचाया और शुद्ध किया। २०० मुसलमानों ने हमला कर दिया भीमराव ने तलवार लेकर मुकाबला किया। उनको गोली मार दी और मानकराव और उसकी चाची को भी मार डाला। **(शेष भाग आगामी अंक में)**

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्विजन्मशताब्दी स्मरणोत्सव हेतु भारत सरकार द्वारा गठित उच्च स्तरीय समिति

भारत का राजपत्र

क्र. नाम एवं पदनाम

अध्यक्ष

१. श्री नरेन्द्र मोदी, भारत के माननीय प्रधानमन्त्री

पदेन सदस्य

२. श्री अमित शाह, गृह एवं सहकारिता मन्त्री
३. श्रीमती स्मृति जुबिन इरानी, महिला एवं बाल विकास और अल्पसंख्यक कार्यमन्त्री
४. श्री जी. किशन रेड्डी, संस्कृति, पर्यटन और पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मन्त्री
५. श्री अनुरागसिंह ठाकुर, सूचना एवं प्रसारण और युवा कार्यक्रम एवं खेल मन्त्री
६. श्री मल्लिकार्जुन खड़गे, नेता प्रतिपक्ष
७. डॉ. पी.के. मिश्रा, प्रधानमन्त्री के प्रधान सचिव
८. आचार्य देवव्रत, राज्यपाल, गुजरात
९. श्री बनवारीलाल पुरोहित, राज्यपाल, पंजाब
१०. श्रीमती आनन्दीबेन पटेल, राज्यपाल, उत्तरप्रदेश
११. श्री कलराज मिश्र, राज्यपाल, राजस्थान
१२. श्री आर.एन. रवि, राज्यपाल, तमिलनाडु
१३. श्री बंडारू दत्तात्रेय, राज्यपाल, हरियाणा
१४. श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर, राज्यपाल बिहार
१५. लेफ्टिनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) गुरमीत सिंह, राज्यपाल, उत्तराखण्ड
१६. डॉ. सी.वी. आनन्द बोस, राज्यपाल पश्चिम बंगाल
१७. श्री गुलाबचंद कटारिया, राज्यपाल, असम
१८. सुश्री ममता बनर्जी, मुख्यमन्त्री, पश्चिम बंगाल
१९. श्री मनोहरलाल खट्टर, मुख्यमन्त्री, हरियाणा
२०. श्री नीतिश कुमार, मुख्यमन्त्री, बिहार
२१. श्री योगी आदित्यनाथ, मुख्यमन्त्री, उत्तरप्रदेश
२२. श्री अशोक गहलोत, मुख्यमन्त्री, राजस्थान
२३. श्री प्रेमसिंह तमांग, मुख्यमन्त्री, सिक्किम
२४. श्री एम.के. स्टालिन, मुख्यमन्त्री, तमिलनाडु
२५. श्री हेमन्त बिस्वा सरमा, मुख्यमन्त्री, असम
२६. श्री पुष्करसिंह धामी, मुख्यमन्त्री, उत्तराखण्ड
२७. श्री भूपेन्द्रभाई पटेल, मुख्यमन्त्री, गुजरात
२८. श्री भगवंतसिंह मान, मुख्यमन्त्री, पंजाब
२९. डॉ. संजीव कुमार बालियान, मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी राज्यमन्त्री
३०. श्री राजीव गौबा, मन्त्रिमण्डल सचिव
३१. श्री अजय कुमार भल्ला, गृह सचिव

सदस्य सचिव

३२. श्री गोविन्द मोहन, सचिव, संस्कृति मन्त्रालय

सदस्य

३३. डॉ. सत्यपाल सिंह, पूर्व मन्त्री, भारत सरकार
३४. स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, संसद सदस्य (लोकसभा)
३५. बाबा रामदेव, पतंजलि योग पीठ
३६. कमलेश पटेल, श्री रामचन्द्र मिशन
३७. स्वामी सुवीरानन्द, रामकृष्ण मठ और रामकृष्ण मिशन
३८. प्रो. योगेश सिंह, कुलपति, दिल्ली वि.वि.
३९. प्रो. रमाशंकर दुबे, कुलपति, गुजरात केन्द्रीय वि.वि.
४०. प्रो. सुधीर जैन, कुलपति, बनारस हिन्दू वि.वि.
४१. प्रो. बासुथकर जगदीश्वरराव, कुलपति हैदराबाद केंद्रीय वि.वि.
४२. डॉ. पूनम सूरी, अध्यक्ष, डीएवी प्रबन्धन समिति
४३. श्री सुरेशचन्द्र आर्य, अध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
४४. श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य, अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ
४५. श्री धर्मपाल आर्य, अध्यक्ष, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
४६. श्री सुमनकान्त मुंजाल, अध्यक्ष रॉकमैन इंडस्ट्रीज
४७. स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, प्रमुख उत्कल आर्य प्र. सभा ओडिशा
४८. स्वामी सदानन्द, प्रमुख, दयानन्द मठ, दीना नगर, पंजाब
४९. स्वामी आर्यवेश आर्य, विद्वान और संन्यासी, हरियाणा
५०. आचार्य एम.आर. राजेश, अध्यक्ष कश्यप वेद रिसर्च फाउंडेशन, कोझिकोड, केरल
५१. श्री अजय सहगल, सचिव, श्रीमद दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा
५२. श्री दीनदयाल गुप्ता, संरक्षक एपीएस, पश्चिम बंगाल
५३. श्री सुदर्शन शर्मा, प्रमुख आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब
५४. श्री भुवनेश खोसला, प्रमुख, आर्य प्रतिनिधि सभा, संयुक्त राज्य अमेरिका
५५. श्री विश्रुत आर्य, सचिव, आर्य प्रतिनिधि सभा, संयुक्त राज्य अमेरिका
५६. श्री हरिदेव राम धोनी, प्रतिनिधि, आर्य सभा मॉरीशस
५७. श्री सुरेन्द्र विजयसिंह महाबली, प्रधान, आर्य प्र. सभा, नीदरलैंड
५८. श्री इंद्रगंगाबिशन सिंह, प्रधान, आर्य दिवाकर, सूरीनाम
५९. श्री योगेश आर्य, संयोजक, आर्य समाज, प्रशान्त क्षेत्र, सिडनी ऑस्ट्रेलिया
६०. डॉ. बिसराम रामविलास, आर्य समाज दक्षिण अफ्रीका
६१. श्री सुभाष चन्दर पुनिया, कनाडा
६२. श्री अशोक खेत्रपाल, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, म्यांमार,
६३. प्रकाश आर्य, प्रधान, मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा
६४. श्री राधाकृष्ण आर्य, अध्यक्ष, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा
६५. डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार, आन्तरिक सदस्य, आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा
६६. श्री विनय आर्य, महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
६७. श्री जोगेन्द्र खट्टर, महामन्त्री, अ.भा. दयानन्द सेवाश्रम संघ

६८. श्री संजीव चौरसिया, प्रधान, आर्य प्र. सभा, बिहार और विधायक
६९. श्री अरुण चौधरी, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, जम्मू
७०. श्री पीयूष आर्य, सचिव, डीएवी ग्रुप ऑफ स्कूल, चेन्नई
७१. श्री सत्यानन्द आर्य, प्रमुख, परोपकारिणी सभा
७२. डॉ. शशिप्रभा कुमार, पूर्व विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, जेएनयू, दिल्ली
७३. आचार्य डॉ. सुमेधा, आचार्य श्रीमद् दयानन्द कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, चोटीपुरा
७४. आचार्य नन्दिता शास्त्री चतुर्वेदा, आचार्य पाणिनि कन्या गुरुकुल वाराणसी
७५. डॉ. धर्मतेजा, प्रतिनिधि तेलंगाना आर्य समाज
७६. श्री माधव प्रसाद पुडेल, विभागाध्यक्ष केन्द्रीय संस्कृत विभाग, त्रिभुवन वि.वि., नेपाल
७७. श्री महेन्द्रसिंह राजपूत, प्रमुख आर्य प्रतिनिधि सभा, असम
७८. श्री सिद्धार्थ भार्गव, संस्थापक निदेशक, आनन्द धाम रिट्रीट्स प्रा.लि. बेंगलौर
७९. श्री ओ.पी. राय, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, सिंगापुर
८०. श्री कमलेश कुमार आर्य, निदेशक, आर्य प्रतिनिधि सभा फिजी
८१. श्री राजीव गुलाटी, अध्यक्ष एमडीएच प्रा.लि.
८२. स्वामी (डॉ.) देवव्रत आचार्य, अध्यक्ष, आर्य वीर दल
८३. डॉ. वेदप्रकाश गर्ग, अध्यक्ष, आर्य प्रतिनिधि सभा, मुम्बई
८४. श्री एस.के. रल्ली, अध्यक्ष, आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली
८५. श्री अशोक आर्य, सत्यार्थ प्रकाश ट्रस्ट, उदयपुर
८६. श्री देवेन्द्र पाल वर्मा, प्रतिनिधि, आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश
८७. आचार्य स्वदेश, अध्यक्ष गुरुकुल वृन्दावन, मथुरा
८८. आचार्य वाचोनिधि, अध्यक्ष, जीवन प्रभात अनाथालय, गुजरात
८९. आचार्य सुकामा, कन्या गुरुकुल रुड़की, रोहतक
९०. श्री पी.सी. सूद, अध्यक्ष, आर्य प्रतिनिधि सभा, हिमाचल प्रदेश
९१. श्री योग मुनि, अध्यक्ष, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
९२. डॉ. वागीश आचार्य, प्रथम आर्य समाज के पुजारी, मुम्बई
९३. स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती, गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ
९४. डॉ. ज्वलन्त कुमार, शास्त्री अमेठी वैदिक विद्वान्
९५. श्री अरुण प्रकाश मिश्रा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष, दिल्ली आर्य प्र. सभा
९६. श्री सतीश चड्ढा, महासचिव, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य
९७. डॉ. शशिकान्त शर्मा, प्रोफेसर, जनसंचार विभाग, हिमाचल प्रदेश वि.वि.

● इस समिति के विचारार्थ विषयों के अन्तर्गत राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर महर्षि दयानन्द सरस्वती की २००वीं जयन्ती के स्मरणोत्सव हेतु नीति, निर्देश और कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करने हेतु दिशा–निर्देश प्रदान करना है। ● समिति की अवधि तत्काल प्रभाव से प्रारम्भ होगी और अगले आदेशों तक जारी रहेगी। ● समिति के पास सदस्यों को सहयोजित करने की शक्ति होगी।

आह्वान

संघर्ष

आज संघर्ष कर लें जो अन्याय से,
कल हमारा बनेगा मेरे साथियों।
छल अनीति के आगे झुकोगे नहीं
आये सैलाब धन का बहोगे नहीं
स्वार्थ की आँधियों से रुकोगे नहीं
राह काँटों भरी हो मुड़ोगे नहीं।
कष्ट की आग तप के कुन्दन बनो
भस्म हों शत्रु, शोला भयंकर बनो।
द्रोह के विषधरों बीच चन्दन बनों
विष विघटन का पीने को शंकर बनो।
आज सींचो पसीने से वीरान को
कल चमन खिल उठेगा मेरे साथियों।।
आज संघर्ष कर लें जो अन्याय से।।
जिसकी माटी से इस तन को शक्ति मिली
जिसकी सुषमा से इस मन को भक्ति मिली।
जिसके पानी से लाली लहू में घुली
जिसकी खुशबू से साँसों को सरगम मिली।
जिसके हिमगिरि ने अमृत से निर्झर दिये
जिसकी नदियों ने मैदान उर्वर किये।
जिसकी संस्कृति से पायी सदा प्रेरणा
जिसकी गोदी ने हर लीं सभी वेदना।
आज अभिषेक उसका करो प्यार से
कल चमन खिल उठेगा मेरे साथियों।।
आज संघर्ष कर लें जो अन्याय से।।
हम रहें न रहें, कल हमारा रहे
हाथ कोई हों चिन्तन हमारा रहे,
ऐसे बिरवे लगें आज विश्वास से
कल सुग्गधित हो हर फूल की श्वांस से।
आज हर मोड़ पर दीप ऐसे जलें
कल भटकते हुओं को उजाले मिलें।
ज्ञान आकाश से सूर्य ऐसा उगे
ज्योति अनुपम हो अज्ञान भ्रम भय भगे।
आज उठके भगीरथ सा संकल्प लें
ज्ञान गंगा बहेगी मेरे साथियों।।
आज संघर्ष कर लें जो अन्याय से।।
धर्म लड़ना किसी को सिखाता नहीं
धर्म बँटना किसी को बताता नहीं।
भेद पैदा करे जो,न वह धर्म है
शूल सा चुभ रहे वह न सत्कर्म है।
धर्म की राह में प्यार बिखरा हुआ
कर्म की राह में जिंदगी है दिया
बन दयानन्द आगे बढ़ो तो जरा
विष भी अमृत बनेगा मेरे साथियों।।
आज संघर्ष कर लें जो अन्याय से।।
अपनी उन्नति से कोई न सन्तुष्ट हो
सबके सुख सबकी उन्नति हमें इष्ट हो।
अपने सुख, बाँट दें, सबके दुःख बाँट लें
क्लेश की खाइयाँ स्नेह से पाट दें।
सबके आँसू खरीदें खुशी बेचकर
सर्द आहों को दे दें मल्हारों के स्वर
हर कली बाग की फूल बनकर खिले
और हर फूल से गंध अनुपम मिले।
आज बोलो तो '**मृत्योर्मा अमृतं गमय**'
आज बोलो तो '**असतो मा सद्गमय**'
आज बोलो तो '**तमसो मा ज्योतिर्गमय**'
कल सुनहरा बनेगा मेरे साथियों।
आज संघर्ष कर लें जो अन्याय से।।

● शान्ति नागर
नगला पदी, आगरा (उ.प्र.)
चलभाष : ७८९५६८६९२६

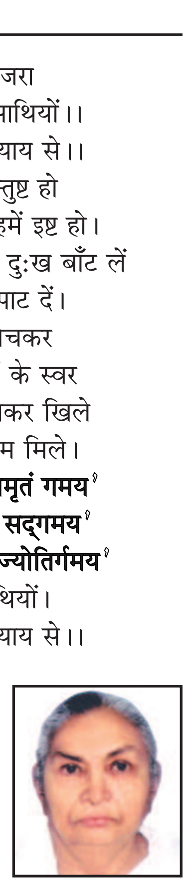

यजुर्वेद में विद्या और अविद्या

● **शिवनारायण उपाध्याय**
७३, शास्त्री नगर, दादावाड़ी, कोटा (राज.)
दूरभाष : ०७४४-२५०१७८५

यजुर्वेद के विद्या और अविद्या के विषय में चालीसवें अध्याय के मंत्र संख्या १२, १३ और १४ में चिन्तन हुआ है। विद्या का अर्थ उस ज्ञान से है जिसके द्वारा हम पदार्थ को उसके सही रूप में पहचान सकते हैं। विद्या के द्वारा नित्य में नित्य, अनित्य में अनित्य, धर्म में धर्म और अधर्म में अधर्म को स्पष्ट रूप में देख लेना सम्भव हो जाता है। विद्या ही मर्त्य को मर्त्य को अमर्त्य और अमर्त्य के रूप में जानने में सफल होती है। विद्या के भी ऋषियों ने दो रूप बताए हैं। एक पराविद्या और दूसरी अपराविद्या। अपराविद्या यह है कि जिससे पृथ्वी और तृण से लेकर प्रकृति पर्यन्त पदार्थों के गुणों के ज्ञान से ठीक-ठीक कार्य सिद्ध करना होता है। अपरा विद्या ही हमें समाज में कैसे रहना है इसकी शिक्षा देती है। विज्ञान की सभी खोजें अपराविद्या के अन्तर्गत ही आती है। हमारे सम्पूर्ण कर्म काण्डों का सञ्चालन भी अपराविद्या के द्वारा ही होता है। देव यज्ञ, ब्रह्म यज्ञादि भी इसी के क्षेत्र में स्थान प्राप्त करते हैं। इसके विपरीत पराविद्या ब्रह्म की यथावत् प्राप्ति कराती है। वास्तव में स्वामी दयानन्द सरस्वती का तो मानना यह है कि अपराविद्या का ही उत्तम फल पराविद्या है। ऋग्वेद का तो मानना ही यह है कि पराविद्या ही नहीं वरन् चारों वेद भी उसी की (ब्रह्म की) प्राप्ति कराने के लिए विशेष करके प्रतिपादन कर रहे हैं।

तद् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरय/दिवीक चतुराततम्। यजु.

अर्थात् जो व्यापक परमेश्वर है उसका अत्यन्त आनन्द स्वरूप, जो प्राप्ति के योग्य है, जिसका नाम मोक्ष है उसको विद्वान् लोग सब काल में देखते हैं। वह सब में व्याप्त हो रहा है और उसमें देश काल और वस्तु का भेद नहीं है अर्थात् उस देश में है और उस देश में नहीं है तथा उस काल में था और उस काल में नहीं, उस वस्तु में है और उस वस्तु में नहीं है। इसी कारण से वह पद सब जगह में सबको प्राप्त होता है, क्योंकि वह ब्रह्म सब ठिकाने परिपूर्ण है। उस पद की प्राप्ति से कोई भी प्राप्ति उत्तम नहीं है। इसलिए चारों वेद उसी की प्राप्ति कराने के लिए विशेष करके प्रतिपादन कर रहे हैं।

विद्या के विपरीत अविद्या नित्य में अनित्य, अमर्त्य में मर्त्य, अधर्म में धर्म, अन्याय में न्याय, दुःख में सुख, जड़ में चेतन खोजती है।

एक तरह से यह विद्या का एकदम विरोधी ज्ञान है। अविद्या का एक दूसरा अर्थ भी है। अविद्या अर्थात् जो विद्या नहीं है, विद्या नहीं है तो फिर वह क्या है? तो कहा जाता है कि वह कर्म है।

वेद में कई मंत्रों में अविद्या का प्रयोग कर्म के अर्थ में ही किया गया है।

स्वामी शंकराचार्य ने भी अविद्या का अर्थ कर्म काण्ड किया है।

अब हम यजुर्वेद अध्याय ४० के आधार पर विद्या-अविद्या पर विचार करते हैं।

अन्धं तमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते।
ततो भूय इव ते तमो य उ विद्यायाँ रताः।। यजु. ४०.१२

स्वामी शंकराचार्य अपने ईशावास्योपनिषद् के भाष्य में इस मंत्र को लिखने के पूर्व लिखते हैं, **ये तु कर्मणिः कर्म निष्ठाः कर्म कुर्वन्तः एव जीजी विषव तेभ्यः इदम् उच्चयते-** उनके अनुसार यह मंत्र उन लोगों के लिए है जो लोग कर्म मार्गी है, कर्म में निष्ठा रखने वाले हैं जो कर्म करते हुए ही जीने के इच्छुक है। स्वामी शंकराचार्य के अनुसार मंत्र का भावार्थ इस प्रकार होगा। जो लोग केवल अविद्या (कर्म काण्ड) के अनुष्ठान में लगे रहते हैं वे घोर अन्धकार में प्रवेश करते हैं और जो लोग केवल विद्या (देवतोपासना) में लोग रहते हैं। वे उससे भी गहरे अन्धकार में प्रवेश करते हैं।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने मंत्र का अर्थ इस प्रकार किया है- **(ये)** जो मनुष्य **(अविद्याम्)** अनित्य में नित्य, अशुद्ध में शुद्ध, दुःख में सुख अनात्मा शरीरादि में आत्म बुद्धि अविद्या उसकी अर्थात् ज्ञानादि रहित परमेश्वर से भिन्न जड़ वस्तु की **(उपासते)** उपासना करते हैं। **(अन्धम् तपः)** दृष्टि के रोकने वाले अन्धकार और अत्यन्त अज्ञान को **(प्र विशन्ति)** प्राप्त होते हैं और **(ये)** जो अपने को आत्मा के पण्डित मानने वाले **(विद्यायाम्)** अर्थ और इसके सम्बन्ध के जानने मात्र अवैदिक आचरण **(रताः)** करते **(ते)** वे **(उ)** भी **(ततः)** उससे **(भूय इव)** अधिकतर **(तमः)** अज्ञान रूपी सागर में प्रवेश करते हैं।

स्वामी शंकराचार्य ने अविद्या का अर्थ देवतोपासना लिया है जबकि स्वामी दयानन्द ने विद्या का अर्थ अपने आपको पण्डित मानने वाले, केवल वेद मंत्र के अर्थ को जानने वाले परन्तु आचरण में उससे विरूद्ध कार्य करने वाले व्यक्तियों को लिया है।

स्वामी शंकराचार्य ने विद्या का अर्थ विद्या से विपरीत लिया है वेद का मंत्र तो सभी के लिए है फिर स्वामी शंकराचार्य का यह कथन उचित नहीं है कि यह मंत्र केवल कर्मकाण्डी लोगों के लिए ही है।

मेरी दृष्टि से तो मंत्र में आए विद्या और अविद्या का अर्थ ज्ञान और कर्म है। मंत्र में कहा गया है कि जो लोग केवल अविद्या अर्थात् कर्म की उपासना करते हैं और बिना ज्ञान के केवल कर्म करते हैं वे निश्चित रूप से अन्धकार में प्रवेश करते हैं। इसके विपरीत जो लोग केवल विद्या की उपासना (प्राप्ति कार्य के लिए) करते रहते हैं वे उनसे भी अधिक अन्धकार में प्रवेश करते हैं क्योंकि कर्म का तो कोई न कोई अच्छा-बुरा फल होता है, परन्तु कर्म रहित विद्या का कोई फल नहीं होता है।

इसलिए वे अविद्या (कर्म) में संलग्न लोगों से भी हीन होते हैं।

फिर अगले मंत्र में दोनों के भिन्न-भिन्न फल होने की बात कही है।

अन्य देवाहुर्विद्यायाऽअन्यदाहुरविद्यायाः।
इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे।। यजु. ४०.१३

इस मंत्र का अर्थ भी दोनों के समान ही है।

अर्थ- हे मनुष्यों। जो विद्वान् **(नः) ह**मारे लिए **(विचचक्षिरे)** व्याख्यापूर्वक कहते थे **(विद्यायाः)** विद्या का **(अन्यत्)** अन्य ही कार्य वा फल **(आहुः)** कहते थे **(अविद्यायाः)** अविद्या का **(अन्यत्)** दूसरा फल **(आहुः)** कहते हैं। इस प्रकार उन **(धीराणाम्)** आत्मज्ञानी विद्वानों से **(तत्)** उस वचन को हम लोग **(शुश्रुम)** सुनते ये ऐसा जानो। **(स्वामी दयानन्द)**

विद्या या देवतोपासना से पृथक् फल कहा गया है और कर्म काण्ड से पृथक् फल कहा गया है। ऐसा ज्ञानी लोगों से सुना है जिन्होंने हमारे लिए इसकी व्याख्या की थी। स्वामी शंकराचार्य दोनों ने अविद्या और विद्या के अलग-अलग फल माने हैं।

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयँ सह।
अविद्ययाया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते।। यजु. ४०.१४

अर्थ : (यः) जो विद्वान् **(विद्याम्)** विद्या **(च)** और उसके सम्बन्धी साधन- उपसाधनों को **(अविद्याम्)** अविद्या **(च)** और इसके उपयोगी साधन समूह की ओर **(तत्)** उस ध्यानगम्य कर्म **(उभयम्)** इन दोनों को **(सह)** साथ ही **(वेद)** जानता है वह **(अविद्यया)** शरीरादि जड़ पदार्थ समूह से किए पुरुषार्थ से मृत्यु दुःख के भय को **(तीर्त्वा)** उल्लंघन कर **(विद्यया)** आत्मा और शुद्ध अन्तःकरण के संयोग में जो धर्म उस से उत्पन्न हुए यथार्थ दर्शन रूप विद्या से **(अमृतम्)** नाश रहित अपने स्वरूप वा परमात्मा को **(अश्नुते)** प्राप्त होता है।

इसी प्रकार स्वामी शंकराचार्य का भी मानना है कि जो व्यक्ति उपासना और कर्म को साथ-साथ करने योग्य जानता है वह कर्म के द्वारा मृत्यु को पार करके उपासना के द्वारा अमृत को प्राप्त कर लेता है। यजुर्वेद का कहना है कि विद्या का कभी भी ह्रास नहीं होना चाहिए।

मा नः शँ सोऽअररुषो धूर्तिः प्रणङ्।
रक्षणो ब्रह्मणस्पते।। यजुर्वेद ३.३०.

अर्थ : हे **(ब्रह्मणस्पते)** जगदीश्वर! आपकी कृपा से **(नः)** हमारी वेद विद्या **(मा प्रणङ्)** कभी नष्ट न हो और जो **(अररुषः)** दानादि धर्म रहित परधन ग्रहण करने वाले **(मर्त्यस्य)** मनुष्य की **(धूर्तिः)** हिंसा है उससे **(नः)** हम लोगों की निरन्तर **(रक्ष)** रक्षा कीजिए।

विद्वानों को भी विद्या के प्रचार-प्रसार में भाग लेना चाहिए।

अग्ने व्रतपास्त्वे व्रतपाया तव तनूस्त्वय्यभूदियं सा
त्वयि यो मम तनूस्त्वय्यभूदियँसा मयि।
यथा यथं नौ व्रतपते व्रतान्यनु मे दीक्षां
दीक्षापतिरमँस्तान्नुतपस्तपतिः।।

यजुर्वेद ५.४०

अर्थ : (व्रतपाः) जैसे सत्य का पालन करने वाला विद्वान् हो वैसे **(अग्ने)** हे विशेष ज्ञानवान पुरुष! जो तेरा **(व्रतपाः)** सत्य विद्या गुणों का पालने वाला आचार्य **(अभूत्)** हुआ था वैसे मैं **(ते)** तेरा होऊँ **(या)** जो **(तव)** तेरी **(ततूः)** विद्या आदि गुणों से व्याप्त होने वाली देह है **(सा)** वह **(मयि)** तेरे मित्र मेरे में भी हो **(एषा)** वह **(त्वयि)** मेरे मित्र तुझ में बुद्धि हो **(या)** जो **(मम)** मेरी **(तनूः)** विद्या की फैलावट है **(सा)** वह **(त्वयि)** मेरे पढ़ाने वाले तुझ में हो। **(इयम्)** यह **(मयि)** मेरे शिष्य मुझमें बुद्धि हो **(व्रतपते)** हे आचरणों से पालन करने वाले। जैसे सत्य गुण, सत्य उपदेश का रक्षक विद्वान् होता है वैसे मैं और तू **(यथायथम्)** यथा युक्त मित्र होकर **(व्रतानि)** सत्य आचरण का बर्ताव वर्त्तें। हे मित्र! जैसे **(तव)** तेरा **(दीक्षापतिः)** यथोक्त उपदेश का पालन करने वाला तेरे लिए **(दीक्षाम्)** सत्य का उपदेश **(अमंस्त)** करना जान रहा है। वैसे मेरा मेरे लिए **(अनु)** जाने। जैसे तेरा **(तपस्पतिः)** अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन करने वाला आचार्य तेरे लिए **(तपः)** पहिले क्लेश और पीछे सुख देने वाले ब्रह्मचर्य को जान रहा है। वैसे मेरा अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालने वाला आचार्य मेरे लिए जाने।

भावार्थ- जैसे पहिले विद्या पढ़ाने वाले अध्यापक लोग हुए वैसे हम लोगों को भी होना चाहिए। मनुष्य के लिए यज्ञ को सिद्ध करने वाली विद्या का भी नित्य सेवन करना चाहिए। इस विषय पर यजुर्वेद का कथन हैं-

यां मा लेखीरन्तरिक्षं मा हिँसीः पृथिव्या संभव अयँ हि त्वा
स्वधिति स्तेतिजानः प्रणिनाय महते सौभगाय।
अतस्त्व देववनस्पते शतवत्शो विरोह शतवल्शो रुहेम।

यजु. ५.४३

अर्थ : हे विद्वान्! जैसे मैं सूर्य के सामने से होकर **(द्याम्)** उसके प्रकाश को दृष्टिगोचर नहीं करता हूँ। वैसे तू भी उसको **(मा, लेखीः)** दृष्टिगोचर मत कर। जैसे मैं **(अन्तरिक्षम्)** यथार्थ पदार्थों के अवकाश को नहीं बिगाड़ता हूँ वैसे तू भी उसको **(मा, हिंसी)** मत बिगाड़। जैसे मैं **(पृथिव्या)** पृथ्वी के साथ होता हूँ। वैसे तू भी उसके साथ **(सम् भव)** हो। **(हि)** जिस कारण जैसे **(तेतिजानः)** अत्यन्त पैना **(स्वधितिः)** वज्र शत्रुओं को नाश करके ऐश्वर्य को देता है **(अतः)** इस कारण **(अयम्)** यह **(त्वा)** तुझे **(महते)** अत्यन्त श्रेष्ठ **(सौभगाय)** सौभाग्यपन के लिए सम्पन्न करे और भी पदार्थ जैसे ऐश्वर्य को **(प्रणिनाय)** प्राप्त करते हैं। वैसे तुझे ऐश्वर्य पहुँचावे। हे **(देव)** आनन्द युक्त **(वनस्पते)** वनों की रक्षा करने वाले विद्वान्! जैसे **(शतवल्शः)** सैकड़ों अंकुरों वाला पेड़ फलता है। वैसे तू भी उक्त प्रशंसनीय सौभाग्यपन से **(वि, रोह)** अच्छी तरह फल और जैसे **(सहस्त्रवल्शाः)** हजारों अंकुरों वाला पेड़ फले वैसे हम लोग भी सौभाग्यपन से फले-फूले।

भावार्थ : इस संसार में किसी भी मनुष्य को विद्या के प्रकाश का अभ्यास अपनी स्वतन्त्रता और सब प्रकार से अपने कार्यों की उन्नति को न छोड़ना चाहिए।

इसी प्रकार यजुर्वेद में और भी कई मंत्र है जो हमें विद्या प्राप्त करने की प्रेरणा देते हैं, परन्तु अब विषय आगे विस्तार न देकर यही विराम देते हैं। इति शम्।

आर्य शब्द का अर्थ

'**ऋ गतौ**' धातु से '**आर्य**' शब्द सिद्ध होता है। जिसका अर्थ है '**गतिः प्रापणार्थे**' अर्थात् गति-ज्ञान, गमन, प्राप्ति करने और प्राप्त कराने वाले को आर्य कहते हैं। प्रमाणः-

आर्य ईश्वरपुत्रः। निरुक्त(६/२६)

अर्थात् आर्य ईश्वर के पुत्र का नाम है।

वेद में ईश्वर कहता है कि-

अहं भूमिमददामायार्य। (ऋ ४/२६/२)

अर्थात् मैं इस भूमि का राज्य आर्यों के लिये प्रदान करता हूँ।

आर्यों! क्या आपको स्मरण है हिन्दी रक्षा सत्याग्रह का रक्तरंजित संघर्ष?

गतांक पृष्ठ ३२ से आगे

● **रामफल सिंह आर्य**
वैदिक प्रवक्ता, भिवानी (हरियाणा)
चलभाष : ९४१८२७७७१४, ९४१८४७७७१४

२७ मई को स्वामी आत्मानन्द जी के आदेशानुसार होशियारपुर निवासी चलकर लुधियाना आ पहुँचे। भीषण गर्मी के होते हुए भी लुधियाना निवासियों ने इस दल का भव्य स्वागत किया। एक शोभायात्रा लुधियाना के विभिन्न स्थानों से होती हुई आर्य समाज साबुन बाजार पहुँची। अन्य स्थानों में भी इसी प्रकार का उत्साह लोगों में था। ३० मई को सद्भावना यात्रा चण्डीगढ़ स्वामीजी के साथ पहुँची। जब ये सचिवालय पहुँचे तो पंजाब के मुख्यमंत्री सरदार प्रतापसिंह कैरो ने बाहर आकर स्वामीजी के चरण स्पर्श किए और बातचीत के लिए उन्हें अन्दर ले गए। बैठक में वित्तमंत्री पण्डित मोहनलाल, शिक्षा मंत्री अमरनाथ विद्यालंकार, स्वास्थ्य मंत्री चौधरी सूरजमल, उप शिक्षा मंत्री श्री यश भी सम्मिलित हुए। बातचीत एक घण्टे से अधिक समय तक होती रही, परन्तु कोई सन्तोषजनक उत्तर न मिला। अत: स्वामीजी ने सचिवालय में धरना मार लिया। कार्यालय के बन्द होने पर यह नियम था कि वहाँ कोई नहीं ठहर सकता। अत: स्वामीजी को उठने के लिए कहा गया परन्तु वे न उठे। अत: आरक्षी दल गाड़ियाँ लेकर आए और उन्हें उठाकर उनके आश्रम यमुनानगर में छोड़ आए तथा आनन्द स्वामीजी को दिल्ली पहुँचा दिया गया। उस समय स्वामी आत्मानन्दजी को रक्तचाप बहुत बढ़ा हुआ था। अत: रास्ते में हीउन्हें नींद की गोली खिला दी गई थी।

३१ मई को वे पुन: सचिवालय में धरना देने के लिए अम्बाला पहुँच गए, जिन्हें दिल्ली छोड़ा गया था वे भी सायंकाल तक अम्बाला आ गए। अत: २ जून को स्वामीजी पुन: आर्य समाज मन्दिर २२ सेक्टर चण्डीगढ़ में पहुँच गए और यज्ञोपरान्त ३ जून को सचिवालय पहुँच गए। वहाँ पर ८० मिनट तक नेताओं/अधिकारियों से वार्तालाप होता रहा। परिणाम कुछ न निकला अत: धरना दिया गया। रात को ११.३० बजे समस्त सत्याग्रहियों को उठाकर दूरस्थ स्थानों पर भेज दिया गया। हिन्दी रक्षा समिति ने ७ जून को पुन: चण्डीगढ़ में धरना दिया तथा पूर्ववत् सत्याग्रहियों को अन्य स्थानों पर भेज दिया गया। ८ जून को प्रधानमंत्री पण्डित नेहरू को एक विस्तृत पत्र लिखा जिसमें लिखा गया था कि ९ जून से पूरे पंजाब में व्यापक सत्याग्रह किया जाएगा। विभिन्न स्थानों से माताओं ने अपने पुत्रों को तिलक लगा-लगाकर सत्याग्रह के लिए भेजा। जब ये लोग सचिवालय चण्डीगढ़ में पहुँचे तो आरक्षी चारों ओर से घेरा डाल कर खड़े थे। इधर से सत्याग्रही अन्दर जाने का प्रयत्न कर रहे थे। उधर से आरक्षी उन्हें धक्के देकर परे हटा रहे थे। चारों ओर खड़ी जनता सत्याग्रहियों का उत्साह बढ़ा रही थी। लगातार ३ घण्टे तक यह दृश्य चलता रहा। १३ जून को आचार्य रामदेवजी के नेतृत्व में जो सत्याग्रही आए थे उन्हें पुलिस ने उठाकर कठिन पर्वत प्रदेश में छोड़ दिया। इस भीषण गर्मी में न भोजन, न पानी की व्यवस्था, न ही कोई आने जाने के साधन। कुछ सत्याग्रहियों को तो सिंह, चीतों व अजगरों से परिपूर्ण जंगलों में छोड़ा गया। ब्रह्मचारी अभयदेव ने बताया कि उनको नालागढ़ के जंगलों में ले जाकर एक सांप के ऊपर पटक दिया। कितने ही लोगों को इस कार्य में भयंकर चोटें आई। २६ जून को स्वामी आत्मानन्द को १०३ डिग्री बुखार हो गया और उच्च रक्त चाप से उनका शरीर सूजना आरम्भ हो गया तथा वे ५-६ घंटे अचेत रहे। उन्हें एक अस्पताल में दाखिल किया गया। ३० जून को जालन्धर में आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य प्रादेशिक सभा, सनातन धर्म सभा, जैन सभा और पंजाब के विभिन्न नगरों से हिन्दी रक्षा समिति की एक बैठक स्वामी आत्मानन्दजी की अध्यक्षता में हुई। इसमें नेताओं के अतिरिक्त लगभग ६०० प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। इसमें कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। यद्यपि प्रधानमंत्री पण्डित नेहरू से कई बार सम्पर्क किया गया, परन्तु उनकी ओर से सदैव निराशा ही हाथ लगी। इसी समय कुछ कांग्रेसी तथा अकाली नेताओं की ओर से पाकिस्तान द्वारा आक्रामण किए जाने की अफवाहें उठाकर लोगों का उत्साह फीका करने का प्रयास किया गया, परन्तु उसका जनता पर कुछ प्रभाव न पड़ा। अकाली नेता मास्टर तारासिंह ने १५ अगस्त को हिन्दू विरोधी सभाएँ करने का भी आदेश दिया। २४ जुलाई १९५७ को स्वामी आत्मानन्द ने आचार्य भगवान देव (स्वामी ओमानन्द) से कहा कि क्या आप २००० सत्याग्रही दे सकोगे? वे उसी समय बोले कि २००० तो क्या, पूरा हरियाणा ही इस आन्दोलन को चला सकता है। आप निश्चिन्त रहिए। अत: ३० जुलाई को रोहतक में एक सत्याग्रही शिविर स्थापित किया गया।

आन्दोलन इतना व्यापक हुआ कि पंजाब के कई नगरों की जेलें सत्याग्रहियों से भर गई। २४ अगस्त को फिरोजपुर की जेल में जो अत्याचार सत्याग्रहियों पर किया गया वह रोंगटे खड़े कर देने वाला था। पुलिस वालों ने तथा भयंकर अपराध में दण्ड भुगत रहे अपराधियों ने इन लोगों के ऊपर खाट की बाहियों, लाठियों तथा लोहे की पाइपों से आक्रमण कर दिया। लोग उसमें आहत हो गए और उनकी हड्डियाँ टूटीं। हरियाणा के एक युवक फूलसिंह जो उस समय १०५ डिग्री बुखार से तप रहे थे, उनके सिर पर एक लकड़ी का फट्टा आकर लगा और उनका सिर फूट गया। वे अचेत होकर गिर पड़े तो उनको एक मोटी फट्टी से बुरी तरह पीटा गया जिससे उनके प्राण पखेरू उड़ गए। एक व्यक्ति का

अधिक रक्त बह जाने से उनकी नेत्र ज्योति जाती रही। आर्य समाज लक्ष्मणसर (अमृतसर) के एक व्यक्ति की गले की दोनों हड्डियाँ तोड़ डाली गई। पठानकोट के सत्यपाल के गुप्तांगों को कुचल दिया। गुरुकुल ज्वालापुर के स्नातक सच्चिदानन्द शास्त्री को लाठियों से इतना पीटा कि उनकी एक–एक हड्डी हिल उठी। स्वामी परमानन्दजी १६ दिन से अनशन पर थे उन्हें भी बुरी तरह से पीटा गया। सहारनपुर के एक ६२ वर्षीय सिख सरदार सुन्दरसिंह के हाथ की हड्डी तोड़ डाली। नया बाँस गाँव (रोहतक) के श्री सुमेरसिंह जो बैठे **'सत्यार्थ प्रकाश'** पढ़ रहे थे को क्रूर अत्याचारियों ने मार डाला। पुलिस वाले मारते जाते थे और कहते जाते थे **'और हिन्दी पढोगे? पढ़ो हिन्दी। पंजाबी तुम्हारे गले में अटकती है।'** चार दिन तक इन घायलों के उपचार की कोई विशेष व्यवस्था न की गई। अत्यन्त आश्चर्य की बात तो यह है कि संसार को पंचशील का पाठ पढ़ाने वाले नेहरू की नाक के नीचे अत्याचार हुआ परन्तु उनके कान पर जूं तक न रेंगी। उल्टा उनकी ओर से कई बार सत्याग्रहियों को अपशब्द कहे गए।

इन दिनों स्वामी आत्मानन्दजी की शारीरिक दशा बड़ी शोचनीय चल रही थी। बुखार भी बना रहता था और उस पर उच्च रक्त चाप का पुराना रोग। इसके उपरान्त उनकी भाग—दौड़ में कोई न्यूनता न आने पाती थी। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का निर्वाचन भी इन्हीं दिनों में आ गया, परन्तु सत्याग्रह के कारण उसे स्थगित कर दिया गया था। हिन्दी आन्दोलन को चलते हुए साढ़े पाँच मास का समय व्यतीत हो गया था तथा इसने बहुत उग्र रूप धारण कर लिया था। पूरा शासन तन्त्र सत्याग्रहियों को दबाने में लगा हुआ था यहाँ तक कि न्यायालयों तथा उच्च न्यायालयों के न्यायाधीश भी देश में अशान्ति, डकैती, लूट–खसोट के गम्भीर आरोप सत्याग्रहियों पर लगाकर अपनी योग्यता का प्रदर्शन कर रहे थे। आर्य वीरों का उत्साह, उनके त्याग व बलिदान की भावना देखने योग्य थी। अनेकों कष्ट उठाकर भी वे कर्त्तव्य पथ पर डटे हुए थे। ९ नवम्बर को प्रधानमंत्री नेहरू ने चण्डीगढ़ आना था। स्वामी आत्मानन्दजी ने भी वही दिन पूर्ण रूप से शक्ति प्रदर्शन का निश्चित किया। अब सरकार जी जान से इस कार्य में जुट गई कि किसी भी प्रकार से सत्याग्रही चण्डीगढ़ न पहुँचने पाएँ। कैरो सरकार की यह भरपूर कोशिश थी कि उसके अत्याचारों की भनक भी प्रधानमंत्री को न लगे। इसके लिए कितनों को जेलों में डाला गया कितनों को गाड़ियों में भरकर अज्ञात स्थानों में छोड़ा गया इसकी गणना भी सरल नहीं है।

८ नवम्बर को प्रात: स्वामीजी को दिल्ली स्टेशन से विदाई दी गई उस समय अपार जनसमूह उमड़ पड़ा। जब गाड़ी करनाल पहुँची तो पुलिस भी जनता की उमड़ती भीड़ पर नियन्त्रण न रख पाई। कई स्थानों पर रेलगाड़ी को अपार भीड़ के सामने रुकना पड़ा। कुरुक्षेत्र में पहुँचते ही उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। सायंकाल चार बजे जत्थे को चलने के लिए कहा गया, परन्तु यह न बताया गया कि उन्हें कहाँ ले जाया जा रहा है। कुछ देर बाद यमुनानगर आश्रम में उन्हें पहुँचा दिया गया।

जब प्रधानमंत्री नेहरू चण्डीगढ़ पहुँचे तो अनेक स्थानों पर लोगों ने उन्हें काली झण्डी दिखाई। उस समय समस्त पंजाब ने हड़ताल रखी और प्रधानमंत्री को यह बता दिया कि लोग उनकी नीतियों से दु:खी हैं। हरियाणा में हड़ताल रही। कई स्थानों पर अश्रु गैस के गोले छोड़े गए, लाठी प्रहार किया गया, अनेकों गिरफ्तारियाँ भी हुईं।

पण्डित नेहरू ने चण्डीगढ़ जाकर घोषित करा दिया कि आन्दोलनकारियों की ९० प्रतिशत माँगें स्वीकार कर ली गई हैं। शेष पर प्रेमपूर्वक विचार–विमर्श किया जा सकता है। आन्दोलनकारियों ने फिर भी आन्दोलन स्थगित न किया। अन्त में प्रशासन को झुकना पड़ा। गृह मंत्री पण्डित गोविन्द वल्लभ पन्त ने समझौते के लिए श्री घनश्याम गुप्त को बुलाया और सारी माँगें मानने का आश्वासन दे दिया। इसके उपरान्त पंजाब सरकार ने भी समाचार–पत्रों में प्रकाशित करा दिया कि समस्त सत्याग्रही छोड़ दिए जाएँ।

इस प्रकार से आर्य समाज के मस्तक पर एक गौरव गाथा को सदैव के लिए अंकित करके यह संघर्ष समाप्त हुआ। **आर्यो! यह सब कैसे हो पाया? आपके पूर्वजों के त्याग, संगठन, स्वाभिमान, जागरुकता, दृढ़ संकल्प, शौर्य और कर्त्तव्य निष्ठा के कारण।** हमारा अतीत बहुत गौरवपूर्ण रहा है। एक साधारण कार्यकर्ता से लेकर हमारे नेताओं तक, संन्यासियों तक सभी का जीवन एक जलती हुई मशाल की भाँति था। उनके लिए सुख–सुविधाएँ गौण थीं, त्याग व बलिदान मुख्य था। **आज हम छोटे–छोटे स्वार्थों को लेकर खण्डित होते जा रहे हैं, बिखर रहे हैं यह गाथा कैसे लिखी जाएगी? कौन इस पर गर्व करेगा? याद करो उन वीरों का बलिदान और आज से निश्चय कर लो कि हम फिर वही स्वर्ण युग लाकर रहेंगे। आओ! अपने गौरव को पहचाने और एक नया इतिहास फिर से रचें।**

(श्री वेदानन्द वेदवागीशजी कृत आत्मानन्द ज्योति के आधार पर)

विभीषण का राज्याभिषेक

राम के तीन अवसरों पर विभीषण काम आया। एक तो रावण का पुत्र इन्द्रजीत अपने चारों ओर वैज्ञानिक यन्त्रावरण डालकर लड़ता था। विभीषण ने लक्ष्मण को ऊँचे वृक्ष पर चढ़ने को कहा। देखो वह इन्द्रजीत खड़ा हुआ है। उसे यहीं से बाण मारो। लक्ष्मण के बाण से इन्द्रजीत मारा गया। जब इन्द्रजीत बनावटी सीता को अपने रथ पर बिठाकर उसका वध किया तो राम यह दृश्य देखकर शस्त्र डालने लगे। अब क्या करूँगा लड़कर, मेरी सीता तो मारी गई। विभीषण ने राम को सावधान किया और बताया कि वह तो बनावटी सीता है। तीसरा– राम– रावण के सिर पर सिर काट रहे थे। विभीषण ने बताया वह बनावटी सिर है इन्हें मत मारो। छाती पर मारो। ऐसा करने से रावण मारा गया। लंका विजय करके विभीषण को राजा बना दिया गया।

● देवकुमार प्रसाद आर्य
भूतपूर्व प्रधान : आर्य समाज,
५०, फौजा बगान, वारीडीह, जमशेदपुर (झारखण्ड)
चलभाष : ८१६९५४२३३९

महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय

गतांक पृष्ठ ९ से आगे

● ई. चन्द्रप्रकाश महाजन
प्रधान : आर्य समाज नूरपुर, जसूर (हि.प्र.)
चलभाष : ८६२७०४१०४४, ९४१८००८०४४

२६. गोकरुणानिधि (सन् १८८० ई.)

पुस्तक आकार में छोटी (१८ पृष्ठ की) होते हुए भी विषय एवं उपादेयता की दृष्टि से यह अत्यधिक महत्वपूर्ण है। स्वामी जी ने सभी पशुओं की हिंसा रोककर उनकी रक्षा करने के उद्देश्य से गोकरुणानिधि पुस्तक लिखी है।

पुस्तक हिन्दी भाषा में लिखी गई है। स्वामी जी ने इसका अंग्रेजी अनुवाद भी करवाया था।

इस रचना का उद्देश्य स्वामी जी ने भूमिका में स्पष्ट कर दिया है, **''यह ग्रन्थ इसी अभिप्राय से रचा गया है जिससे गौ आदि पशु जहाँ तक सामर्थ्य हो बचाये जायें, और उसके बचाये जाने से दूध, घी और खेती के बढ़ने से सुख बढ़ता रहे।''**

इस पुस्तक में पशुओं से मिलने वाले दूध एवं उनकी सन्तानों से होने वाले लाभों का औसत रूप से मूल्यांकन एवं गणना की गई है कि छः गाय की पीढ़ी दर पीढ़ी का हिसाब लगाकर देखें तो असंख्य मनुष्यों का पालन हो सकता है और उसके मांस से अनुमान है कि केवल ८० मांसाहारी मनुष्य केवल एक बार तृप्त हो सकते हैं।

स्वामीजी ने बड़े मार्मिक शब्दों में ऐसे गौ आदि की तुलना वृद्ध माता–पिता के साथ करते हुए उन्हें भी संरक्ष्य माना है।

यह पुस्तक तीन भागों में विभक्त है, जिन्हें प्रकरण नाम दिया गया है:– १. समीक्षा प्रकरण, २. नियम प्रकरण, ३. उपनियम प्रकरण।

मुख्य विषय समीक्षा प्रकरण है। समीक्षा प्रकरण के प्रारम्भ में **गौ–कृषि–रक्षिणी सभा** के निर्माण का उल्लेख किया है। इस सभा का उद्देश्य गौ आदि पशुओं और कृषि आदि कर्मों की रक्षा करना था।

यजुर्वेद के प्रथम मन्त्र में परमात्मा की आज्ञा है कि **'यजमानस्य पशून् पाहि'** हे पुरुष! पशुओं को कभी मत मार और यजमान अर्थात् सबके सुख देने वाले जनों के सम्बन्धी पशुओं की रक्षा कर, जिससे तेरी भी पूरी रक्षा हो।

इसीलिए ब्रह्म से लेके आज पर्यन्त लोग पशुओं की हिंसा में पाप और अधर्म समझते थे और अब भी समझते हैं। और इनकी रक्षा में अन्न भी महँगा नहीं होता क्योंकि दूध आदि के अधिक होने से दरिद्री को भी खानपान में मिलने पर न्यून ही अन्न खाया जाता है।

स्वामीजी लिखते हैं– **हे परमेश्वर! तू क्यों न इन पशुओं पर जो कि बिना अपराध के मारे जाते हैं, दया नहीं करता। क्या उन पर तेरी प्रीति नहीं है? क्या इनके लिए तेरी न्याय सभा बन्द हो गई है? क्यों इनकी पीड़ा छुड़ाने पर ध्यान नहीं देता और उनकी पुकार नहीं सुनता?**

दयानन्द जी ने अपने कार्यकाल में गौ आदि मूक प्राणियों की रक्षार्थ महान् आन्दोलन भी किया था और वायसराय तथा भारत सरकार के पास दो करोड़ भारतवासियों के हस्ताक्षर युक्त प्रार्थना पत्र भेजने के लिए बहुत बड़ा उद्योग भी किया था। इसके लिए अनेक सज्जनों को पत्र भी लिखे थे।

स्वामीजी ने अनेक स्थलों पर गौरक्षा और उसके महत्व पर अपने विचार प्रकट किये हैं।

(१) **''हाँ, गौरक्षा सर्वोत्तम और इसमें सबसे अधिक लाभ है।''**

(२) **''गौ रक्षा से अधिकांश मनुष्यों को अत्यन्त अधिक लाभ होता है।''**

(३) **''देखो एक मोटी ताजी गाय को यदि लोग मारेंगे तो अधिक से अधिक बीस मनुष्यों का पेट भरेगा वह भी तब जबकि उसके साथ दस सेर अनाज भी हो और जो उसकी रक्षा करेंगे तो वह कम से कम बीस वर्ष तक जीएगी। तो देखो कितना लाभ होगा।''**

(४) स्वामीजी ने लाट साहब (मेयरसाहब) से कहा था कि **''भारत वर्ष से जाकर आप इंडिया कौंसिल के सदस्य होंगे। वहाँ आप गौवध बन्द करने का प्रयत्न करें।''** कहते हैं कि मेयर साहब ने यत्न करने का वचन भी दिया था।

(५) **''देश में सहस्त्रों गौएँ प्रतिदिन मारी जाती हैं जिससे देश को अत्यन्त हानि हो रही है। इसी कारण यह देश दुर्दशा को प्राप्त हो रहा है,''** आदि। स्वामीजी की भाषण शैली इतनी उत्तम थी तथा तर्क इतने प्रबल थे कि जनता पर तत्काल प्रभाव होता था।

उनके उपदेशों को सुन जोन्स महाशय ने गोमांस भक्षण के परित्याग का वहीं प्रण धारण कर लिया।

दूसरे भाग में सभा नियम आदि विस्तार से दिये गये हैं।

इस सभा के नियम

१. सब विश्व को विविध सुख पहुँचाना इस सभा का मुख्य उद्देश्य है, किसी की हानि करना प्रयोजन नहीं।

२. जो-जो पदार्थ सृष्टिक्रमानुकूल जिस-जिस प्रकार से अधिक उपकार में आवे, उस-उस से आप्त-अभिप्रायानुसार यथायोग्य सर्वहित सिद्ध करना इस सभा का परम पुरुषार्थ है।

३. जिस-जिस कर्म से बहुत हानि ओर थोड़ा लाभ हो, उस-उस को सभा कर्त्तव्य नहीं समझती।

४. जो-जो मनुष्य इस परमहितकारी कार्य में तन, मन और धन से प्रयत्न और सहायता करे, वह–वह इस सभा में प्रतिष्ठा के योग्य होवे।

५. जो कि यह कार्य सर्वहितकारी है, इसलिए यह सभा भूगोलस्थ मनुष्य जाति से सहायता की पूरी आशा रखती है।

६. जो-जो सभा देश-देशान्तर ओर द्वीप-द्वीपान्तर में परोपकार ही करना अभीष्ट रखती है, वह-वह सभा की सहायकारिणी समझी जाती है।

७. जो-जो जन राजनीति व प्रजा के अभीष्ट से विरुद्ध स्वार्थी, क्रोधी और अविद्यादि दोषों से प्रमत्त होकर राजा–प्रजा के लिए अनिष्ट कर्म करे, वह-वह सभा का सम्बन्ध न समझा जावे। **(क्रमशः)**

वैदिक ज्ञान-विज्ञान संस्थान, आगरा : एक परिचय

● आचार्य विश्वेन्द्रार्य
संस्थापक एवं संचालक : वैदिक ज्ञान विज्ञान संस्थान
पुरोहित आर्य समाज, एफ–१४, कमला नगर, आगरा
चलभाष : ९७१९१५४६१५

- क्या आप वेद तथा वैदिक ज्ञान–विज्ञान के प्रति निष्ठा, रुचि और जिज्ञासा रखते हैं तथा वेद व वैदिक सिद्धान्त, ज्ञान–विज्ञान को जानना और समझना चाहते हैं?
- क्या आप वेद, दर्शन, उपनिषद् आदि पवित्र ग्रन्थों का अध्ययन करना चाहते हैं?
- क्या आप वेद मन्त्रों के शुद्ध उच्चारण की विधि सीखना या समझना चाहते हैं?
- क्या आप ध्यान, प्राणायाम, योगासन, यौगिक क्रियाएँ या अन्य साधना उपयोगी विशिष्ट क्रियाओं का प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहते हैं?
- क्या आप संस्कृत संभाषण में रुचि रखते हैं और सीखने के इच्छुक हैं?
- क्या आप संस्कारों का ज्ञान, महत्व और प्रशिक्षण लेना चाहते हैं?
- क्या आप यज्ञ, भजन, प्रवचन या पारस्परिक चर्चाओं के आयोजन द्वारा बच्चों में संस्कार, सिद्धान्त व चरित्र की शिक्षा प्रदान करने के इच्छुक हैं?
- क्या आप अपनी सन्तानों को भगवान राम, कृष्ण आदि के समान उत्तम संस्कारों से युक्त बनाना चाहते हैं?
- क्या आप आदर्श माता, आदर्श पिता बनकर उत्तम चरित्र व उत्तम संस्कारों की आधारशिला को पुन: स्थापित करना चाहते हैं?
- क्या आप सनातन धर्म के यथार्थ स्वरूप को जानना, समझना चाहते हैं?
- क्या आप परमेश्वर के यथार्थ स्वरूप को जानना चाहते हैं?
- क्या आप चाहते हैं कि आपके बच्चे अध्यात्मिक, चरित्रवान, संस्कारवान, राष्ट्रवादी, पराक्रमशील, दूरदर्शी, मानवतावादी, विनयशील, दयालु, ईश–माता–पिता–राष्ट्र भक्त, शाकाहारी, निर्व्यसनी, स्वस्थ, समर्थ, सेवाभावी, स्वाध्यायशील बनें?
- कैसे पढ़ें? क्या पढ़ें? क्यों पढ़ें? समय का सदुपयोग, तनाव, अहंकार, क्रोध आदि से दूर रहने के वैदिक उपाय जानना चाहते हैं?
- क्या आप अशिक्षा, हिंसा, गोवध, मद्यपान, धूम्रपान, मांसाहार, तम्बाकू, गुटखा, पान मसाला भक्षण, अश्लीलता आदि के विरुद्ध जनचेतना जागृत करने के इच्छुक हैं?
- क्या आप अपने परिवारों या सार्वजनिक स्थलों पर यज्ञ, कथा, सत्संग, व्याख्यानों या प्रवचनों का जनकल्याणार्थ आयोजन करना चाहते हैं?
- क्या आप नैतिक शिक्षा, धर्म शिक्षा, चरित्र निर्माण, मानव निर्माण की कक्षाओं के संचालन का विचार रखते हैं?
- क्या आप वैदिक वाचनालय/पुस्तकालय के संचालन द्वारा संसार के सबसे बड़े और सर्वश्रेष्ठ विद्या रूपी धन को बाँटकर पुण्य प्राप्त करना चाहते हैं?
- क्या आप वैदिक साहित्य विक्रय और वितरण केन्द्र के संचालन की भावना रखते हैं?
- क्या आप गुरुकुल शिक्षा संवर्धन व सहायता का विचार रखते हैं?
- क्या आप गौ सेवा व संवर्धन की पवित्र भावना वाले हैं?
- क्या आप वैदिक साहित्य के प्रकाशन में सहायक बनना चाहते हैं?
- क्या आप विद्यालयों, कॉलेजों या बंदी सुधारगृहों आदि में सैद्धान्तिक, सुधारात्मक प्रवचनों, व्याख्यानमालाओं का आयोजन कराना चाहते हैं?
- क्या आप गुण–कर्म स्वभाव के अनुरूप वैदिक वर्ण व्यवस्था में विश्वास रखते हैं? कल्पित जातिवाद के समर्थक नहीं हैं?
- क्या आप शारीरिक, मानसिक, आत्मिक एवं पारिवारिक सुख–शान्ति, शक्ति–भक्ति, विद्या–बुद्धि, आयु–आरोग्यता प्राप्ति, धन–धान्य वृद्धि, व्यापार उन्नति हेतु यज्ञ, अनुष्ठान, कथा, प्रवचन, विभिन्न संस्कारों जैसे जातकर्म, नामकरण, मुण्डन, उपनयन (जनेऊ), विवाह आदि, वेद पारायण यज्ञ, जन्मदिवस, गृह प्रवेश, वैवाहिक वर्षगाँठ आदि सभी मंगल कार्यो को सत्य सनातन वैदिक पद्धति से सम्पन्न कराने के लिए सुयोग्य वैदिक विद्वानों की खोज में हैं?
- क्या आप आत्मिक उन्नति के प्रति सजग हैं और मानसिक शान्ति की खोज में हैं?
- क्या आप अपनी धार्मिक शंकाओं का समाधान चाहते हैं?
- क्या आप वर्तमान युग के साथ चलकर भी वेद के सन्देशों को स्वजीवन में धारण कर अपने स्वर्णिम गौरव पूर्ण अतीत से जुड़े रहना चाहते हैं?
- क्या आप सम्पूर्ण विश्व की सर्वप्राचीन, गौरवपूर्ण संस्कृति व सभ्यता को सुरक्षित रखना चाहते हैं?
- क्या आप वैदिक साधना पद्धति को जानना/समझना चाहते हैं?
- क्या आप स्वजीवन को वैदिक ऋषियों, महापुरुषों के आदर्शानुकूल ढालना चाहते हैं?
- क्या आप परिवार, समाज, राष्ट्र और सम्पूर्ण विश्व सुधार की भावना रखते हैं और हमारे प्रकल्पों में सहायक बनना चाहते हैं?

तो शीघ्र सम्पर्क करें

वैदिक ज्ञान–विज्ञान संस्थान

बी–४१, प्रतीक एन्क्लेव, कमला नगर, आगरा (उ.प्र.) २८२००४
दूरभाष : ९७१९१५४६१५, ९४१२८११११९,
९८३७३८०५३१, ९३१६६७०९८६
ई–मेल : vaidikgvs@gmail.com

विजयदशमी का सन्देश

दानव दल का नाश करो

● पं. नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य
आर्य सदन बहीन, जनपद पलवल (हरियाणा)
चलभाष : ९८१३८४५७७४

भारत के नर-नारी जागो, करो राष्ट्र उद्धार, वीर बलवान बनो तुम।
सच्चे देश भक्त बन जाओ, करो देश से प्यार, वीर बलवान बनो तुम।।
मोहनदास गाँधी अरु उसका, शिष्य जवाहरलाल सुनो।
यवनों के पक्के साथी थे, पापी किए, निहाल सुनो।।
पक्षपात करते थे, उनका गन्दा था व्यवहार, वीर बलवान बनो तुम।
सच्से देश भक्त बन जाओ, करो देश से प्यार, वीर बलवान बनो तुम।।१।।

धर्म ग्रन्थ यवनों का, जिसको, कहते यवन कुरान सुनो।
गैर मुसलमानों को काफिर, रहा कुरान बखान सुनो।।
गैर मुसलमानों पर नित करते हैं अत्याचार, वीर बलवान बनो तुम।
सच्चे देश भक्त बन जाओ, करो देश से प्यार, वीर बलवान बनो तुम।।२।।

नेता मतलब खोर देश के, कुर्सी से है प्यार उन्हें।
धर्म-कर्म का, भले-बुरे का, बिल्कुल नहीं विचार उन्हें।।
उग्रवाद-आतंकवाद का, करा रहे विस्तार, वीर बलवान बनो तुम।
सच्चे देश भक्त बन जाओ, करो देश से प्यार, वीर बलवान बनो तुम।।३।।

केवल एक तमन्ना है, मंत्री बनकर उत्पात करें।
दादा-गिरी रहे सलामत, हम मनमाने घात करें।।
लूट रहे हैं भारत को अब, रात-दिवस मक्कार, वीर बलवान बनो तुम।
सच्चे देश भक्त बन जाओ, करो देश से प्यार, वीर बलवान बनो तुम।।४।।

मद्य-मांस, पीते खाते हैं, जगदीश्वर को भूल गए।
सुरा, सुन्दरी के चक्कर में, जालिम हो मशगुल गए।।
छीना-झपटी मचा रहे हैं, जनता है बेजार, वीर बलवान बनो तुम।
सच्चे देश भक्त बन जाओ, करो देश से प्यार, वीर बलवान बनो तुम।।५।।

जगह-जगह मदिरा के ठेके, खुलवाए नेताओं ने।
जुआ, लाटरी के धन्धे अब, चलवाए नेताओं ने।।
अरबपति बन गए सैकड़ों, बढ़ा लिया व्यापार, वीर बलवान बनो तुम।
सच्चे देश भक्त बन जाओ, करो देश से प्यार, वीर बलवान बनो तुम।।६।।

बहन-बेटियों की इज्जत अब, गन्दे नेता लूट रहे।
धूर्त कुचाली मंत्री बनकर देखो, चाँदी कूट रहे।।
घोटाले करते हैं पापी, जिनकी नहीं सुमार, वीर बलवान बनो तुम।
सच्चे देश भक्त बन जाओ, करो देश से प्यार, वीर बलवान बनो तुम।।७।।

यवन और ईसाई अपनी, आबादी को बढ़ा रहे।
नेता मतलब खोर कुचाली देखो, सिर पर चढ़ा रहे।।
भारत पर कब्जा कर लेंगे, ली है दिल में धार, वीर बलवान बनो तुम।
सच्चे देश भक्त बन जाओ, करो देश से प्यार, वीर बलवान बनो तुम।।८।।

राम, कृष्ण से सत्पुरुषों को, निशिदिन दोष लगाते हैं।
ऋषियों को गाली देते हैं, तनिक नहीं शर्माते हैं।।
सत्य बात कहने वालों के लेते शीश उतार, वीर बलवान बनो तुम।
सच्चे देश भक्त बन जाओ, करो देश से प्यार, वीर बलवान बनो तुम।।९।।

एक-एक के दस-दस बच्चे, बढ़ा रहे हैं आबादी।
संविधान का खण्डन करते, इन्हें पूर्ण है आजादी।।
सड़कों पर झगड़ा करते हैं, झगड़ालू खूंखार, वीर बलवान बनो तुम।
सच्चे देश भक्त बन जाओ, करो देश से प्यार, वीर बलवान बनो तुम।।१०।।

एक मुसलमां, चार औरतों से कर लेता है शादी।
अबलाओं के जीवन की, खुलकर करते हैं बर्बादी।।
आँख मूँद कर देख रही है, बुरे काम सरकार, वीर बलवान बनो तुम।
सच्चे देश भक्त बन जाओ, करो देश से प्यार, वीर बलवान बनो तुम।।११।।

फल-मेवाएँ, अन्न सब्जियाँ, आर्यावर्त्त की खाते हैं।
पाकिस्तान, अरब की महिमा के गाने नित गाते हैं।।
सच कहता हूँ भारत पर ये, बहुत बड़ा है भार, वीर बलवान बनो तुम।
सच्चे देश भक्त बन जाओ, करो देश से प्यार, वीर बलवान बनो तुम।।१२।।

तरह-तरह की सुविधाएँ, नित देती हैं सरकार इन्हें।
किसी तरह अपने बन जाएँ, देती पूरा प्यार इन्हें।।
फिर भी उलटे चलते हैं ये, नित करते हैं रार, वीर बलवान बनो तुम।
सच्चे देश भक्त बन जाओ, करो देश से प्यार, वीर बलवान बनो तुम।।१३।।

मोहनदास गाँधी, नेहरू ने, भारी गलती खाई थी।
इन्हें यहाँ रखकर भारत की, सचमुच नाव डुबाई थी।।
फैला रहे अशान्ति देश में, महानीच गद्दार, वीर बलवान बनो तुम।
सच्चे देश भक्त बन जाओ, करो देश से प्यार, वीर बलवान बनो तुम।।१४।।

अरब देश अरु अमरीका, इंग्लैण्ड इन्हें उकसाते हैं।
पाकिस्तान, चीन मिलकर दोनों इनको भड़काते हैं।।
भारत को चाह रहे मिटाना, इस पर करो विचार, वीर बलवान बनो तुम।
सच्चे देश भक्त बन जाओ, करो देश से प्यार, वीर बलवान बनो तुम।।१५।।

भारत के नेताओ! कुछ तो दिल में अरे! विचार करो।।
अहंकार दो छोड़ साथियों! भारत माँ से प्यार करो।।
मानवता लो धार, करो तुम भारत का उद्धार, वीर बलवान बनो तुम।
सच्चे देश भक्त बन जाओ, करो देश से प्यार, वीर बलवान बनो तुम।।१६।।

बनो वीर बलवान बहादुर, दानव दल का नाश करो।
महत्व विजयी दशमी का समझो, सारे जग के कष्ट हरो।।
गुण गाएगा मीत तुम्हारे, फिर सारा संसार, वीर बलवान बनो तुम।
सच्चे देश भक्त बन जाओ, करो देश से प्यार, वीर बलवान बनो तुम।।१७।।

याद रखो तुम देश–धर्म से, जिस मानव को प्यार नहीं।
देव भूमि भारत में उसको, रहने का अधिकार नहीं।।
'नन्दलाल निर्भय' होकर के, करो वेद प्रचार, वीर बलवान बनो तुम।
सच्चे देश भक्त बन जाओ, करो देश से प्यार, वीर बलवान बनो तुम।।१८।।

वर्तमान में युवाओं की भूमिका

● ओमदीप आर्य
गोविन्दगढ़, अलवर (राज.)
चलभाष : ९६१०३०२७०१, ७७९२०१८६००

चूंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तो श्रेष्ठ समाज का निर्माण उसका दायित्व ही नहीं बल्कि अधिकार भी है और श्रेष्ठ समाज अपना भविष्य युवाओं में महसूस करता है लेकिन समस्या यह है कि युवा अपनी भूमिका में समाज का सहयोग महसूस ही नहीं कर रहा है इसके पीछे बहुत से कारण हैं!

१: समय का अभाव : ना तो समाज के बुजुर्ग लोगों के पास समय है और ना ही समाज के युवाओं के पास, जिससे ना तो एक दूसरे के विचारों आदान-प्रदान हो रहा है ना ही उनके विचारों को जानने का अवसर मिल रहा है।

२: पैसे की चकाचौंध: पैसे की चकाचौंध में आज का युवा अपने समाज को भूलकर स्वयं में ही सिमटता जा रहा है। उसे सिर्फ पैसे से ही मतलब है,समाज से नहीं।

३: सामाजिक संस्कारों का अभाव: जब वर्तमान युवा को सामाजिक संस्कार विरासत में नहीं मिलेंगे तो वह समाज में अपनी भूमिका नहीं निभा सकता। उदाहरण के तौर पर आज के अधिकांश युवाओं को अपने गोत्रों के बारे में नहीं पता, यह सामाजिक संस्कारों के अभाव को ही दर्शाता है।

४:माहौल का सामाजिक से आर्थिक हो जाना: वर्तमान में जो माहौल समाज में दिखाई देता है,इसमें सामाजिकता से ज्यादा आर्थिकता को महत्व दिया जा रहा है, जिससे युवा समाज से स्वयं को उपेक्षित महसूस करते हुए दूर होता जा रहा है।

५:आपसी तालमेल की कमी: समाज में आज जो बुजुर्ग दिखाई देते हैं वे अपने युवाओं से ना तो अपेक्षा रखते हैं और ना ही यह महसूस करते हैं कि यह हमारा भविष्य हो सकते हैं क्योंकि दोनों के विचारों में दिन रात का अंतर है और हो भी क्यों ना क्योंकि दोनों की उम्र में करीब २५ से ३५ वर्ष का अंतर स्पष्ट करता है कि दोनों का तालमेल सहज ही नहीं बैठ सकता लेकिन इसके समाधान भी हैं!

१: युवा बुजुर्गों को,और बुजुर्ग युवाओं को दे मान सम्मान: आज के युवा और बुजुर्ग,पैसे से ज्यादा मान-सम्मान के भूखे हैं इसलिए युवाओं को समाज के वरिष्ठ लोगों के लिए एवं वरिष्ठ लोगों को समाज के युवाओं के लिए मर्यादित मान-सम्मान देना ही होगा।

२: आपस में विचारों का आदान-प्रदान हो: समाज के बुजुर्ग लोगों को युवाओं के विचारों को समझना होगा और युवा भी बुजुर्गों के विचारों को समझें और उन्हें महसूस करें।

३:भागती दौड़ती जिंदगी में से समाज के लिए समय निकालें युवा: इस भागती-दौड़ती जिंदगी में से युवाओं को कुछ समय समाज के लिए भी निकालना चाहिए जिससे समाज को समझा जा सके।

४:बुजुर्ग दें सामाजिक संस्कार: समाज के युवाओं को क्षीण हो रहे सामाजिक संस्कार देने का कार्य अनुभवी बुजुर्गों को करना ही होगा।

५: पैसे की जगह अनुभव और कार्यशैली को प्रधानता देनी होगी: हम सिर्फ पैसे तक ही सीमित होते जा रहे हैं,जबकि हमें इसकी जगह अनुभव और कार्यशैली को प्रमुखता देनी होगी। नव क्रांति को स्वीकार करना होगा।

अत: संक्षेप में कहें तो समाज में युवाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए समाज के वरिष्ठ एवं बुजुर्ग लोगों को समझदारी दिखाते हुए नव विचारों को समझना होगा और उन्हें महत्व देना होगा जबकि युवाओं को भी अपनी भूमिका समझते हुए समाज के वरिष्ठ लोगों के अनुभव को महत्व देना होगा और आपस में सामंजस्य बना कर समाज में अपनी भूमिका स्थापित करनी ही होगी ताकि समाज को श्रेष्ठतम और सर्वोत्तम बनाया जा सके।

कैसे चुकाऊँ

तेरे उपकारों का कर्ज मैं कैसे चुकाऊँ न जानूँ
तेरे उपहारों का फर्ज मैं कैसे निभाऊँ न जानूँ
सूरज, चाँद, सितारों से नभ का तूने शृंगार किया
टिमटिमाते दीपों की माला का अनुपम उपहार दिया
ज्योतिपुंज हो ज्योतिर्मय भी इनमें ज्योति तुम्हारी है
आदिकाल से प्रकाश है देते अद्भुत शक्ति तुम्हारी है
सृष्टि के रचयिता तूने ब्रह्माण्ड का कैसे निर्माण किया
अदृश्य में रहते प्रभु तूने दृश्यमान यह विश्व किया
पृथ्वी पर सागर लहराकर लहरों का उपहार दिया
मेघा बरसाकर नवजीवन दे धरती का उपकार किया
धरा पे नदियाँ बहा के तूने विलक्षण उपकार किया
खेतों का सींचन करती ये अन्नों का उपहार दिया
नदियों, नालों, टीलों झीलों ने तेरे विराट् रूप को अपनाया
तेरे उपकारों से उपकृत हो प्रभु तुझको अपना शीश नवाया
दिव्य ज्ञान से वेद रचा सृष्टि का उपकार किया
मनुर्भव का मन्त्र सिखाकर मानव को दुर्लभ उपहार दिया।
नर-तन रचकर तूने मानव पर कितना उपकार किया
पंच तत्व से गढ़ा ये पुतला कितना बड़ा उपहार दिया
जड़ में चेतन को बैठाकर अनगिनत उपकार किया
भोग्य पदार्थों को रच तूने दिव्य उपहार दिया
ऋषि-मुनियों को सत्य ज्ञान दे विलक्षण उपकार किया
योग साधना द्वारा साक्षात् ब्रह्म मिलन
का उपहार दिया।

● सुश्री आदर्श आर्या
निकट आर्य समाज साकेत, मेरठ (उ.प्र.)
चलभाष : ९५५७८७३६३३

यह दुनिया कैसी है? इस दुनिया में रहना किस तरह?

● मोहनलाल दशौरा 'आर्य'
नारायणगढ़, जनपद : मन्दसौर (म.प्र.)
चलभाष : ९५७५७९८४१२

प्रकृति की गोद में, नदी किनारे एक साधारण आश्रम में एक सिद्ध गुरु व उनका शिष्य रहता था। वे नित्य नियम से गो पालन व ईश्वर भक्ति करते थे। अपना व समाज कल्याण लक्ष्य था। शिष्य अपने ज्ञान की वृद्धि के लिए गुरुजी से कई प्रश्न पूछता था। गुरुजी यथा ज्ञान समाधान करते थे।

एक दिन **यह दुनिया कैसी है?** प्रश्न शिष्य ने पूछा तो गुरुजी ने कहा– तुम्हें कैसी दिखती है?

शिष्य– मुझे बड़ी विचित्र लगती है। पशु–पक्षी व अन्य भोग योनि की बात छोड़ो– मनुष्य जो श्रेष्ठ प्राणी, बुद्धिजीवी व स्वतन्त्र है उसके कार्य व रहन–सहन बड़ा विचित्र है।

गुरुजी– जरा विस्तार से बताओ।

शिष्य– धरती पर कई प्रकार के लोग हैं। सन्त, साधु, किसान, व्यापारी, मजदूर, सिपाही, नेता, नायक, विद्वान, प्रोफेसर, डॉक्टर, इंजीनियर खास व आम। उनके कार्यकलाप भी विचित्र हैं।

गुरु– तू कहना क्या चाहता है? साफ–साफ बता।

शिष्य– सन्त साधु विभिन्न भगवा, लाल, सफेद वेशभूषा में, दाढ़ी, जटा, चोटी, तिलक, कंठी, माला, भभूत, कमण्डल धारी हजारों की तादाद में। समाज कल्याण कम व स्वयं का कल्याण करने में लगे हैं। पण्डे पुजारी, कथा वाचक, उपदेशक भी अपना–अपना राग–स्वार्थ व मस्ती।

किसान गृहस्थ सबका पेट पालता है परन्तु मौसम व महँगाई की मार से पिछड़ जाता है। पेट व पेटियाँ भर रहे हैं व्यापारी। समय का फायदा उठाकर अधिक लाभ कमाता है। मजदूर–कर्मचारी भी वेतन सुविधाएँ सब चाहता है परन्तु काम ईमानदारी से नहीं करे तो क्या करे। ऊपर से यदि भ्रष्टाचार करे तो कैसे रुके।

नेता, नायक, मन्त्री सभी अधिकारी देशभक्ति की शपथ लेते हैं। उस अनुसार सेवा कार्य करते नहीं दिखते। विद्वान्, प्रोफेसर, डॉक्टर, इंजीनियर भी जितना लेते हैं उतना काम नहीं करते या अधिक लेने का प्रयास। हड़तालें करते हैं।

इसी तरह तीर्थ, पर्यटन स्थल, धर्म स्थल पर भी आस्था कम व कमाई रोजी–रोटी पर अधिक ध्यान दिया जाता है। आस्था व दर्शन में प्रदर्शन और भावनात्मक दोहन शोषण होता है। धर्म के नाम पर आडम्बर, पाखण्ड व अन्धविश्वास देखा जाता है।

गुरुजी– आखिर तू कहना क्या चाहता है?

शिष्य– दुनिया में रहने का सही तरीका क्या है मैं यह जानना चाहता हूँ।

गुरुजी– कुछ दिन मेरे साथ रहकर देख, समझ में आ जाएगा।

एक दिन भक्त गुरुजी के लिए बड़ी श्रद्धा से मीठे फल का टोकरा लाया कि गुरु सेवा से आशीर्वाद मिलेंगे। गुरुजी फलों का टोकरा लेकर कुटिया में चले गए व भक्त से कुछ न कहा। भक्त कुछ देर बैठा रहा। निराश होकर चला गया। चेले ने गुरुजी से कहा– यह आपने क्या किया। बड़ी श्रद्धा से मीठे फल लाया व आपने उससे बात तक न की।

गुरुजी ने कहा– देखते जाओ, दुनिया में रहने का यह भी एक तरीका है।

दूसरे दिन एक भक्त ताजे मीठे फलों का टोकरा लाया। गुरुजी के सामने भेंट किया। गुरुजी ने सारे फल उस भक्त के सामने नदी में फेंक दिये व भक्त को धन्यवाद दिया। हालचाल पूछे आशीर्वाद दिया। भक्त आश्चर्यचकित हो गुरुजी के सनकीपने से परेशान हो चला गया।

चेले ने कहा– गुरुजी! आपने यह क्या किया। फल फेंक दिये। नहीं खाना थे तो वापस कर देते। उसका दिल क्यों दुखाया। गुरुजी बोले– देखता जा। यह भी संसार में रहने का ढंग है।

तीसरे दिन फिर एक भक्त ढेर सारे मीठे फल लाया, भेंट किये। गुरुजी ने उपस्थित सभी जनों को मधुर स्वादिष्ट फल बाँटे। प्रशंसा की। भक्त के हाल पूछे। आशीर्वाद धन्यवाद देकर प्रेम से विदा किया।

चेले ने गुरुजी के चरणों में सिर झुकाकर नमन किया व कहा– गुरुजी! आपका आज का बर्ताव सही रहा।

गुरुजी बोले– बेटा तुमने तीन दिन में मेरा व्यवहार तीन तरह का देखा व तीसरा पसन्द आया। ध्यान से सुन– संसार में रहने का यही तरीका ठीक है। परन्तु संसार के लोग पहला व दूसरा तरीका ही अधिक काम में लेते हैं। तीसरा तो शायद ही कोई।

शिष्य– मैं समझा नहीं गुरुजी, स्पष्ट कीजिये।

गुरुजी– पहले दिन मैंने भक्त से फल ले लिये व कुटिया में चला गया। समझ दुनिया में ऐसे ५० प्रतिशत लोग हैं जो किसी का एहसान नहीं मानते। ईश्वर ने मस्त रचना, प्रकृति, अन्न, फल, प्रकाश, हवा, जल आदि पदार्थ मनुष्य को बिल्कुल मुफ्त में दिये। कितने लोग उसका धन्यवाद गुणगान करते, एहसान मानते, अलबत्ता उसकी सत्ता को मानते ही नहीं, नास्तिक हैं।

दूसरे दिन भक्त फल लाया। मैंने उठाकर नदी में फेंक दिये। ऐसे भी लोग संसार में बहुत हैं जो ईश्वर प्रदत्त वस्तुओं का अतिदोहन, दुरुपयोग, बलात्कार करते हैं। अस्तेय, अपरिग्रह की धज्जियाँ उड़ाते हैं। चोरी, ठगी, मिलावट, भ्रष्टाचार, गबन, घोटाला कर अकूत सम्पत्ति बना लेते हैं। दूसरों का हक मारकर दुरुपयोग, परिग्रह करके दुःख देते हैं।

तीसरा रहने का ढंग एकदम सही है। धन्यवाद दाता का और बाँटकर खाओ, त्याग के साथ भोग। अब तुमने जो बताए विभिन्न श्रेणी के लोग तो सुन–

१. सन्तों साधुओं का काम धर्म की रक्षा व समाज का मार्ग दर्शन, समाज सेवा, मुफ्त का खाना व प्रदर्शन भार है।

२. पण्डे पुजारी, उपदेशक, कथावाचक पेटी व पेट भरते हैं। व अन्ध आस्था फैलाकर शोषण करते हैं तो पाप का रास्ता।

३. तीर्थ, धर्मस्थल आस्था के केन्द्र को दुकानदारी, व्यापार व आर्थिक शोषण में न घसीटें तो उत्तम।

४. नेता–नायक, मन्त्री–सन्त्री पद प्रतिष्ठा व स्वार्थ की राजनीति से ऊपर उठकर जन कल्याणकारी कार्य करें तो उचित।

५. अफसर, डॉक्टर, इंजीनियर, कर्मचारी अपने को प्रदत्त वेतन भत्ते, सुविधाओं की तुलना में दस–बीस प्रतिशत काम भी न करें तो वे देशद्रोही, भ्रष्टाचार महापाप।

६. मन्दिरों, मूर्तियों, धर्मस्थलों की सोने–चाँदी से महिमा मण्डित करने, भव्य निर्माण करने व देवी–देवता को अमीर बनाने के बजाय रचनात्मक कार्यों में धन का सदुपयोग हो।

यथा– पर्यावरण रक्षा, सड़क, गार्डन, निरोग धाम, संस्कार केन्द्र, औषधालय, प्रधान विश्व रचि राखा। कर्म यानि सत्कर्म, सेवा परोपकार, त्याग के साथ भोग, सबका विकास, विश्वास, साथ व हर वर्ग का नैतिक स्तर उत्तम रहे तो समझो राम राज, अश्वपति राज, सुराज, लोकतन्त्र कायम।

सत्यमेव जयते, वसुधैव कुटुम्बकम् व सर्वे भवन्तु सुखिनः की भावना (आध्यात्मिक पहलु) उन्नत रहे। चिन्तन व बदलाव अपेक्षित।

मेरे देश की कन्या हो महान्

● **सुन्दरलाल प्रहलाद चौधरी**
अधीक्षक : पोस्ट मैट्रिक अनुसूचित जाति बालक छात्रावास
बुरहानपुर (म.प्र.), चलभाष : ९९२६७६११४३

मात–पिता की लाड़ली, कन्या घर की शोभा है।
बेटे से बेटी ज्यादा आस्थावान होती है।।
बेटे से बेटी कम आदर, अभाव पाकर भी खुश रहती है।
बेटी को पराया धन समझ कर परिजन उदास रहते हैं।।
बेटे से ज्यादा आज्ञाकारी मर्यादा में बेटी रहती है।
भाई की प्रसन्नता हित माँ–बाप से प्रताड़ना सहती है।।
बेटी अपने दायित्व में पूरी घर समाज मर्यादा में जीती है।
माँ–बाप की हर कठिनाई में सीमा पर सैनिक सम सजग खड़ी है।।
वर्तमान में देखा शिक्षा में बेटी, बेटों से भी आगे है।
माता–पिता परिवार समाज, बेटी बिन अधूरा है।।
भौतिक सुख, पश्चिम सभ्यता में पड़कर भ्रूण हत्या करते हैं।
माँ की कोख में ही निर्मम मार दिया करते हैं।।
बेटी के अभाव में, समाज सन्तुलन आज ठीक नहीं है।
हर वर्ग समाज में, बेटी की कमी से संतुलन बिगड़ा है।।
धन्य है सावित्री बाई फूले जिसने देवकन्याएँ पढ़ाई हैं।
महर्षि दयानन्द सरस्वती ने व राजा राममोहन राय ने सती प्रथा बंद कराई है।।
आज बेटियाँ सीता, सावित्री, शकुन्तला, अनुसईया जैसी बन सकती है।
लक्ष्मीबाई, जीजाबाई, मीरा, शबरी, दुर्गावती, पद्मिनी जैसी प्रतिभा है।।
भारत देश को माता कहते, विश्व में जगतगुरु पताका हिन्द ने लहराई है।
आज हर क्षेत्र में बेटी कम नहीं, खेल–सेना में भी अच्छी भूमिका निभाई है।।
भारत में कन्याओं को नवदुर्गा उत्सव पर पूजा जाता है।
जिस सदन में नारियाँ सदाचारी खुश, वहाँ देवता भी विचरण करते हैं।।
वृन्दा, गार्गी, मैत्री, मदालसा इनके सतीत्व धरा पर प्रधान है।
कौशल्या, द्रौपदी, कुन्ती, अहिल्या, तारा, मन्दोदरी, सुनीति की विशेषता है।।
हर कन्या कुँवारी नारी, मेहतारी जगत में बनती है।
उसके चार रूप बेटी, पत्नी, माँ, भगिनी कहाती है।।
वो आदर्श नारी बने उसकी प्रतिभा परिजनों को निखारना है।
सन्त, शहीद, समाज सुधारकों को, जन्म देने वाली ही नारी है।।
राम, कृष्ण, ध्रुव, प्रहलाद, सप्त ऋषि, चौदह मनु नारी से जन्में।
नारी की गरिमा पुरुषों से कम नहीं, माता के बाद पिता गिना जाता है।।
भाई के पहले बहन, पुरुष के पहले नारी को दर्जा मिला है।
आओ हम सब परिवार समाज, राष्ट्र में बेटी को बचाना है।।
घर परिवार की धुरी है नारी, उसकी शालीनता पर दो कुलों को सँवारती है।
माँ, बहन, पत्नी दिव्य बने अभिमन्यु, अर्जुन, भगत, बिस्मिल बनाती है।।
नारी का सम्मान करें, नारी जागृति, विश्व की आवश्यकता जरूरी है।
नारी की गौरव गरिमा, सरस्वती, लक्ष्मी, दुर्गा, काली सम भारी है।।
हमेशा कन्याओं को योग्य शिक्षा, कन्या कौशल शिविर लगाना है।
मानवीय नैतिक गुणों वैदिक सनातन आर्य संस्कृति अपनाना है।।
हर घर देव परिवार बने, सभ्य समाज, राम राज्य बनाना है।
हर माता बहनों को संरक्षण देकर, कलयुग के कंस रावण से बचाना है।।
नारी से प्रेरणा पा, सन्त तुलसीदास व कालिदास महान् हुए हैं।
देवासुर संग्राम में कैकेयी ने, राजा दशरथ को साथ दिया है।।
नरकासुर के वध समय, कृष्ण के साथ सत्यभामा का रोल रहा है।
'सुन्दर' नारी की महिमा का गान, धर्म–शास्त्रों में बखान रहा है।।

मूल रचनाकार : स्व. श्रीयुत मुंशी दरबारीलाल 'कविरत्न'

हिन्दी की वर्ण मंजु मञ्जरी

गतांक पृष्ठ ३४ से आगे

संकलन एवं सम्पादन
● **चौ. बदनसिंह 'पूर्व विधायक'**
१३/१०८, चारबाग, शाहगंज आगरा (उ.प्र.)
चलभाष : ९९२७४१६२००

व्यंजन वर्ण : (३३) 'त्र'

छप्पय: **त्राणक त्रिदेव त्रिय लोकप न त्रस्तकारी,**
त्रिभुवनपति त्रास त्रासिन त्रिलोकपाल।
त्रिपुर दहन त्रिपुरान्तक सु त्रिपुरारि,
त्रिचख त्रिशूलपाणि त्रोषक त्रिपुण्ड भाल।।
त्रातिय त्रिलोकपति त्रासहि त्रिताप त्रोर,
त्रयम्बक त्रिलोचन त्रिविधि दर्शीत्रिकाल
त्रोषिय त्रिदोषतोरि त्राहि त्राहि त्रयी चक्षु
तुमही त्रि विक्रम स्वरूप दरबारी लाल।।

अर्थ : 'त्र' – 'त्' और 'र' के प्रयोग से बना हुआ संयुक्त अक्षर वर्ण है। कुछ शब्दों के अन्त में प्रत्यय के रूप में लगकर यह 'एक स्थान पर' (किया या लाया हुआ आदि) का अर्थ देता है, जैसे एकत्र–एकत्र तीनों लोकों–स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल के रक्षक ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीन देवता हैं न कि दूसरे लोगों को पीड़ित करने वाले, पापी लोग। डर, भय पहुँचाने और सताने वाले लोगों से सभी दु:खी रहते हैं। ऐसे भयानक पापी लोग किसी का पालन नहीं कर सकते। तीनों लोकों के पालन करने वाले तो पूर्व वर्णित देव ही हैं। असुरों के तीनों लोकों के नाशक और दमनकर्ता तो शिवजी (महादेव जी) हैं। वे तीन नेत्र और जाँच करने की क्षमता रखते हैं। दीन–दु:खियों को बचाने और दुष्ट–दानवों का दमन करने का काम अपने तीन फलों से युक्त त्रिशूल से करते हैं। वे त्रिविध दर्शी होने के नाते मानव व्याप्त तीनों दोषों– वात, पित्त और कफ का निराकरण कर दूर करते हैं और दैविक, दैहिक और भौतिक तीनों तापों को तीनों नेत्रों से निरखकर निराकरण कर मानव को उनसे मुक्त कराते हैं। उनसे छुटकारा दिलाते हैं। रोग व ताप पीड़ित लोगों को 'बचाओ–बचाओ' की पुकार प्रार्थना सुनकर उन्हें शीघ्र दौड़कर उन्हें बचाते हैं। उन्हें रोग–ताप से मुक्त करते हैं। उनसे उनकी शीघ्र छुट्टी दिलाते हैं। कवि ब्रह्मा, विष्णु और महेश को सृष्टि जनक, सृष्टि पालक, दुष्ट दमन कर्त्ता और लोक रक्षक मानते हैं। ■

पाप से मुक्ति के नाम पर लूट

भारत में सद्गुरु के नाम पर ठगों का टिड्डी दल

● **डॉ. गंगाशरण आर्य, 'साहित्य सुमन'**
चरित्र निर्माण मण्डल, सैनी मोहल्ला,
ग्राम- शाहबाद, मोहम्मदपुर, नई दिल्ली,
चलभाष : ९८७१६४४१९५

गतांक पृष्ठ १० से आगे

आर्य विद्वानों के अनुसार सच्चे गुरु के लक्षण इस प्रकार बताए गए हैं :–

१. वेदवेत्ता हो व वेद और वेदानुकूल आर्ष ग्रन्थों का पठन–पाठन करने–करवाने वाला विद्वान् हो।
२. ब्रह्मनिष्ठ अर्थात् ईश्वर के प्रति आस्थावान हो।
३. ब्रह्मविद्या अर्थात् वेदविद्या का उपदेशक हो।
४. सत्य को मानने वाला, सत्य कहने वाला और सत्कर्म करने वाला हो।
५. वित्तैषणा, पुत्रैषणा और लोकैषणा से बंधा न हो।
६. ईश्वर, जीव और प्रकृति को पृथक्–पृथक् मानने वाला त्रैतवाद का ज्ञाता हो।
७. ईश्वर के स्थान पर मनुष्य पूजा और जड़ पूजा अर्थात् मूर्तिपूजा आदि का घोर विरोधी हो।
८. ईश्वर प्राप्ति के साधन यम–नियम आदि **'अष्टांग योग'** का अनुष्ठान करने वाला हो।
९. सकाम कर्मों को छोड़ निष्काम कर्म करने वाला हो।
१०. अपनी उन्नति के समान प्राणीमात्र की उन्नति चाहने वाला एवं पक्षपात रहित व न्यायकारी हो।
११. मद्य–मांस आदि अभक्ष्य पदार्थों का सेवन करने वाला न हो अर्थात् मांसखोर व नशेड़ी न हो।
१२. मोक्ष की प्राप्ति करने–करवाने को मानव जीवन का मुख्य लक्ष्य मानने वाला हो।

ये तो थे सच्चे गुरु के लक्षण, लेकिन इनके साथ–साथ हमें कुछ अन्य व्यावहारिक जानकारी भी गुरु के विषय में अवश्य होनी चाहिए जैसे कि इनके डेरों, मठों, दरगाहों की गतिविधियों में पारदर्शिता रहे, आय–व्यय के ब्यौरे में शुचिता रहे और अधिकांश आय–व्यय सच्ची वेद विद्या के प्रचार–प्रसार में हो, उनमें शालीनता और आध्यात्मिक वृत्ति जागृत हो, उनका आधार व्यक्तिपरक न होकर समाज सापेक्ष हो। सरकार और प्रशासन को भी इन सभी दिशाओं में कदम उठाते हुए कुछ नियम व कायदे–कानून बनाने चाहिए जिससे धर्म, अध्यात्म, साधना, सात्विकता, सत्संग, स्वाध्याय, संस्कार और सभ्यता–संस्कृति के परम्परागत मानदण्ड धराशायी न हों, जीवन मूल्यों का ह्रास न हो और मुक्ति व स्वर्ग के लालच में पड़े आस्तिक लोगों का धर्मभीरुता, अज्ञानता, अन्धश्रद्धा और भेड़चाल के कारण शोषण न हो।

आइये! इन पाखण्डियों, लुटेरों, जहाँ तक मैं जानता हूँ दो ही लोगों के पास हथियार होते हैं या तो देश की रक्षा करने वालों के पास या देश को लूटने वाले गद्दारों के पास, इसलिए मैं तो कहूँगा इन गद्दारों और कालाबाजारी करने वाले सौदागरों को सबक सिखाने के लिए एकजुट हो जाएँ ताकि भविष्य में कोई भी धूर्त हमें व हमारी पीढ़ियों तक को लूटने का विचार तक भी अपने मन में न ला सके, इसके लिए हमें जागरूक होना ही पड़ेगा। हमें यह समझना होगा कि हमारे द्वारा किये गये जब अच्छे कर्मों का फल हम भोगने के लिए तैयार रहते हैं तो पहली बात तो हमें बुरे कर्म करने ही नहीं चाहिये और यदि अनजाने में हमसे हो गए हैं तो उनका अच्छा व बुरा जैसा भी फलहो, वह भी हमें भुगतने के लिए स्वयं को तैयार रखना चाहिए क्योंकि संसार का कोई भी धर्मगुरु हमें हमारे बुरे कर्मों के फल से बचा नहीं सकता। हाँ, अपनी प्रेरणा से बुरे कर्म करने से तो बचा जा सकता है, अच्छे कर्म करने की प्रेरणा देकर, लेकिन जो कोई भी हमें दुष्कर्मों के फल से बचाने अर्थात् पाप से मुक्ति दिलाने का दावा करे तो वह वास्तव में गुरु हो ही नहीं सकता, वह दुनिया का सबसे बड़ा धोखेबाज है। वह अवसरवादी जाल में उन लोगों को फँसाना जानता है जो **'आँख के अन्धे गाँठ के पूरे'** हैं। ऐसे गुरु का नमस्ते आदि से भी सम्मान नहीं करना चाहिये। ईश्वर तो ऐसा न्यायकारी है जो सुई की नोंक से भी न कम, न ज्यादा किसी को देता है। आर्य समाज के संस्थापक युग पुरुष महर्षि दयानन्द के गुरु **'व्याकरण के सूर्य'** प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द दण्डी ने दयानन्द को ईश्वर और ईश्वरीय ज्ञान **'वेद'** से जोड़ा न कि अपना पिछलग्गू बनाया और गुरु दक्षिणा में उनसे भारत माँ को अविद्या और अन्धकार के गर्त से निकालने के लिए उनका जीवन माँगा था न कि अपने लिए धन–दौलत। तभी तो सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण हेतु महर्षि ने १७ बार जहर के प्याले पीकर भी उफ् तक नहीं किया। ऐसे गुरुओं के प्रति भारत को ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व को नतमस्तक होना चाहिये। हमारा दुर्भाग्य है कि कभी सम्पूर्ण विश्व का गुरु कहलाने वाली भारत माँ की गोद आज ऐसे ऋषि–महर्षियों से सूनी होती जा रही है।

अन्त में इतना ही कहूँगा कि जिस दिन आप उस परम गुरु परमपिता परमात्मा को भली प्रकार से जान लेंगे, उस दिन इन सांसारिक सद्गुरुओं (जो अपने आपको परम पूजनीय कहलवाते हैं) के बहकावे में नहीं आएँगे, अर्थात् उनके पिछलग्गू नहीं बनेंगे। वस्तुतः परम शब्द तो परमात्मा के लिए होता है। जैसे परमपिता परमेश्वर मनुष्यों के लिए नहीं।

नारी का मान और अपमान

● देशराज आर्य
पूर्व प्राचार्य, रेवाड़ी (हरियाणा)
चलभाष : ९४१६३३७६०९

पचास वर्ष पूर्व नहीं कहीं भ्रूण हत्या का नाम था।
तब घरों में आठ–दस बच्चे पाया जाना आम था।।
कई परिवारों में दर्जन से अधिक भी बच्चे होते थे,
ज्यादा या सभी लड़कियाँ होने पर भी खुश होते थे।
सन्तान का होना ईश्वर का वरदान समझते थे,
लड़का या लड़की में तब कोई फर्क नहीं समझते थे।
भगवान भरोसे ही तब सबका चलता काम था, पचास वर्ष...।।१।।
सतयुग में भी नारी आदरणीया समझी जाती थी,
त्रेता में भी हर नारी सीता कहलाई जाती थी।
महाभारत काल में भी नारी सम्मान पाती थी,
यज्ञ कर्म व रण क्षेत्र में बराबर का हक पाती थी।
मनु महाराज ने भी नारी को दिया बड़ा सम्मान था, पचास वर्ष...।।२।।
महाभारत के बाद ही समाज में गिरावट आई,
वैदिक विद्या लुप्त होने पर सर्वत्र बुराई छाई।
परस्पर फूट का लाभ उठा विदेशी जातियाँ यहाँ आई,
सनातन मर्यादा नष्ट हुई, शत्रु बन गए भाई–भाई।
महाभारत तक दुनिया में हमारा ऊँचा नाम था, पचास वर्ष...।।३।।
स्वेच्छाचारी राजाओं ने नारी का अपमान किया,
विलासिता की वस्तु समझ रनिवास में स्थान दिया।
एक नहीं, दो नहीं, अनेकों नारियों का नुकसान किया,
नहीं शिक्षा दी, नहीं हक दिया, नहीं आदर मान दिया।
तब तो लड़की का बाप होना ही बदनाम था, पचास वर्ष...।।४।।
शाहजहाँ ने निज बेटी की शादी पर रोक लगाई थी,
उनके खानदान में किसी जमाई ने की लड़ाई थी।
कुल की आन–बान पर यह नई समस्या आई थी,
बेटी को हक नहीं देना तब मुगलों ने रीत चलाई थी।
राजा के पीछे चलना ही तब प्रजा का काम था, पचास वर्ष...।।५।।
आजादी के बाद समाज में भारी परिवर्तन आया,
पिता की जायदाद में बेटी को हकदार बनाया।
साथ ही समाज में दहेज दानव ने मुँह फैलाया,
वैदिक युग के नैतिक मूल्यों का जड़ से हुआ सफाया।
अब तो स्वप्न सा लगता है कभी बेटी का ऊँचा नाम था, पचास वर्ष...।।६।।
आज यह आशंका है क्या बेटी अपनी लाज बचा पाएगी,
स्कूल, कॉलेज व दफ्तर से क्या सकुशल लौट पाएगी,
कदम–कदम पर हैवान बैठे हैं, स्वयं को कैसे बचाएगी,
नैतिक मूल्यहीन समाज में रहकर कैसे जी पाएगी।
पहले तो कुछ कुख्यात दरिन्दों का ही यह दुष्काम था, पचास वर्ष...।।७।।
समाज में नैतिकता का अब निकल चुका दिवाला,
हवस का शिकार बन रही वृद्धा से लेकर बाला।
कहीं पहचान का डर हुआ तो जान से ही मार डाला,
और कोई बस नहीं चला तो लड़की पर तेजाब फेंक डाला।
अनेक घटनाओं में तो परिचितों ने दिया अंजाम था, पचास वर्ष...।।८।।
अब तो सरकार को सख्त से सख्त नियम बनाना होगा,
समाज के इस कलंक को अब जड़ से मिटाना होगा।
नारी रहे सुरक्षित सदा ऐसा सामाजिक माहौल बनाना होगा,
निज माँ बहन बेटी जैसा ही सबसे व्यवहार दर्शाना होगा।
सामूहिक दुराचार ने तो सबको किया नाकाम था, पचास वर्ष...।।९।।
दृढ़ वचन, भीष्म प्रतिज्ञा से नया अभियान चलाना होगा,
अच्छे वैदिक संस्कारों से समाज को जागृत बनाना होगा।
भ्रूण हत्या बन्द करा सब कन्याओं को बचाना होगा,
समय रहते नहीं समझे तो फिर बाद में पछताना होगा।
जन्म दर को बराबर लाना, समाज सुधारकों का काम था, पचास वर्ष...।।१०।।

महर्षि दयानन्द जी महाराज का वर्चस्व व वर्तमान राजनीति

धन्य है वह परमात्मा जिसने समय–समय पर अन्धविश्वास और घोर गरीबी में डूबते भारत माता की अनुपम सेवा कर आज कहाँ से कहाँ पहुँचाया है। कोई राजनीति नहीं। पोंगापन्थी पौराणिक मान्यताओं से ग्रसित हमारा देश रसातल तक जा पहुँचा था। तनिक विचार करें उस तिमिर की अन्धी दौड़ में प्रकाश पुंज कहीं नहीं था। उस कालखण्ड में महर्षिजी ने हिन्दी में साधारण जनमानस के हितार्थ, लाभार्थ सरल देवनागरी लिपि में सत्यार्थ प्रकाश नामक ग्रन्थ की रचना की है। इस कारण महर्षि जी के असंख्य देश के दीवानों ने देश प्रेम और स्वतन्त्रता आन्दोलन में बढ़–चढ़ कर हिस्सेदारी निभाई। तिलक, गोखले, रामप्रसाद बिस्मिल, सुखदेव, भगतसिंह, राजगुरु जैसे वीरों ने देशहित के लिए अपने बलिदानों से देश के क्रान्तिकारियों की गर्जनाओं से अंग्रेजी शासन की आँखें खोल दी।

१५ अगस्त सन् १९४७ को हमारा देश आजाद हुआ और २६ जनवरी सन् १९५१ को गणतन्त्र द्वारा सार्वभौम एक शक्तिशाली राष्ट्र बनकर संसार में चमक रहा है। आज हमारे प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी, गृहमन्त्री श्री अमित शाह जी की डबल इंजन सरकार बन गई है तथा मेड इन इण्डिया द्वारा हमारे देश की आत्मनिर्भरता, अभियान स्वरूप अच्छी से अच्छी तकनीकों को अपनाकर तरक्की कर गौरवान्वित हो रहा है। अभी–अभी कुछ माह पहले जी–२० देशों का सम्मेलन दिल्ली में बुलाया गया और आपस में बड़े–बड़े देशों ने मतभेदों को भुलाकर विश्व बन्धुत्व का सन्देश प्रसारित किया गया है। एक–दूसरे देशों की आपस में ब्रदरहुड पॉलिसी द्वारा (दौरा) सबको फायदा पहुँचा है।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् बनकर सबका भला कर
प्रभु जगतपिता।
तू ही तू है भगवान, सबको आर्य श्रेष्ठ बना।।

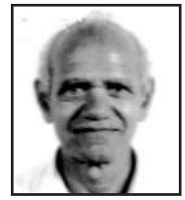

● पुरुषोत्तमदास गोठवाल
एस–८/बी, कबीर मार्ग, बनीपार्क, जयपुर (राज.)
दूरभाष : ०१४१–२२०५९९१

ज्ञान का अक्षय कोष है आर्य समाज कार्य का अछोर है आर्य समाज

● **ओमप्रकाश आर्य**
आर्य समाज, रावतभाटा वाया कोटा (राजस्थान)
चलभाष : ९४६२३१३७९७

आर्य समाज के पास जो ज्ञान है वह किसी के पास नहीं है। आर्य समाज के पास जितना कार्य है उतना किसी के पास नहीं है। उस ज्ञान की गहराई में तो जाइये। उन कार्यों को करने का संकल्प तो कीजिये। वेद, उपनिषद्, दर्शन जो ज्ञान के अक्षय कोष हैं उस अमृत का पान करके जीवन को कृतकृत्य बना सकते हैं। एक–एक शब्द परमात्मा के आनन्द का स्रोत प्रस्फुटित करता है। महर्षि दयानन्द का हमारे ऊपर कितना उपकार है जिन्होंने उस ज्ञानराशि को हमारे समक्ष लाकर रखा। वे लिखते हैं– **''जो उन्नति करना चाहो तो आर्य समाज के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिये, नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा।''** –सत्यार्थ प्रकाश एकादश समुल्लास

''कुछ हाथ न लगेगा'' यह वाक्य बहुत कुछ सन्देश दे रहा है। उस ज्ञान के अक्षय कोष की ओर संकेत कर रहा है। बहुत कुछ करने का भाव उद्वेलित कर रहा है। विडम्बना यह है कि मनुष्य उस ज्ञान के तट तक जाना ही नहीं चाहता। उसे बीच में अवैदिक विद्वान् लोग भ्रमजाल में फँसाकर अपनी प्रतिष्ठा स्थापित करने में लगे रहते हैं और भोली–भाली जनता आस्था के नाम पर कुछ भी मानने को उद्यत रहती है। उसे तो बस सस्ते नुस्खे चाहिये। परिश्रम कुछ न करना पड़े, सारा धन अपने घर में आ जाए। सारे पाप माफ हो जाएँ। सारे रोग समाप्त हो जाएँ। इच्छानुकूल भगवान कार्य करता रहे। उसके इशारों पर नाचता रहे। बुरे कर्मों का फल न मिले। भगवान सुख तो दे किन्तु अशुभ कर्मों के फल से उसे दूर रखे। यह कैसे सम्भव हो सकता है?

जिस व्यक्ति ने आर्य समाज के अक्षय कोष ज्ञानरस का पान कर लिया, उसे संसार के सारे रस फीके लगने लगेंगे। जो कोष को जान लिया उसके सामने संसार की सारी विपदाएँ नत हो जाएँगी, वह सबको सहन कर लेगा। ऐसे बहुत से लोग हैं, आर्य समाज के सम्पर्क में हैं, उनके ऊपर दु:खों का पहाड़ टूटने पर भी परमात्मा को उसे हवाले करते हुए धैर्य को बनाए रखे हैं। आर्य समाज का ज्ञान व्यक्ति के जीवन को बहुत बड़ा सम्बल प्रदान करता है। उसके पास इतने काम रहते हैं कि वह उसी में व्यस्त रहता है। एक अस्सी साल का आर्य समाज का कार्यकर्ता दिन–रात यही सोचता रहता है कि कल क्या करना है और कहाँ जाना है? वह नित नई–नई योजनाएँ बनाता है और उसे क्रियान्वित करने में पूरी शक्ति लगा देता है। आर्य समाज तो **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** का सन्देश लेकर चलता है तो भला उसके पास कार्य की कमी कैसे हो सकती है? ज्ञान के क्षेत्र में, पर्यावरण के क्षेत्र में, शिक्षा, चिकित्सा के क्षेत्र में, जरूरत मंदों की सेवा के क्षेत्र में, हवन–यज्ञ के क्षेत्र में, गुरुकुल संचालन में, राजनीति के क्षेत्र में, संस्कारों के क्षेत्र में आदि–आदि।

आप कल्पना नहीं कर सकते कि चारों वेदों में कितना ज्ञान भरा हुआ है। छहों दर्शनों की शिक्षाएँ जीवन को आनन्द और शान्ति से परिपूर्ण कर सकती हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा निर्देशित प्रामाणिक एकादशोपनिषद् के उपदेशामृत से सारे तनाव, चिन्ताएँ, मन के कूड़े–कचरों को बाहर निकाला जा सकता है। सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ तो ज्ञान का किवाड़ ही खोल देता है। अन्दर प्रवेश करो और दिव्य प्रकाश का दर्शन करो, जीवन प्रकाशित हो जाएगा। सारी कल्मषताएँ तिरोहित हो जाएँगी।

आर्य समाज के पास वैदिक विद्वानों की एक से एक अनोखी उच्च पुस्तकें मिलेंगी, जिन्हें पढ़कर ज्ञान के सागर में गोते लगा सकते हैं। इनके अलावा वेदांग, आयुर्वेद, सन्ध्या, यज्ञ की पुस्तकें पढ़कर जीवन को सफल बना सकते हैं। आर्य समाज के पास एक से एक विद्वान् मिलेंगे जो अपने प्रवचन में अमृत की वर्षा करते हैं। उनके उपदेशामृत से अन्त:करण को धो सकते हैं। परमात्मा का दिया गया वेद ज्ञान तो अक्षय कोष है जिसका प्रचार–प्रसार करने में आर्य समाज सतत् प्रयत्नशील है।

आर्य समाज के पास काम करने के लिए बहुत से क्षेत्र हैं। अपना भी, देश का और विदेश का भी है। आज सबसे अधिक आवश्यकता पूरे विश्व को आर्य समाज की है क्योंकि सर्वत्र चिन्ता, तनाव, अशान्ति, ईर्ष्या, द्वेष, वैर, दु:ख, आडम्बर, पाखण्ड, रूढ़ि, अज्ञान, संघर्ष आदि आन्तरिक आँधियाँ चल रही हैं। संस्कार विलुप्त से हो रहे हैं। भौतिकवाद का बोलबाला है। अर्थवाद हर अनर्थ करने को तत्पर रहता है। पारिवारिक सम्बन्धों में विकृतियाँ व्याप्त हो गई हैं। मनुष्य का जीवन एकाकी सा होने लगा है। संयुक्त परिवार टूट चुके हैं। एकल परिवार बढ़ रहे हैं। सत्य बात किसी के गले नहीं उतरती है। असत्य का ही बोलबाला है। झूठी चीजों का प्रचार–प्रसार हो रहा है। ऐसे विकृत होते हुए वातावरण के लिए आर्य समाज को बहुक्षेत्रों में कार्य करने की आवश्यकता है। यदि आर्य समाज सक्रिय नहीं रहेगा तो विकृतियाँ इतनी ज्यादा बढ़ेंगी जिसको सोच भी नहीं सकते। अवैदिक विचार लोगों के दिलो–दिमाग में घर कर गए हैं। आर्य समाज ही ऐसी संस्था है जो वैदिक विचारों का प्रचार–प्रसार करती है। शेष सर्वत्र अवैदिक विचार छाए हुए मिलेंगे जिन्हें सत्य ज्ञान से कोई लेना–देना नहीं है।

राम के नाम पर नाच लेंगे, किन्तु यह जानने का प्रयत्न नहीं करेंगे कि राम कौन थे? उनका चरित्र कैसा था? उनमें कितने मानवीय गुण भरे हुए थे? वे भी नित्य ईश्वरध्यान, यज्ञ करते थे। इन सबको बताने

वाला केवल आर्य समाज है। बाकी तो सब लीलाधारी अलौकिक अवतारी सिद्ध करने में अपना अहोभाग्य समझते हैं। ऐसे ही कृष्ण के बारे में है। कृष्ण के वास्तविक चरित्र का कोई नाम नहीं लेता, बस रसिया, छलिया, माखनचोर, चूड़ी बेचने वाला, रासलीला रचाने वाला कह-कह कर झूम-झूम कर नाचेंगे, नचाएँगे। देवी-देवताओं के नाम पर भी ऐसे ही कर्मकाण्ड-पूजा-अर्चना देखे जा सकते हैं। ईश्वर और देवी-देवता के नाम पर सर्वत्र अवैदिक कर्म और विचार देखे-सुने जा सकते हैं। इसी प्रकार ज्योतिष के नाम पर नाना प्रकार की भ्रान्तियाँ फैली हुई हैं। जितनी भ्रान्ति ज्योतिष के नाम पर है उतनी किसी के नाम पर नहीं है। शादी-विवाह, बच्चे का जन्म, गृहप्रवेश, वर निकासी, मृत्यु के अवसर पर, मुण्डन, नया कार्य प्रारम्भ आदि सारे कार्य बिना ज्योतिष का आधार लिए सम्पन्न नहीं होते। फलित ज्योतिष का तो साम्राज्य ही विस्तृत है। अब तो जन्म कुण्डली का फेर इतना हो गया है कि अच्छे-अच्छे रिश्ते कट जाते हैं सिर्फ उसके मैच न खाने से। पर्व-त्योहारों की विकृतियाँ तो पर्यावरण का ही विनाश करती हैं। दीपावली पर पटाखे, होली पर हुड़दंग, दशहरे पर बड़े-बड़े रावण के पुतले, पटाखे, आतिशबाजी तो पर्यावरण का विनाश करते हैं। आर्य समाज के अलावा इन विकृतियों पर नजर रखने वाला कोई नहीं है। अब तो सशक्त संचार मीडिया इन विकृतियों को और बढ़ाने में लगा हुआ है। यह सब कार्य आस्था और धर्म के नाम पर चल रहा है। जैसा परोसा जा रहा है, पीढ़ी वैसी ही तैयार हो रही है। जहाँ इतनी विकृतियों का जमघट लगा हो भला वहाँ आर्य समाज में कोई क्यों आना चाहेगा? सत्यता यह है कि सत्य का ज्ञान आर्य समाज के पास है और कार्य करने को भी बहुत है जिसे अछोर कह सकते हैं। आइये, हम भी सत्यज्ञान के प्रचार-प्रसार में सहयोग करें।

हम हैं ऋषियों की सन्तान

हम हैं ऋषियों की सन्तान, बताया देव-दयानन्द आपने।
अपने गौरव को लिया पहचान, अब हम शुभ काम करेंगे।।
दुर्गुण नष्ट तमाम करेंगे...।।१।।
सन्ध्या करेंगे सुबह और शाम, यज्ञ को समझेंगे सर्वोत्तम काम।
अतिथि का करेंगे आदर-मान, पितृजनों को नित्य उठ प्रणाम करेंगे।।
दुर्गुण नष्ट तमाम करेंगे...।।२।।
वेदों का घर-घर करेंगे प्रचार, सुधारेंगे अपने आचरण और विचार।
अन्धविश्वासों पर करेंगे कड़ा प्रहार, पाखण्डियों की चाल को नाकाम करेंगे।।
दुर्गुण नष्ट तमाम करेंगे...।।३।।
अज्ञान, अविद्या का करेंगे हम विनाश, गुरुडम का करेंगे पर्दाफाश।
एक ईश्वर में ही रखेंगे विश्वास, निराकार 'ओ३म्' का ही ध्यान करेंगे।।
दुर्गुण नष्ट तमाम करेंगे...।।४।।
मानव से मानव की प्रीत होगी, सब देशों में परस्पर मीत होगी।
दुष्ट, अन्यायियों की कभी न जीत होगी, सारा विश्व शान्तिधाम करेंगे।।
दुर्गुण नष्ट तमाम करेंगे...।।५।।
वैदिक घोष हमें है अपनाना, सारे विश्व को आर्य बनाना।
'खुशहाल' की पूरी नहीं होगी यह चाहना, तब तक हम नहीं विश्राम करेंगे।।
दुर्गुण नष्ट तमाम करेंगे...।।६।।

● खुशहालचन्द्र आर्य
द्वारा- गोविन्दराम आर्य एण्ड सन्स
१८०, महात्मा गान्धी मार्ग, कोलकाता
चलभाष : ९८३०१३५७९४

चिचोली (म.प्र.) में सफल वृष्टि यज्ञ सम्पन्न

ईश्वर कृपा से यज्ञ प्रचार समिति चिचोली द्वारा आयोजित दिनांक ६ सितम्बर से ९ सितम्बर तक चलने वाला वृष्टि यज्ञ सफल रहा। म.प्र.के बैतूल जिले के चिचोली नगर में पूज्य स्वामी शान्तानन्द सरस्वती जी के ब्रह्मत्व में सम्पादित एवं आर्य समाज चिचोली के सौजन्य से यज्ञ प्रचार समिति चिचोली द्वारा संचालित वृष्टि यज्ञ के मध्य में ही तीव्र वृष्टि की प्राप्ति हुई तथा अन्तिम दिन पूर्णाहुति के समय तो यज्ञ भी चलता रहा व वर्षा भी होती रही। ज्ञात हो कि चिचोली नगर के आसपास बारिश के अभाव में भूमि फटने लगी थी जिसे देखकर यज्ञ प्रचार समिति चिचोली ने प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी वृष्टि यज्ञ करने की योजना बनाई। जो कि समिति के कार्यकर्ताओं व अधिकारियों के अथक परिश्रम से एवं दानदाताओं के सार्थक सहयोग से सफल हुई। बारिश होने से नगरवासी बहुत प्रसन्न हैं। इस दौरान वृष्टि यज्ञ के मध्य में स्वामी शान्तानन्द जी के द्वारा वैदिक प्रवचन एवं यज्ञ के बाद वैदिक संध्या व भजन प्रवचन भी किया गया। गुरुकुल होशंगाबाद - नर्मदापुरम् के ब्रह्मचारी योगेश आर्य एवं कौस्तुभ जी ने प्रभावशाली वर्षा के मन्त्रों का पाठ किया। चिचोली नगर के वृष्टि यज्ञ के अध्यक्ष नेतराम राठौर, मंत्री श्री दिनेश आर्य, कोषाध्यक्ष श्री नत्थू आर्य तथा श्री विजय आर्य, श्री सुरेश राठौर, श्री विवेक पटेल के नेतृत्व में वृष्टि यज्ञ में श्रद्धा रखने वाले १०१ जोड़ी यजमानों ने (यज्ञ प्रेमी नर-नारी सज्जन महानुभाव) यजमान बनकर यज्ञ में आहुति प्रदान किया। चार दिन तक चलने

वाले इस महायज्ञ में ७५ किलो घी, २५० किलो हवन सामग्री, ५० किलो नारियल के गोले, १५ किलो शहद, ११ किलो दही तथा प्रचुर मात्रा में काजू बादाम अखरोट मुनक्का केला आदि पदार्थों से युक्त सामग्री ८००किलो आम, पीपल, समी, आदि की समिधा तथा १०किलो केरड के बीज के साथ यह विशेष वृष्टि यज्ञ सफल हुआ। कार्यक्रम के अंत में नगर परिषद की अध्यक्षा वर्षा मालवीय , इंदिरा माता जी व महिला आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती प्रमिला आर्या ने अपना महत्त्वपूर्ण प्रतिभाव दिया। पूर्णाहुति के पावन अवसर पर पंचमहायज्ञ का क्रियात्मक रूप से भी अनुष्ठान किया गया। जिसमें पितृ पूजन, गौ पूजन एवं अतिथि पूजन का कार्यक्रम विशेष प्रेरणादायक रहा। सबसे अंत में विशाल भंडारा के साथ कार्यक्रम पूर्ण हुआ।

राष्ट्र पितामह महर्षि दयानन्द सरस्वती की २००वीं जयन्ती पर आयोजित २०१ कुण्डीय चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ एवं विश्व वेद सम्मेलन

आयोजन स्थल : नागवासुकि मन्दिर के निकट, संगम क्षेत्र, तीर्थराज प्रयाग (उ.प्र.) । आयोजन तिथि : १३ जनवरी २०२४ से १२ फरवरी २०२४ तक

-: निमन्त्रण पत्र :-

देवियों व सज्जनों! आपको जानकर अपार हर्ष होगा कि राष्ट्रहित में जीवन अर्पण करने वाले, हजारों नर–नारियों में क्रान्ति की ज्वाला जलाने वाले, लाखों नवयुवकों के प्रेरणास्रोत, वेदभाष्यकार, अद्‌भुत वक्ता, विलक्षण योगी, क्रान्तिकारी ऋषि, आर्ष ग्रन्थों के पुनरुद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती को धराधाम पर अवतरित हुए २०० वर्ष व्यतीत हो रहे हैं। ऐसे महात्मा के २००वीं जयन्ती वर्ष के उपलक्ष्य में उनके व्यक्तित्व के अनुरूप श्रद्धांजलि समर्पित करने के लिए आप सबके सहयोग से एक विशालतम महायज्ञ करने का निश्चय किया गया है। महाभारत के पश्चात् विगत पाँच हजार वर्षों में इतना बड़ा यज्ञ इतिहास में नहीं सुना गया है। हमारी इच्छा है कि हम सब नर–नारी बाल–वृद्ध सभी मिलकर इस विशाल यज्ञ को सम्पन्न करें। इसमें आप सबके सहयोग की अनिवार्य अपेक्षा है।

इस महायज्ञ में लगभग चार करोड़ आहुतियाँ पड़ेंगी जिसमें ५०० क्विंटल घृत, १५०० क्विंटल हवन सामग्री, २००० क्विंटल समिधा व्यय होगी।

कार्यक्रम की विशेषताएँ

१. एक साथ दो सौ एक वेदियों पर आठ सौ चार जोड़ा यजमानों द्वारा ३१ दिन तक यज्ञ, वेदकथा एवं भजन–प्रवचन
२. ५०० क्विंटल घी, १५०० क्विंटल हवन सामग्री, २००० क्विंटल समिधा द्वारा वातावरण की पवित्रता।
३. विभिन्न सम्प्रदायों के आचार्यों का एकत्र समागम।
४. तीस विशाल महासम्मेलन।
५. गुरुकुलों के आचार्यों, उपाचार्यों, ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारिणियों द्वारा गायन, वादन, शास्त्रार्थ, नाटक, शक्ति प्रदर्शन।
६. अखिल भारतीय कवि सम्मेलन, अन्धविश्वास निर्मूलन के अन्तर्गत जादू कला का चमत्कारिक प्रदर्शन।
७. भारत भर के प्रसिद्ध धर्माचार्यों का उपदेश, श्रवण एवं दर्शन लाभ।
८. आर्य जगत् के तथा विभिन्न विश्वविद्यालयों के महनीय आचार्यों का सदुपदेश।
९. महान् संगीतज्ञों का मनोरम व उत्प्रेरक संगीत व उपदेश।
१०. देश व विदेश के विभिन्न क्षेत्रों के व विभिन्न विधाओं के मर्मज्ञों का उद्‌बोधन।

निमन्त्रित स्वीकृति प्राप्त महनीय विद्वद्‌वृन्द

संन्यासी : सर्वश्री स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज (दिल्ली), सर्वश्री स्वामी केवलानन्द जी (अलीगढ़), सर्वश्री स्वामी सच्चिदानन्द जी महाराज (राजस्थान), आचार्य सतानन्द जी महाराज (वृन्दावन धाम), सर्वश्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज (दादरी), सर्वश्री स्वामी सम्पूर्णानन्दजी महाराज (हरियाणा), आचार्य प्रद्युम्नजी महाराज (हरियाणा)

उपदेशक : आचार्य विष्णु मित्रजी वेदार्थी (बिजनौर), श्री अच्युतानन्द तिवारी (अयोध्या), आचार्या डॉ. श्रुतिकीर्ति जी (कानपुर), आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री (दिल्ली), डॉ. सुधीर कुमार (जवाहरलाल नेहरू वि.वि.), आचार्य संजीव 'रूप' (गुधनी, बदायूं), आचार्या डॉ. प्रीति विमर्शिनी (वाराणसी), आचार्य डॉ. ब्रजेश गौतम (दिल्ली), डॉ. ओ३म् नाथ विमली (दिल्ली वि.वि.), आचार्य डॉ. योगेश भारद्वाज (मुजफ्फरनगर)

भजनोपदेशक वृन्द : पं. कुलदीप आर्य (बिजनौर), पं. कुलदीप विद्यार्थी (बिजनौर), पं. भानुप्रकाश शास्त्री (बरेली), पं. मुकेश आर्य (दिल्ली), पं. सतीश सत्यम (फरीदाबाद), पं. शिवपाल आर्य (एटा), पं. मोहित शास्त्री (बिजनौर), पं. अंकित उपाध्याय (दिल्ली), पं. प्रताप वैदिक (सहारनपुर)

यज्ञवेदियों के निश्चित अध्वर्यु : श्री केशवमुनि वानप्रस्थ (म.प्र.), श्री यज्ञमुनि वानप्रस्थी (उ.प्र.), स्वामी ओंकारानन्द जी (आगरा), मुनि श्रुतिषद् वानप्रस्थ (कोटा), श्री शिवमुनि वानप्रस्थ (सुल्तानपुर), श्री सत्यमुनि वानप्रस्थ (म.प्र.), श्री आनन्द मुनिजी (सुल्तानपुर), आचार्य विजयदेव नैष्ठिक (उ.प्र.)

शेष वेदियों के लिए अध्वर्यु निश्चय किये जाने शेष हैं।
इच्छुक यज्ञविधि के जानकार तथा श्रद्धालु कर्मठजन अपना नाम प्रदान करें।

आइये, इस सारस्वत महाकुम्भ में भाग लेकर तन–मन–धन व समय का सहयोग देकर इस महनीय कार्यक्रम के अंग बनकर जीवन को धन्य–धन्य बनाएँ।

बृहद् यज्ञ एवं विश्व वेद सम्मेलन में सहयोगी कैसे बनें?

१. यहाँ प्रदत्त सम्पर्क नंबर पर फोन द्वारा जानकारी प्राप्त करें।
२. निम्नलिखित बैंक विवरण के अनुसार खाते में धनराशि न्यूनतम २१०० रु. एक दिन के यजमान के लिए जमा करवाकर चित्र खींचकर वाट्सएप पर सूचित करें।
३. यज्ञ सामग्री, घृत, समिधा, अन्न (चावल, जौ, तिल, मूँगफली, सरसों, उड़द), मेवे, यज्ञपात्र (लोटे, भगोने, गिलास, चम्मच, बड़ी थालियाँ), आसन, गुड़, औषधियाँ (अपामार्ग, सहदेवी, गिलोय, अकरकरा, बेल, पुनर्नवा, अश्वगंधा, ब्राह्मी, शंखपुष्पी, नीमफूल, तुलसी, वनतुलसी आदि) के द्वारा सहयोग करके।
४. अंगूठे जितनी मोटी आठ अंगुल लम्बी (त्वचा सहित) आम, बेल, पीपल, गूलर, बरगद, शमी, मदार (आक), खैर, चन्दन की समिधा काटकर यज्ञ में सहयोग करें। छः लाख समिधाएँ अपेक्षित है।

अधिक जानकारी के लिए पत्रक में प्रदत्त दूरभाष अंकों पर सम्पर्क करें।

सम्मेलन की सफलता हेतु दानराशि वेद विद्या प्रसार न्यास के खाता संख्या ५३८८०१०१०११७३३९ (UBIN०५५३८८३) यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, आर.ई.ए. हेडक्वार्टर्स, इलाहाबाद–२११००४ में जमा करके या न्यास से क्रॉस चेक बनाकर नीचे लिखे पते पर भेजने की कृपा करें।

पत्राचार का पता : **वेद वेदाङ्ग विद्यापीठ गुरुकुल आश्रम, धनपतगंज, सुल्तानपुर (उ.प्र.)**

अथवा

मधुप नारायण शुक्ल (एडवोकेट), चेम्बर नं. १८–ए, ओल्ड बिल्डिंग, हाईकोर्ट, इलाहाबाद (चलभाष : ७८००२८४८८३)

निवेदक

● आयोजन समिति विश्व वेद सम्मेलन, प्रयागराज ● न्यासीगण वेद विद्या प्रसार न्यास, प्रयागराज

● संचालन समिति वेद वेदाङ्ग विद्यापीठ गुरुकुल आश्रम, धनपतगंज, सुल्तानपुर (उ.प्र.) ● सभ्य समाज इन्टरनेशनल, अयोध्या (उ.प्र.)

सम्पर्क सूत्र : मुनि शुचिषद् वानप्रस्थ (सुल्तानपुर) चलभाष : ९४५०७८३३३७

महर्षि दयानन्द आर्ष कन्या गुरुकुल समिति द्वारा अन्नपूर्णा योजना प्रारम्भ

शाजापुर। ईश्वर की महती कृपा तथा मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान श्रीमान् प्रकाश जी आर्य, महू के सेवा-समर्पण युक्त प्रयासों से मध्यप्रदेश के शाजापुर जिले के ग्राम मोहन बड़ोदिया में नवस्थापित तथा संचालित, सम्पूर्ण मध्यप्रदेश में एकमात्र कन्या गुरुकुल महर्षि दयानन्द आर्ष कन्या गुरुकुल जिसमें वर्तमान में लगभग ६० बालिकाएँ अध्यनरत् हैं। यज्ञशाला, प्रशासनिक एवं अतिथि निवास भवन, गुरुकुल भवन आदि का निर्माण हो चुका है तथा पाठशाला एवं सत्संग भवन का निर्माण कार्य प्रगति पर है।

वैसे तो दानदाताओं द्वारा खुले हाथों से बढ़-चढ़कर आर्थिक सहयोग किया जा रहा है किन्तु भविष्य में गुरुकुल संचालन के सुचारू व्यवस्था हेतु प्रधान प्रकाश जी आर्य, मन्त्री लक्ष्मीनारायण जी पाटीदार, कोषाध्यक्ष वेदप्रकाश जी पाटीदार के कुशल नेतृत्व में गुरुकुल समिति द्वारा निर्णय लिया गया कि अन्नपूर्णा योजना प्रारम्भ की जाए जिसके जीवन में न्यूनतम रु. ११००० अथवा इच्छा अनुसार रु. ११००० से अधिक देने वाले स्थाई सदस्य होंगे। इन सदस्यों से प्राप्त धनराशि का स्थाई कोष रहेगा जिसके ब्याज से प्राप्त धनराशि बालिकाओं की भोजन व्यवस्था पर व्यय होगी। इस प्रकार अगस्त माह में न्यूनतम १०० सदस्य तथा कुल १००० सदस्य अन्नपूर्णा योजना के बनाने का लक्ष्य है। समिति के सदस्यों एवं निष्ठवान् , सेवाभावी, समर्पित सदस्यों को अपने-अपने सम्पर्क क्षेत्र में सदस्य बनाने का दायित्व सौंपा गया।

दिनांक १२ अगस्त २०२३ को समिति सदस्यों की बैठक अन्नपूर्णा योजना की समीक्षा तथा गुरुकुल के विकास सम्बन्धी वार्ता के लिए गुरुकुल परिसर पर आयोजित की गई। प्रधान प्रकाश जी द्वारा अतिशीघ्र आयकर की धारा ८० जी की सुविधा प्राप्त होने से समिति सदस्यों को अवगत करवाया गया। उपस्थित सदस्यों द्वारा बनाए गए सदस्यों की जानकारी से अवगत करवाया गया। ३० सदस्यों से धनराशि प्राप्त हो चुकी है तथा सुसनेर के शिक्षक श्री कमल जी राठौर द्वारा आज ,अन्नपूर्णा योजना में ११११११ (एक लाख ग्यारह हजार एक सौ ग्यारह) रुपया प्रदान करने की घोषणा स्वप्रेरणा से की गई। आगामी बैठक २६ अगस्त को करने के निर्णय के साथ बैठक सम्पन्न हुई।

वल्लभ जी कक्कू (भूमि दानदाता), प्रकाश जी आर्य, काशीराम जी अनल, श्रीधर जी शर्मा, लक्ष्मीनारायण जी पाटीदार, वेदप्रकाश जी पाटीदार, रमेशचन्द्र जी पाटीदार, ओमप्रकाश जी पाटीदार, राधेश्याम जी बियाणी, अश्विन जी शर्मा, अन्तरसिंह जी दरबार, मोहनलाल जी शर्मा, प्रतापसिंह जी आर्य, यशवन्त जी परमार, नारायण जी आर्य, हरीश जी आर्य, रमेशचन्द्र जी पुरी, गोकुल जी आर्य, सुरेशचन्द्र जी खजुरिया, कुम्भकार जी, गुरुकुल व्यवस्थापक भरत जी आर्य, वैदिक संसार प्रकाशक सुखदेव शर्मा, सुपुत्र प्रितेश शर्मा एवं नितिन शर्मा उपस्थित रहे।

प्रख्यात साहित्यकार, आर्य शिरोमणि डॉ. श्वेतकेतु, दिल्ली में सम्मानित

दि २५ अगस्त २०२३ को अखिल भारतीय साहित्यकार संघ दिल्ली शाखा द्वारा आयोजित दि २५ अगस्त २०२३ को अखिल भारतीय सम्मान समारोह एवं काव्य संध्या पेसिफिक माल द्वारका, सेक्टर २१ दिल्ली के विशाल हाल में राष्ट्रीय कवि व प्रदेश अध्यक्ष ऋषि कुमार शर्मा च्यवन के संयोजक में भव्यता से परिपूर्ण कार्यक्रम में आर्य विदुषी डॉ. स्व सावित्री देवी शर्मा वेदाचार्या के सुपुत्र वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. श्वेतकेतु शर्मा बरेली (उ.प्र.) को साहित्यिक लेखन में अपूर्णीय योगदान के लिए वरिष्ठ साहित्यकार सम्मान के रूप में सम्मानित किया गया। इस अवसर पर आपने शृंगार रस की रचना का काव्यपाठ प्रस्तुत किया ,इस आयोजन में देश के जाने-माने कवि साहित्यकार विभिन्न प्रान्तों से उपस्थित रहे, जिन्होंने काव्यपाठ भी किया, बहुत सुंदर भव्यता से परिपूर्ण आयोजन किया गया। संचालन व संयोजक ऋषि कुमार शर्मा च्यवन ने किया। इस अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष कवि कमलकांत तिवारी , ख्यातिप्राप्त विदुषी डॉ. मधु चतुर्वेदी, हास्य-व्यंग्य कवि हरीश शर्मा यमदूत मुम्बई आदि सैकड़ों कवि व साहित्यकार उपस्थित रहे।

अद्भुत, विलक्षण, अकल्पनीय, अविश्वसनीय आर्य जगत् के गौरव आर्ष कन्या गुरुकुल, भुसावर पर ओमप्रकाश जी की प्रथम पुण्यतिथि सम्पन्न

वैसे तो भुसावर (बैर), जिला-भरतपुर, राजस्थान क्षेत्र मेरे से कोई अपरिचित क्षेत्र नहीं है। लगभग १५-१६ वर्ष की आयु से मेरा इस क्षेत्र में खूब आना-जाना रहा है और बाल्यकाल में तो महीनों गिनती भी इस क्षेत्र में रहना हुआ है। क्योंकि मेरे पैतृक गाँव गोपालगढ़ (महुवा), जिला-दौसा और मेरे ननिहाल शायपुर (गादोली), जिला-भरतपुर मेरे जीवन विशेषकर मेरी युवावस्था के महत्वपूर्ण स्थान दोनो जिलों की सीमाओं पर लगभग ६० किलोमीटर की दूरी पर स्थित होकर दोनो पैतृक और ननिहाल के मध्य बैर भुसावर है।

और ईश्वर की लीला देखिए की जब हम यौवन काल में मेहन्दीपुर बालाजी के अन्धभक्त होते थे तो २-४-६ महीने में परिवार सहित मेहन्दीपुर बालाजी दर्शन करने आ ही जाते थे। खूब हमने मेहन्दीपुर बालाजी आकर सवामणियाँ की है। यह भी एक संयोग है कि जिस प्रकार वैदिक और पौराणिक धुर विरोधी विचारधाराएँ हैं ठीक उसी प्रकार मेहन्दीपुर बालाजी और भुसावर कन्या गुरुकुल दोनों महुआ से लगभग समान दूरी पर विपरीत दिशाओं में स्थित है। जांगिड ब्राह्मण समाज सेवा के कार्यकाल में तो इस क्षेत्र में लगभग आना-जाना रहा है किन्तु वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार और पत्रिका प्रकाशन के कार्यक्षेत्र में उतरने के बाद अत्यधिक व्यस्तता के कारण इस क्षेत्र में आना अत्यन्त न्यून हो गया। आना होता भी है तो भागम-भाग में इस कारण कन्या गुरुकुल भुसावर पहुँचना सम्भव नहीं हो सका। जो परमपिता परमेश्वर की कृपा से सौभाग्य प्राप्त हुआ कि भरतपुर वाले स्मृतिशेष श्री ओमप्रकाश जी गुप्ता की प्रथम पुण्यतिथि पर उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुमित्रा जी आर्या द्वारा कन्या गुरुकुल भुसावर में ३१ अगस्त २०२३ को आयोजन रखा गया और मुझे भी आमन्त्रित किया गया। ऐसा भी नहीं है कि मैं आज प्रथम बार भुसावर आया। इसके पहले भी मैं दो-तीन बार भुसावर और निकटवर्ति सलेमपुर आ चुका हूँ। भुसावर में मेरे भतीजे चन्द्रशेखर की ससुराल भी है और उसकी बारात में भी मैं भुसावर आया था किन्तु ये बातें तब की है जब हम पौराणिक होते थे और वैदिक धर्म सिद्धान्तों का हमें कोई क-ख-ग भी पता नहीं था।

मैं तो आज मेरे और मेरे पूर्वजों के उस दुर्भाग्य को कोस रहा हूँ कि न जाने कौन से हमारे प्रारब्ध के ऐसे कर्म थे जो कि हमारे पैतृक निवास से कुछ ही किलोमीटर की दूरी पर आर्य समाज भुसावर, आर्य समाज बांदीकुई, आर्य समाज भरतपुर, आर्य समाज बयाना, आर्य समाज हिण्डौन सिटी, आर्य समाज गंगापुर सिटी, आर्य समाज छोकरवाड़ा आदि के माध्यम से वैदिक ज्ञान गंगा आज से १००-५० वर्ष पूर्व अविरल बह रही थी और यह वह स्वर्णिम काल था जब लोग आर्य समाज के दीवाने तथा ऋषि दयानन्द के सर्वस्व न्यौछावर करने वाले सच्चे अनुयाई थे तथा इसी कालखण्ड में शिल्पी समुदाय को महर्षि देव दयानन्द के दिखाए वैदिक पथ पर अग्रसर करने हेतु अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा का जन्म होकर उसका भी यह कालखण्ड स्वर्णिम कालखण्ड था। जन्मना जाति के दंभ में चूर, धूर्त, पाखंडियों को स्थान-स्थान पर शास्त्रार्थ की चुनौतियों के साथ कोर्ट में वाद दायर किए जा रहे थे। निरंकुश , अहंकारी, धूर्तो को जेल भेजा जा रहा था। वर्ष १९०८ में जांगिड ब्राह्मण पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ हो चुका था। जिसके मुखपृष्ठ पर प्रतिमास वेदमन्त्र और उसका भावार्थ छपता था और पत्रिका में वैदिक विद्वानों के लेख प्रकाशित होते थे। गाँव-गाँव, ढाणी-ढाणी में जांगिड समाज के लोग आर्य समाज से जुड़ते चले जा रहे थे। एक प्रकार से आर्यसमाज और जांगिड समाज एक दूसरे के पर्याय बन चूके थे। ऐसी क्रान्तिकारी लहर में भी हमारे कोई भी पूर्वज आर्य समाज के सम्पर्क में नहीं आ पाये? यह हमारे सम्पूर्ण परिवार का दुर्भाग्य नहीं तो और क्या कहा जायेगा?

ईश्वर कृपा से वैदिक कार्य क्षेत्र में प्रविष्ट होने के पश्चात् गुरुकुल के विषय में अनेक बार सुना, गुरुकुल

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्विजन्मशताब्दी समारोह

दिनांक : ४ व ५ नवम्बर,२०२३

स्थान : सागर रेसीडेंसी, सेवक रोड, सिलीगुड़ी (प.बंगाल)

मान्यवर, वैदिक विचार मंच, सिलीगुड़ी के तत्वावधान में ४ व ५ नवम्बर २०२३ (शनिवार एवं रविवार) को उत्तर पूर्वांचल के प्रवेश द्वार पर स्थित सिलीगुड़ी, जिला : दार्जिलिंग (पश्चिम बंगाल) में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की द्विजन्मशताब्दी के उपलक्ष्य में भव्य समारोह स्थानीय सागर रेसिडेंसी, सेवक रोड़ में आयोजित किया जा रहा है। विस्तृत विवरण निकट भविष्य में दिया जायेगा अथवा सम्पर्क सूत्र से प्राप्त किया जा सकता है।

आमन्त्रित विद्वान् : स्वामी विदेह जी योगी, आचार्य डॉ महावीर जी, आचार्य अखिलेश्वर जी, श्री जगत जी वर्मा (भजनोपदेशक)

सम्पर्क सूत्र

संयोजक : समारोह समिति, वैदिक विचार मंच, सिलीगुड़ी

पण्डित बसुमित्र आर्य

चलभाष : ९८३२३६६८५७

की मूर्धन्य विद्वान् प्रियंका शास्त्री से भी अनेक आयोजनों में भेंट के साथ परिचय प्रगाढ़ हुआ। गुरुकुल जाने की भावना भी प्रबल थी किन्तु कोई अवसर नहीं बन पाया। यह भी विचार मन में आता था कि कोई छोटा-मोटा गुरुकुल होगा और वर्तमान में तो जब आर्य समाज ही दम तोड़ रहे हैं तो गुरुकुल की क्या स्थिति होगी? और वह भी ऐसे दूरस्थ क्षेत्र में, इस प्रकार कि अनेक शंका-कुशंकाएँ भी मन में थी।

जब बहन सुमित्रा जी का ३१ अगस्त को उनके पतिदेव श्री ओमप्रकाश जी गुप्ता की प्रथम पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि आयोजन कन्या गुरुकुल भुसावर में किए जाने का निमन्त्रण प्राप्त हुआ तो पत्रिका प्रेषण कार्य से निवृत हो चुका था और समय अनुकूल था इस कारण गुरुकुल भुसावर को प्रत्यक्ष देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जब ३१अगस्त को प्रात: ५.३० बजे मै प्रवेश द्वार से प्रविष्ट हुआ तो मुझे अपनी अवधारणाएँ सत्य सिद्ध होती दिखाई दी क्योंकि गुरुकुल के प्रवेश द्वार पर आर्य समाज का कार्यालय लगभग १०० वर्ष पुराने भवन में है और बाहर से गुरुकुल का भव्य स्वरूप दृष्टिगोचर नहीं होता है मात्र एक छोटा सा जीर्ण-शीर्ण मकान दिखाई देता है। वहाँ की स्थिति देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा था कि कठिनाई से १०-५ लड़कियाँ वहाँ पर होंगी। वहीं पर आगन्तुकों के लिए दो शौचालय सयुंक्त स्नानागार कामचलाऊ रूप से बने हुए हैं।

भवन में प्रवेश करने पर मुख्य संचालक श्रद्धेय हरिश्चन्द्र जी शास्त्री से नमस्ते-भेंट हुई। उन्होंने मुझसे पूछा कहाँ से आए हो? मैंने कहा इन्दौर से, वे समझें हिण्डौन से। वहीं पर आगन्तुकों के लिए दो अतिथि कक्ष बने हुए हैं। उन्होंने मुझे अतिथि कक्ष में ठहरा दिया। चाय का पूछने पर मैंने बता दिया कि मैं चाय नहीं पीता। मैंने नित्यकर्म स्नानादि से निवृत होकर संध्योपासना की। एक ब्रह्मचारिणी दूध का गिलास लेकर आ गई। पोहे भी लाए गए किन्तु मैंने मना कर दिया।

थोड़ी देर पश्चात् शास्त्री जी आए और उन्होंने मुझे कहा कि अभी आपको गुरुकुल का अवलोकन करवा देते हैं फिर आयोजन में समय नहीं मिल पाएगा। आपने मध्यप्रदेश के भिण्ड जिले की ब्रह्मचारिणी करुणा आर्या को मुझे गुरुकुल अवलोकन करवाने का दायित्व सौंप दिया। बेटी करुणा आर्या ने मुझे अच्छे से सम्पूर्ण गुरुकुल का अवलोकन करवाया।

गुरुकुल के अवलोकन पश्चात् मैं तो हत्प्रभ रह गया। मेरे मन में यही भाव उभरे कि अद्भुत, विलक्षण, अकल्पनीय, अविश्वसनीय। बालिकाओं के सर्वांगीण विकास के लिए क्या नहीं था वहाँ पर?

शताधिक वर्षों पूर्व जब आर्य समाज के लिए लोग प्राण-प्रण से समर्पित होते थे। तब लगभग ४००० वर्गगज भूखण्ड के प्रारम्भिक हिस्से पर जिसका वर्णन में पूर्व में कर चूका हूँ। आर्य समाज स्थापित किया गया। शेष भूमि अन्य आयोजनों और गतिविधियों के लिए खुली छोड़ दी गई। आर्यसमाज और गुरुकुल वर्तमान में भुसावर नगर के मध्य व्यस्ततम बाजार में स्थित है।

लगभग १३ वर्ष पूर्व पलवल निवासी आदरणीय हरिश्चन्द्र जी शास्त्री द्वारा आर्य समाज भुसावर के कर्णधारों से कन्या गुरुकुल प्रारम्भ करने हेतु भूमि देने का अनुरोध किया गया। भूखण्ड की कोई समस्या तो थी नहीं, पर्याप्त भूमि आर्य समाज के पास थी। सहर्ष शास्त्री जी को भूमि दे दी गई। गुरुकुल की प्रथम स्नातिका आचार्या प्रियंका शास्त्री आर्य जगत् की सुविख्यात प्रवक्ता है। आप वर्तमान में दर्शन शास्त्रों पर शोध (पी एच डी) कर रहीं है। जैसे ही हम प्राचीन भवन से निकलकर गुरुकुल परिसर में प्रविष्ट हुए बांई और सुसज्जित गुरुकुल कार्यालय बना हुआ है।

कार्यालय के बगल में विशाल कक्ष में भोजनालय बना हुआ है। उसके समीप लगभग २०० व्यक्ति बैठ सके इस क्षमता की विशाल यज्ञशाला है जिस पर सनातन वैदिक धर्म-संस्कृति की आवश्यक जानकारियां अंकित की हुई है। विशाल सभागार कक्ष। बालिकाओं के लिए सम्पूर्ण सुविधाओं से युक्त आवास गृह, सिलाई-कढ़ाई के उपकरणों से सुसज्जित सिलाई केन्द्र, हारमोनियम आदि वाद्य यन्त्र से सुसज्जित संगीत प्रशिक्षण केन्द्र, विशाल कक्ष में अनेक कंप्यूटरों से सुसज्जित कंप्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र। विशाल खुला परिसर जिसमें छायादार बड़े-बड़े वृक्ष, बालीकाओं की खेलकूद गतिविधियों और चार पहिया वाहनों के खड़े करने हेतु पर्याप्त स्थान तथा परिसर के दूसरी ओर प्रवेश हेतु अतिरिक्त विशाल द्वार।

वर्तमान में राजस्थान सहित अन्य प्रान्तों से भी लगभग ६० बालिकाएँ अध्यनरत हैं। यह सब प्रत्यक्ष देखकर मन आनन्द से परिपूरित हो गया।

स्मृति शेष श्री ओमप्रकाश जी गुप्ता की धर्मपत्नी श्रीमती सुमित्रा आर्या, सुपुत्र श्री नीरज जी गुप्ता, श्री देवेन्द्र जी गुप्ता, पुत्रवधू श्रीमती शीलू गुप्ता, श्रीमती अलका गुप्ता, जयपुर से भतीजे श्री अजय जी गुप्ता, श्री विजय जी गुप्ता, सुपौत्र बृजेश गुप्ता, आर्यांश गुप्ता, पौत्रवधू श्रीमती सरिता गुप्ता, सुपौत्री कु. सलोनी गुप्ता एवं बहन सुमित्रा जी के नगर निवासी एक मात्र भाई श्री रामअवतार जी बंसल, बाड़ी वाली बहन श्रीमती कुसुम मित्तल पतिदेव श्री राकेश जी मित्तल, जयपुर वाली बहन श्रीमती स्वर्णलता पतिदेव श्री धीरज जी, हरिद्वार वाली बहन श्रीमती मणिप्रभा पतिदेव श्री हरेन्द्र जी गुप्ता व उपस्थित समस्त परिजन एवं स्नेहीजन तथा ब्रह्मचारीणियाँ यज्ञ शाला में उपस्थित हो चूके थे। आचार्या सीमा जी आर्या के ब्रह्मत्व में शान्ति यज्ञ प्रारम्भ किया गया। नियमित यज्ञ के अतिरिक्त अथर्ववेद के शान्ति सूक्त के मन्त्रों से विशेष आहुतियां प्रदान की गई। यज्ञ के पश्चात् भजन, प्रार्थनाएं, श्रद्धांजलि प्रस्तुत की गई। गुप्ता परिवार की ओर से ब्रह्मचारिणियों के एक माह के भोजन हेतु खाद्य सामग्री लगभग ४०००० रु. मूल्य की गुरुकुल को प्रदान की गई।

भरतपुर के श्री जगदीश जी आर्य द्वारा काव्य श्रद्धांजलि प्रस्तुत की गई तथा उनके द्वारा ओमप्रकाश जी के जीवन पर प्रकाश डालती काव्य पुस्तिका का विमोचन किया गया। आर्य समाज और गुरुकुल की ओर से पधारे समस्त अतिथियों का भावभिना अभिनन्दन उपस्थित पदाधिकारियों द्वारा किया गया। इसी प्रकार गुप्ता परिवार की ओर से भी गुरुकुल संचालक शास्त्री जी का तथा अतिथियों का हार्दिक अभिनन्दन किया गया।

श्रद्धांजलि सभा का संचालन शास्त्री जी द्वारा किया गया। शान्ति पाठ के पश्चात् आयोजन का समापन हुआ। गुप्ता परिवार की ओर से समस्त ब्रह्मचारिणीयों और अतिथियों के लिए दाल-बाटी, चूरमा की उत्तम भोजन व्यवस्था की गई तथा गुप्ता परिवार के सदस्यों द्वारा प्रेमपूर्वक भोजन परोसा गया।

● सुखदेव शर्मा

प्रकाशक : वैदिक संसार (मासिक पत्रिका), इन्दौर (म.प्र.)

आर्य समाज राजोदा (देवास) के साप्ताहिक सत्संग में आर्य वीरों का किया गया अभिनन्दन

मेरी ज्येष्ठ सुपुत्री श्रीमती जयश्री शर्मा, शिक्षिका हाई स्कूल सिरोलिया, जिला-देवास की प्रेरणा से उसके विद्यालय के प्रतिभावान छात्र अजय विश्वकर्मा (शिक्षा में विशेष उपलब्धि अर्जित करने पर दिनांक १३ अगस्त २०२३ को मध्यप्रदेश शासन द्वारा स्कूटी प्रदान की जा चुकी है), अभिषेक तथा दीपक ने अपनी शिक्षिका की प्रेरणा से आर्यवीरदल शिविर, नर्मदापुरम (होशंगाबाद), म. प्र. में सफलतापूर्वक भाग लेकर उपलब्धि अर्जित करने पर वैदिक साहित्य भेंट कर अभिनन्दन आर्य समाज राजोदा, जिला-देवास म. प्र. के साप्ताहिक यज्ञ-सत्संग के समापन पश्चात् अल्पाहार अवकाश उपरान्त आर्य समाज राजोदा के प्रधान ठाकुर हरिसिंह जी की अध्यक्षता में तथा किसी आर्य समाज में जीवन में प्रथम बार उपस्थित सुश्री जयश्री सिंग कंसलटेंट महात्मा गांधी शासकीय चिकित्सालय देवास एवं सुश्री निशा नागर शिक्षिका सी एम राइस मॉडल स्कूल देवास की विशेष उपस्थिति में किया गया। सुश्री जयश्री सिंग एवं सुश्री निशा नागर का भी वैदिक साहित्य भेंट कर अभिनन्दन किया गया। आर्य वीरों के उपस्थित माता-पिता का भी अभिनन्दन किया गया तथा आर्य वीरों ने अपने अनुभव को प्रस्तुत किया। मेरे दौहित्र आदित्य को भी अध्यक्ष जी के करकमलों द्वारा साहित्य भेंट किया गया। प्रेरणादाई उद्बोधन वैदिक संसार के प्रकाशक सुखदेव शर्मा का हुआ तथा अध्यक्षीय उद्बोधन के पश्चात् आयोजन का समापन किया गया।

● **सुखदेव शर्मा, इंदौर**

महर्षि दयानन्द आश्रम, बड़वानी पर हर्षोल्लासपूर्वक स्वतन्त्रता दिवस मनाया गया

ईश्वर की असीम तथा महती कृपा से दिनांक १५ अगस्त को ७७ वाँ स्वतन्त्रता दिवस अत्यन्त हर्षोल्लासपूर्वक महर्षि दयानन्द सरस्वती विद्यार्थी आवास आश्रम, बड़वानी (म. प्र.) पर मनाया गया। परीक्षाओं का समय होने के उपरान्त भी जो विद्यार्थी आश्रम पर उपस्थित थे उनमें से अधिकांश उपस्थित हुए। सर्वप्रथम ८:३० बजे उपस्थित विद्यार्थियों की भावना अनुसार आश्रम संचालक सुखदेव शर्मा (मेरे द्वारा) ध्वज फहराया गया। ध्वज फहराने के बाद सामूहिक रूप से राष्ट्रगान गाया गया एवं उद्घोष किया गया। ध्वजारोहण प्रक्रिया पूर्ण कर यज्ञ स्थल पर पहुँचकर संध्योपासना के मन्त्रों का पाठ किए जाने के पश्चात् बृहद देवयज्ञ में राष्ट्रीय प्रार्थना मन्त्र तथा संगठन सूक्त के मन्त्रों की विशेष आहुतियाँ प्रदान की गई। बच्चों की अल्प उपस्थिति एवं समय अभाव के कारण परतन्त्रता का काला इतिहास और स्वतन्त्रता का संघर्षपूर्ण इतिहास विषय पर प्रकाश सायंकालीन संध्योपासना पश्चात् डाला गया। कु. प्रज्ञा बामनका, कु. सुनीता चौहान, कु. मोनिका डॉवर, कु. उर्मिला कनोजे, कु. रमिला सोलंकी, कु. वैशाली पंवार, कु. रानी बघेल, कु. रिंकी टैगोर, कु. माया रोमडे, कु. ज्योति सोलंकी, कु. ममता मौर्य, कु. लंका मौर्य, कु मुन्नी रावत, कु. रंजना तोमर, पर्वत मौर्य, मांगीलाल टैगोर एवं मैं और मेरी धर्मपत्नी उपस्थित रहे।

● **सुखदेव शर्मा**

आश्रम संचालक एवं प्रकाशक वैदिक संसार मासिक पत्रिका

सहकारी निरीक्षक के आश्रम पधारने पर सत्यार्थ प्रकाश किया भेंट

दिनांक १६ अगस्त को श्रीमती प्रभा बघेल, सहकारी निरीक्षक , सहायक आयुक्त सहकारिता विभाग, जिला बड़वानी तथा निर्वाचन नामावली की सेक्टर प्रभारी का वार्ड क्रमांक १४ के निरीक्षण समय महर्षि दयानन्द सरस्वती विद्यार्थी आवास आश्रम, बड़वानी पर आगमन हुआ। **समस्त आश्रमवासी आपके आश्रम आगमन पर आपका वन्दन-अभिनन्दन करते हुए आपका आभार प्रकट करते हैं।**

आपके आगमन से हर्षित हो आपके स्वागतार्थ आश्रम संचालक सुखदेव शर्मा व श्रीमती दुर्गा शर्मा के द्वारा आपको वैचारिक क्रान्ति का स्त्रोत, स्वदेशी राज्य को सर्वोपरि और सर्वोत्तम बताने वाला, देश की स्वतन्त्रता का आधार, क्रान्तिकारियों की अतिप्रिय प्रेरणादाई पुस्तक, महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा १८७५ में रचित अमरग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की प्रति तथा वैदिक संसार मासिक पत्रिका की प्रति भेंट की गई।

श्रीमती प्रभा बघेल के पतिदेव डॉ. बलराम जी बघेल शहीद भीमा नायक शा.स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बड़वानी में सहायक प्राध्यापक पद पर सेवारत है। आश्रम परिवार आपके सुख-शान्ति, समृद्धि, आरोग्यता युक्त उज्जवल भविष्य की कामना करता हैं।

आर्य समाज मल्हारगंज, इन्दौर के वार्षिक चुनाव सम्पन्न

इंदौर। आर्य समाज मल्हारगंज, इन्दौर का वार्षिक चुनाव डॉ. अखिलेशचन्द्र शर्मा की अध्यक्षता में सर्वसम्मति से निर्विरोध सम्पन्न हुआ। डॉ. दक्षदेव गौड़ को प्रधान, श्री रमेशचन्द्र चौहान एवं श्रीमती उर्मिला पंवार को उप प्रधान, डॉ. विनोद अहलुवालिया को मन्त्री, उमेश गुप्ता को उपमन्त्री, मुकेश गोपालानी को कोषाध्यक्ष, हरिसिंह ठाकुर को पुस्तकाध्यक्ष नियुक्त किया गया। आर्यवीर दल अधिष्ठाता स्नेहिल शर्मा एवं सदस्य श्रीमती शशि गुप्ता, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्रीमती मनोरमा आर्या, श्री अजय रेनीवाल को नियुक्त किया गया।

सुन्दर देश मॉरीशस से एक पत्र आर्यों के नाम

आर्य समाज मन्दिर,
महाराणा प्रताप स्ट्रीट,
पोर्ट लुईस, मॉरीशस
२० अगस्त २०२३,
रविवासर:

समादरणीय आर्य प्रवर सादर नमस्ते!
ईश्वर कृपयात्र कुशलं तत्रास्तु!

मुम्बई से एयर इण्डिया के विमान ए आई ६७४९ से छह घण्टे की यात्रा के उपरान्त २९ जुलाई को प्रात:काल ७:१५ पर हम पोर्ट लुईस पहुँचे। ये मेरी सत्रहवीं विदेश यात्रा है।

१८ अगस्त को प्रात: ९:४० पर मॉरीशस के महामहीम राष्ट्रपति श्री पृथ्वीराज सिंह जी रूपन एवं आपकी धर्मपत्नी श्रीमती संयुक्ता जी से राष्ट्रपति भवन जाकर भेंट की। अंग्रेजी भाषा का सत्यार्थ प्रकाश, मनुस्मृति आध्यात्मिक साहित्य भेंट किया। वेद, समाज, राष्ट्र, मनुस्मृति के विषय में महामहीम ने दीर्घकाल तक चर्चा की। समाज व देश की बुराइयों को दूर करने के लिये आर्यसमाज को अधिक गतिशील रहने का आग्रह आप कर रहे थे। महर्षि दयानन्द जी की द्विजन्मशताब्दी पर भारत के अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन २०२५ में हमने आपको आमन्त्रित किया। सायं ३:३० पर भारत की राजदूत श्रीमती के. नन्दिनी सिंगला जी से एक शिष्टमण्डल के साथ जाकर भेंट की तथा वैदिक साहित्य भेंट किया। आपकी रुचि देखकर लगभग एक घण्टे तक हमने वैदिक त्रैतवाद व कर्मफल सिद्धान्त पर चर्चा की। आप मूलत: कर्नाटक से है व धर्म के प्रति जिज्ञासु है। जुलाई २००८ व अगस्त २०१० में हम मॉरीशस वेदप्रचारार्थ आ चुके है। तब भी तत्कालीन राष्ट्रपति जी से मिलकर विचार विमर्श किये थे।

दक्षिण अफ्रीका महाद्वीप में हिन्द महासागर के दक्षिण-पश्चिम में स्थित मॉरीशस को अमेरिकी लेखक मार्क ट्वेन ने स्वर्ग सदृश बताया था। दिल्ली-मुम्बई के संयुक्त क्षेत्रफल के बराबर २०४० वर्ग किलोमीटर का ये सुन्दर सा देश है। १५९८ में हॉलैण्ड के डचो ने इस निर्जन द्वीप पर कदम रखा अपने युवराज मोरिस के नाम पर इसका नामकरण मॉरिशस कर दिया। १६३८ में स्थायी बस्ती बसा दी। १७१५ में फ्रांस और बाद में ब्रिटिश अंग्रेजों ने कब्जा कर लिया। १२ मार्च १९६८ को श्री शिवसागर रामगुलाम जी के नेतृत्व में बिना बलिदान के इसे स्वतन्त्रता प्राप्त हुई। समुद्री सीमा १५० किलोमीटर है। आसपास ४९ निर्जन द्वीप समूह है। देश की जनसंख्या १४ लाख है जिनमें ४९% हिन्दू, ३०% ईसाई, १८% मुस्लिम, ४% नास्तिक व अन्य हैं। अफ्रीकी देशों व भारत के बिहार, बंगाल, आन्ध्र, महाराष्ट्र उत्तरप्रदेश आदि प्रान्तों से अंग्रेजों के द्वारा १८३४ में हजारों मजदूरों को अनुबन्ध करके लाये गए। उनकी ही छटवी पीढ़ी-सन्तति उच्च शिक्षित हो देश को सम्भाल रही है। ब्रिटिश सेना के कुछ हिन्दू सैनिकों से आर्य समाज की विचारधारा १८९७ में यहाँ आई। १९६३ में प्रथम आर्य समाज स्थापित किया गया। स्त्री शिक्षा, अन्ध-विश्वास निर्मूलन, देश स्वातन्त्र्य, पंच महायज्ञ परम्परा सहित राष्ट्र उत्थान में आर्यों ने अद्भुत भूमिका निभाई है। तीन सभाओं के अन्तर्गत ६०० आर्य मन्दिर देश में कार्य कर रहे है लगभग ढाई लाख आर्य अनुयायी कहे जा सकते हैं।

जनवरी में इन्दौर के प्रवासी सम्मेलन में आयोजन मिले थे तब ही हमारी इस यात्रा की भूमिका बन गई थी। २३ दिनों के स्वल्प प्रवास में पूरे देश के विभिन्न अंचलो में हमारे १८ यज्ञोपदेश, आकाशवाणी में १६, दूरदर्शन पर ७ व्याख्यान रिकार्ड किये गये। ये अक्टूबर तक प्रसारित होते रहेंगे। अत्रत्य पण्डित-पण्डिताओं को योगदर्शन के गूढ़ सूत्रों को पढ़ाया। एक यज्ञ में देश की उप प्रधानमन्त्री श्रीमती लीलादेवी जी, एक अन्य यज्ञ में सांसद सुश्री सुभाषिणी लक्ष्मण राय जी ने आहुतियाँ प्रदान की। वेद मन्त्रों या नीतिकार के श्लोकों के आधार पर सिद्धान्तों के प्रतिपादन करने के साथ माँसाहार, अव्यवस्थित दिनचर्या व अन्धविश्वास खण्डन का प्रयास तो हम किये लेकिन अभी बहुत कार्य करना आवश्यकीय है।

९ जिलों में ३३६ ग्राम है। भारत सरकार पुत्रवत् मानकर शिक्षा, स्वास्थ्य, मेट्रो आदि के लिये करोड़ों रुपये का सहाय कर चुकी है व करती है। गंगा तालाब, मेरिन सफारी, सात प्रकार की मिट्टी, १०८ फीट की दुर्गा जी व शिव जी की प्रतिमा, ज्वालामुखी, बॉटनिकल गार्डन में सैकड़ों वृक्ष, विशालकाय कछुआ, सफेद कमल, समुद्र तट, मछलीघर आदि दर्शनीय स्थल है। एक सुयोग्य गुरुकुलीय स्नातक को अत्रत्य आर्य उच्च वेतनमान पर नियुक्त करना चाहते हैं। २१ अगस्त को नैरोबी होते हुए हम दुबई जा रहे हैं। आगामी पत्र वही से लिखेंगे।

'सारी दुनिया से हाथ धोकर देखो,
जो कुछ है रहा-सहा वो खोकर देखो।
क्या तुमसे कहूँ, इसमें है संकोच कैसा,
एक बार जरा वेदमाता का होकर देखो।।'

गृह मन्दिर व आर्य समाज में सभी को नमस्ते कहें।

आपका अपना ही

● आचार्य आनन्द पुरुषार्थी
अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक मिशनरी
चलभाष : ७९८७३७२३०५

जरूरतमंद छात्र-छात्राओं को पाठ्य सामग्री वितरित

दिनांक २४.७.२०२३ को आर्य समाज रावतभाटा के तत्वावधान में महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय झालरबावडी चारभुजा में कक्षा एक से पाँच तक के १५० जरूरतमंद छात्र/ छात्राओं को पाठ्यसामग्री वितरित की गई। कुल ४५० कापियाँ, १५० रबरयुक्त पेंसिल राजस्थान परमाणु बिजली घर के अखिलेश कुमार और मंजुल मयंक के सौजन्य से प्रदान किया गया। विद्यालय की प्रधानाचार्या कलिका जैन ने अखिलेश कुमार और मंजुल मयंक का इस सहयोग के लिए आभार प्रकट किया। आर्य समाज के मंत्री ओमप्रकाश आर्य ने विद्यार्थियों को गायत्री मंत्र का उच्चारण करवाया और अपने माता-पिता, शिक्षक, बड़ों को अभिवादन करने की सीख दी। प्रधान विनोद कुमार त्यागी ने विद्यार्थियों को शुभकामनाएँ प्रेषित की। इस अवसर पर विद्यालय के शिक्षक/शिक्षिका नियति व्यास, ललिता वधवा, शोभाराम मीणा, कमलेश धाकड़, हेमराज मीणा, ममता मीणा, आशा शर्मा, कृष्णा गुप्ता, मकसूद अली, रविकला चतुर्वेदी, सुरेन्द्र यादव, रविकान्त मीणा, शिप्रा त्रिपाठी, सोनू जैन, मधुबाला मलेठिया , सुनीता व्यास, हेमंत मीणा, राधिका नागर, नरेंद्र मीणा, गजेंद्र कुमार, एकता मीणा, जयमाला मीणा, अंतिमा जैन, धनवंती निहलानी, सीमा नागर, शोभा नामदेव उपस्थित रहे। अखिलेश कुमार और मंजुल मयंक ने विद्यार्थियों को आशीर्वाद दिया। बच्चे बहुत खुश हुए।

शिक्षक दिवस पर शिक्षकों का सम्मान

दिनांक ०५ सितम्बर २०२३ को शिक्षक दिवस के पावन पर्व पर आर्य समाज कुशहवा बाजार, जिला सन्त कबीर नगर के तरफ से वीर एकलव्य आदर्श विद्या मन्दिर घोरहट, कुशहवा बाजार में अध्यापन कार्य कर रहे सभी राष्ट्र, समाज तथा भविष्य निर्माणकर्ताओं को सम्मानित किया गया। उक्त आर्य समाज में मासिक यज्ञ सम्पन्न होता है। छात्राएँ यज्ञ कराती हैं। उन्हें हर महीने सम्मानित किया जाता है।

● **राजेश कुमार पाल,** ***मन्त्री, प्रधान श्रीदयाल निषाद***
आर्य समाज कुशहवा बाजार, सन्त कबीर नगर (उ.प्र.)

श्रावणी पर्व महोत्सव के अन्तर्गत आयोजन सम्पन्न

आर्योदय वैदिक पर्व समिति इन्दौर (म.प्र.) के तत्वावधान में श्रावणी पर्व महोत्सव (वेद प्रचार सप्ताह) दिनांक २९ अगस्त से ७ नवम्बर २०२३ तक विभिन्न निजी स्थानों तथा आर्य समाजों पर आयोजनों के द्वारा वेद ज्ञान गंगा इन्दौर महानगर में प्रवाहित हुई। इसी शृंखला के अन्तर्गत दिनांक ४ सितम्बर २०२३ को प्रात:काल आर्य समाज मल्हारगंज, इन्दौर पर कार्यक्रम आयोजित किया गया।

आर्य समाज मल्हारगंज के यशस्वी प्रधान डॉ दक्षदेवजी गौड़ व आपके कार्यों में कन्धे से कन्धा मिलाकर सहयोग करने वाली आपकी सहधर्मिणी श्रीमती विमला गौड़ के मुख्य यजमानत्व में तथा संस्था पुरोहित भूदेव जी शास्त्री के ब्रह्मत्व में देवयज्ञ सम्पन्न किया गया। ईश वन्दना यामिनी गौड़ द्वारा प्रस्तुत की गई। श्रावणी पर्व महोत्सव के लिए पधारी आर्य जगत् की विदुषी भजनोपदेशिका श्रीमती पुष्पा जी शास्त्री बदायूँ (उ.प्र.) तथा मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के उपदेशक श्री दिलीप जी शास्त्री ने भजनोपदेश प्रस्तुत किए।

उत्तर प्रदेश के हापुड़ से पधारे मूर्धन्य वैदिक विद्वान् आचार्य ओमव्रत जी तथा हरियाणा के पंचकूला से पधारे दर्शन शास्त्रों के मर्मज्ञ आचार्य प्रभामित्र जी का बहुत ही उत्तम वेद व्याखान हुआ। समस्त विद्वतजनों के साथ वैदिक संसार के प्रकाशक सुखदेव शर्मा का भी अभिनन्दन आर्य समाज मल्हारगंज की ओर से श्री दिनेश जी गुप्ता के करकमलों द्वारा किया गया। इन्दौर नगर की विभिन्न आर्य समाजों के पदाधिकारीगण, आर्य समाज छावनी के धर्माचार्य आचार्य प्रणवीर जी शास्त्री तथा बड़ी संख्या में मातृशक्ति एवं आर्यजन उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन संस्था मन्त्री डॉ. विनोद जी अहलूवालिया द्वारा तथा आभार प्रदर्शन संस्था प्रधान डॉ. दक्षदेव जी गौड़ द्वारा किया गया।

आर्य समाज का अर्थ

महर्षि वेदव्यास जी ने निम्न ८ गुणों से युक्त व्यक्ति को आर्य कहा है।

ज्ञानी तुष्टश्च दान्तश्च सत्यवादी जितेन्द्रियः।
दाता दयालुर्नम्रश्च स्यादार्यो ह्यष्टभिर्गुणैः।।

अर्थ :- जो ज्ञानी हो, सदा सन्तुष्ट रहने वाला हो, मन को वश में करने वाला हो, सत्यवादी, जितेन्द्रिय, दानी, दयालु और नम्र हो, वह आर्य कहलाता है।

इस्लाम मुक्त भारत-ISLAM FREE INDIA (IFI)

गतांक पृष्ठ २८ से आगे

● राधाकिशन रावत
१००६,जीवाभाई टॉवर, बोडकदेव, अहमदाबाद (गुजरात)
चलभाष : ९४२८५९४०५७

(६) आजादी के संघर्ष में : मुस्लिमों ने स्वार्थवश हिन्दुओं का साथ दिया। इनकी छुपी योजना थी कि जब अंग्रेज भारत छोड़कर जाएँगे तो पुनः मुस्लिम यहाँ शासन करेंगे, जैसा कि अंग्रेजों के आने से पहले था।

(७) पाकिस्तान बनने का विरोध : कट्टर मुस्लिमों (जमायते-इस्लामी मौलाना मोहदूदी) ने पाकिस्तान बनाने का घोर विरोध किया था। उनका उद्देश्य पूरे भारत को इस्लामिक स्टेट बनाना था अत: छोटे से हिस्से को लेकर ये प्रसन्न नहीं थे। अभी भी इनकी यही योजना है और पूरी निष्ठा के साथ इस तैयारी में लगे हैं। सिर्फ चालबाजी से मुस्लिम लीग विभाजन कराने में सफल हो गई थी।

(८) अब कुछ बात हिन्दुओं की : महाभारत काल के पश्चात् से ही देश में अनेक विकृतियाँ आ गईं। उसके बाद सदियों की गुलामी के काल में मुगलों, अंग्रेजों व स्वार्थी तत्वों ने हमारा सब कुछ बदल दिया, इतिहास, शिक्षा पद्धति, धार्मिक मान्यताएँ, परम्पराएँ, रीति-रिवाज आदि। आर्यो-हिन्दुओं को अनपढ़ गँवार, सिद्धान्तहीन, दीन-हीन, शोषण योग्य, सपेरे- लुटेरों का देश आदि चित्रित किया। हमारी कुछ कमियों को जात-पात, ऊँच-नीच, छुआछुत, वर्ण व्यवस्था को खूब हवा देकर, आपस में खूब वैमनस्य पैदा किया। आपस में लड़ाई झगड़े करवाए आदि। फूट डालो और राज्य करो की नीति से कार्य किया। भारत की आजादी के बाद भी शासक वर्ग (विशेषकर कांग्रेस) की यही चाल रही। नतीजा साफ है हम हिन्दू बुरी तरह विभाजित है, दुश्मन से लड़ने के स्थान पर हम आपस में लड़ रहे हैं। गलत व अधूरी शिक्षा के अनेक नमूने हैं, आवश्यकता है सही शिक्षा, सही अर्थ करने की जैसे—

१. 'अहिंसा परमोधर्मः, धर्म हिंसा तथैव चः' हमें अधूरा पाठ ही पढ़ाया जाता रहा कि **'अहिंसा पालन परम धर्म'** है। इसकी आधी लाइन छिपाई गई की 'धर्म रक्षा में की गई हिंसा इससे भी श्रेष्ठ है।' अहिंसा का यथार्थ अर्थ है कि 'अकारण किसी को दुःख नहीं दे।' किन्तु मुस्लिमों के बेगुनाहों पर किए गए अन्याय, अत्याचार, आतंक, हिंसा आदि तो अकल्पनीय है। इनके लिए तो गैर-मुस्लिमों को जीने का अधिकार भी नहीं। ऐसी स्थिति में आतंकवादियों पर हिंसा ही **'श्रेष्ठ धर्म है'**।

२. मिथ्या धारणाएँ : जैसे (ए) धर्म हमारी रक्षा करेगा (बी) भगवान अवतार लेंगे, दुष्टों का नाश करेंगे (सी) होगा वही जो ईश्वर इच्छा होगी (डी) होगा वही जो भाग्य में लिखा है आदि। अधिकांश हिन्दू अनपढ़ या कम पढ़े लिखे हैं, धर्म में अन्ध श्रद्धा रखते हैं, धर्म भीरू हैं। स्वयं तो शास्त्र पढ़ नहीं सकते, अन्यों के कहे पर विश्वास कर लेते हैं। दुर्भाग्यवश हमारे धर्मशास्त्रों में अनेक प्रक्षिप्तियाँ भी की गई है या स्वार्थी तत्व संस्कृत कथनों का गलत प्रस्तुतीकरण करके अपना हित साधते हैं। थोड़ी सी भी बुद्धि से विचार करें तो शास्त्रों का स्पष्ट आदेश हैं—

(ए) जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है।

(बी) ईश्वर उनकी सहायता करता जो स्वयं की सहायता करते 'गॉड हेल्प दोज, हू हेल्प देमसेल्वस।

(सी) ईश्वर हमारी जगह युद्ध करने नहीं आएँगे श्रीकृष्णजी ने अर्जुन को शस्त्र (धनुष) उठाने का उपदेश दिया था।

(डी) गीता-वचन याद रखें, स्वधर्म का पालन करें, स्व-कर्म में तत्पर रहें। फल की इच्छा त्याग दें।

(ई) शरीर तो नाशवान है, आत्मकल्याण का मार्ग चुनें।

(एफ) भाग्यवादी नहीं, पुरुषार्थी अपना भाग्य निर्माता है।

(जी) देवासुर संग्राम निरन्तर क्रिया है, असुरों को मारना ही परमधर्म है। आदि

३. वर्ण व्यवस्था (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) का सही अर्थ : स्वार्थी तत्वों ने वर्ण-व्यवस्था को नितान्त विकृत रूप में प्रस्तुत कर हम हिन्दुओं को बुरी तरह विभाजित कर दिया है और अभी भी उसका गैर लाभ उठा रहे हैं। कृपया इसे ठीक से समझें इन चारों का (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) का संयुक्त नाम आर्य है। आर्य अर्थात् श्रेष्ठ पुरुष कोई ऊँच-नीच नहीं, कोई छूत-अछूत नहीं, अपनी-अपनी योग्यतानुसार कार्य विभाजन में संयुक्त और अपने-अपने कार्य में बदलाव की भी पूरी छूट पर विचार करें :

(ए) जब हम बच्चों को शिक्षा विद्या पढ़ाते तो ब्राह्मण

(बी) जब हम बच्चों की, देश, परिवार, समाज की रक्षा करते तो क्षत्रिय।

(सी) जब हम बच्चों, परिवार, समाज का भरण-पोषण करते तो वैश्य

(डी) जब हम बच्चों, बूढ़ों, रोगियों की सेवा सुश्रूषा करते तो शूद्र

क्या हम अपना, अशक्तों का मल साफ नहीं करते? हेंस वी आर फोर इन वन एंड वन इन फोर, लेकिन वर्तमान की पुकार है कि हम सब क्षत्रिय बनें। अपनी समाज की, देश की, धर्म की रक्षा में शस्त्र उठाएँ। अन्यथा हमेशा-हमेशा के लिए हम म्लेच्छों के गुलाम बन जाएँगे।

४. न्याय बनाम दया : इन दोनों शब्दों को हम ठीक-ठीक समझें। दोनों का भाव (मतलब उद्देश्य) केवल एक ही है।

(ए) न्याय : शास्त्रों की आज्ञा है कि हम ईश्वर के गुण धारण करें। ईश्वर परम न्यायकारी है बिना पक्षपात के न्याय करता है। जो पाप गुनाह और अपराध करता है। उसे अवश्य फल (दण्ड सजा) देता है। अतः हम मनुष्य भी न्यायकारी बनें और आतताईयों द्वारा निर्दोषों पर अकारण असंख्य जघन्य जुल्मों के बदले में उन्हें अवश्य दण्ड (सजा, जेल, अंग-भंग, मृत्युदण्ड आदि) दें। यह हमारा सामाजिक दायित्व भी है और पुनीत कर्तव्य भी। गैर-मुस्लिमों की दृष्टि में इस्लाम समर्थकों को दण्ड देना न्याय है। **(क्रमशः आगामी अंक में)**

चित्रक हरीतकी अवलेह

धूल-धुएं वाला दूषित वातावरण, अनियमित दिनचर्या, ग़लत और दूषित पदार्थों का सेवन करना आदि कारणों से शरीर की रोग प्रतिरोधक शक्ति कम होने लगती है जिससे कोई भी बीमारी जल्दी ठीक नहीं हो पाती। यही कारण है कि कई लोगों को अक्सर सर्दी जुकाम हो जाता है और कई दिनों तक ठीक नहीं होता। थोड़े दिनों बाद इसे पुराना जुकाम कहा जाने लगता है। सर्दी जुकाम को दबा दिया जाए, गलत दवाइयाँ दी जाएँ तो जुकाम बिगड़ जाता है। और नई व्याधियाँ पैदा हो जाती हैं। इस स्थिति का कारगर ढंग से सामना करने के लिए चित्रक हरीतकी अवलेह का सेवन गुणकारी होता है।

घटक द्रव्य – चित्रक की जड़ का काढ़ा, आँवले का रस या काढ़ा, गिलोय का काढ़ा, दशमूल काढ़ा और गुड़- पाँचों द्रव्य आधा-आधा किलो, बड़ी हरड़ का बारीक चूर्ण ३०० ग्राम, शहद ४० ग्राम, सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, दालचीनी, तेजपात और इलायची-सब २०-२० ग्राम और यवक्षार तीन ग्राम।

निर्माण विधि– पाँचों काढ़े, हरड़ का चूर्ण और गुड़ मिला कर बड़े बर्तन में डालें और आग पर पकाएँ। जब गाढा अवलेह बन जाए तब सोंठ से इलायची तक के द्रव्य और यवक्षार कूट पीस कर बारीक चूर्ण करके अवलेह में डाल दें। अब इसे ढक कर ठण्डा होने के लिए रख दें। दूसरे दिन बिल्कुल ठण्डा हो जाने पर इसमें ४० ग्राम शहद डाल कर अच्छी तरह मिला दें। यदि शुद्ध शहद न मिले तो काढ़ा उबालते समय ४० ग्राम गुड़ की चाशनी बना कर डाल दें।

मात्रा और सेवन विधि– एक-एक चम्मच सुबह शाम गर्म दूध के साथ लें।

लाभ– पुराने बिगड़े हुए जुकाम और बार-बार होने वाले जुकाम से पीछा छुड़ाने के लिए चित्रक हरीतकी अवलेह उत्तम औषधि है। इसके सेवन काल में, षडबिन्दु तैल की २-२ बूंद नाक में टपकाने से विशेष लाभ होता है। इस योग में अभ्रक रस १ रत्ती मिला कर सेवन करने से इस योग के गुण और बढ़ जाते हैं। इस योग का सेवन करते समय खटाई और खट्टे पदार्थों का सेवन न करें।

सभी प्रकार की आयुर्वेदिक दवाइयों, जड़ी बूटी और ड्राई फ्रूट्स के लिए संपर्क करें :- **प्रभात आयुर्वेदिक संस्थान**

आर्य समाज मंदिर, मार्केट मनकामेश्वर मंदिर के पीछे,

पुराना बस स्टैंड, देवास (मध्य प्रदेश)

चलभाष : ८१०९९५३४१०

बिहार राज्य स्तरीय सत्य सनातन वैदिक धर्म प्रचार यात्रा

आर्ष गुरुकुल दयानन्द वाणी, जरैल, जिला मधुबनी, बिहार से दिनांक २२ मार्च २०२३ को प्रारम्भ होकर लगातार ४ जुलाई २०२३ तक संचालित होने के पश्चात् वर्षा के कुछ दिनों के लिए रोक दिया गया था। इसे पुन: दिनांक १ सितम्बर २०२३ से सिवान जिला के आन्दर प्रखण्ड से प्रारम्भ किया गया है। दिनांक १ सितम्बर को इसी प्रखण्ड के महमूदपुर ग्राम में आचार्य श्री धर्मबन्धु आर्य जी के गृह पर देवयज्ञ किया गया। यहाँ आर्य समाज आर्य नगर, महमूदपुर का गठन किया गया। श्री धर्मबन्धु जी को प्रधान बनाया गया। इसी ग्राम के मध्य विद्यालय में बच्चों के बीच चरित्र निर्माण सम्बन्धी कार्यक्रम किया गया। प्रधानाध्यापक जी को सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया गया। फिर प्रखण्ड कार्यालय जाकर प्रखण्ड विकास पदाधिकारी आन्दर और अंचलाधिकारी आन्दर को सत्यार्थ प्रकाश भेंट किये गये। थाना प्रभारी आन्दर को सत्यार्थ प्रकाश भेंट कर प्रखण्ड कार्यालय रघुनाथपुर गए। प्रखण्ड विकास पदाधिकारी रघुनाथपुर को सत्यार्थ प्रकाश भेंट किए। थाना प्रभारी नहीं मिले। ए एस आई को सत्यार्थ प्रकाश भेंट कर प्रखण्ड कार्यालय सिसवन गए। प्रखण्ड विकास पदाधिकारी नहीं थे। बड़ा बाबू को सत्यार्थ प्रकाश भेंट किए। फिर अंचलाधिकारी सिसवन को सत्यार्थ प्रकाश भेंट किए। थाना प्रभारी नहीं थे। महिला एएसआई को सत्यार्थ प्रकाश भेंट किए, प्रखण्ड कार्यालय हसनपुर गए। प्रखण्ड विकास पदाधिकारी एवं अंचलाधिकारी सिसवन जिला सिवान को सत्यार्थ प्रकाश भेंट कर थाना गए,यहाँ भी ए एस आई को सत्यार्थ प्रकाश भेंट किए। फिर प्रखण्ड बड़हरिया ग्राम हरदोबारा के श्री राघोसिंह जी के घर रात्रि विश्राम हुआ। दिनांक २ सितम्बर २०२३ को श्री राघोसिंह जी के घर ही देवयज्ञ किया गया। भोजनकर मध्य विद्यालय पिपरा प्रखण्ड पचरुखी गए। बच्चों के बीच चरित्र निर्माण सम्बन्धी कार्यक्रम हुआ। वहाँ से प्रखण्ड कार्यालय बड़हरिया गए। प्रखण्ड विकास पदाधिकारी नहीं थे। कार्यालय में बड़ा बाबू को सत्यार्थ प्रकाश भेंट कर थाना गए वहीं अंचलाधिकारी भी थे। अंचलाधिकारी एवं थाना प्रभारी को सत्यार्थ प्रकाश भेंट कर सिवान जिला कार्यालय गए। जिला

श्रद्धानन्द आर्य समाज चिचोली का वार्षिकोत्सव

दिनांक : २५ से २९ अक्टूबर २०२३ तक

अत्यन्त हर्ष के साथ सूचित किया जाता है कि शताधिक वर्षीय प्राचीन आर्य समाज चिचोली, जिला बैतूल, मध्य प्रदेश का वार्षिकोत्सव प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी हर्षोल्लास पूर्वक मनाया जा रहा है। जिसमें समस्त सनातन धर्म प्रेमी सादर आमन्त्रित हैं।

-: आमन्त्रित विद्वान् :-

सुश्री अंजलि आर्या, करनाल, हरियाणा

स्वामी शान्तानन्द जी सरस्वती,

दर्शनाचार्य दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड, गुजरात

स्वामी सूर्यदेव जी, हरिद्वार, उत्तराखण्ड

स्वामी मोक्षानन्द जी, नागदा जंक्शन, मध्यप्रदेश

सम्पर्क : अशोक आर्य (प्रधान), ९९९३९६५९४६

पदाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक नहीं मिले। वहीं अनुमण्डल पुलिस पदाधिकारी से मिलकर उन्हें सत्यार्थ प्रकाश भेंट किए। अनुमण्डल कार्यालय गए वहाँ वे भी नहीं थे। पुलिस अधीक्षक जी के निवास पर गए वहाँ मिलने का अवसर नहीं दिया। सत्यार्थ प्रकाश एक कर्मचारी को देकर अनुमण्डल पदाधिकारी के निवास पर गए। वे भी नहीं मिले। उनके कर्मचारी को सत्यार्थ प्रकाश भेंट किए। प्रखण्ड कार्यालय सिवान सदर गए। प्रखण्ड विकास पदाधिकारी को सत्यार्थ प्रकाश भेंट किए। अंचलाधिकारी नहीं थे उनके कार्यालय में सत्यार्थ प्रकाश दे दिए। फिर महिला थाना जाकर थाना प्रभारी को सत्यार्थ प्रकाश भेंट किए। वहीं एससीएसटी थाना प्रभारी को सत्यार्थ प्रकाश भेंट किए। जिला सत्र न्यायाधीश के निवास पर गए। उन्हें सत्यार्थ प्रकाश भेंट किए। रात्रि विश्राम आर्य समाज मन्दिर सिवान में हुआ। दिनांक ३ सितम्बर २०२३ को आर्य समाज मन्दिर प्रांगण में चल रहे दो टयूशन केन्द्र पर बारी बारी से बच्चों के बीच चरित्र निर्माण सम्बन्धी कार्यक्रम हुआ। आर्य समाज सिवान के साप्ताहिक सत्संग में भाग लिया। आर्य समाज के अन्तर्गत बहुत सारे प्रकल्प चल रहे हैं। परन्तु समाज की स्थिति ठीक नहीं है। मन्त्री जी एवं प्रधान जी से इसे ठीक करने और आर्य समाज के द्वारा वेद प्रचार का दैनिक , साप्ताहिक एवं मासिक कार्यक्रम आयोजित करने का निवेदन किया। वहाँ से प्रखण्ड कार्यालय हुसैनगंज गए। प्रखण्ड विकास पदाधिकारी को सत्यार्थ प्रकाश भेंट किए। उनके आदेश से उनके साथ बैठे एक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री आशीष जी एवं राजनेता श्री राजेश यादव जी को भी सत्यार्थ प्रकाश भेंट किए। थाना हुसैनगंज गए। थाना प्रभारी नहीं थे। एस आई को सत्यार्थ प्रकाश भेंट कर प्रखण्ड कार्यालय पचरुखी गए। वहाँ कोई भी नहीं मिले। एक सिपाही को प्रखण्ड विकास पदाधिकारी एवं अंचलाधिकारी हेतु सत्यार्थ प्रकाश दे दिए। थाना प्रभारी पचरुखी से मिलकर उन्हें सत्यार्थ प्रकाश भेंट किए। वहाँ से प्रखण्ड कार्यालय दारौंदा गए। वहाँ भी कोई अधिकारी नहीं मिले। एक कर्मचारी को प्रखण्ड विकास पदाधिकारी एवं अंचलाधिकारी हेतु सत्यार्थ प्रकाश भेंट कर थाना गए। थाना प्रभारी दरौंदा को सत्यार्थ प्रकाश भेंट किए। उपरोक्त सभी स्थानों में आर्य समाज सिवान के पुरोहित श्री विरेन्द्र जी आर्य साथ ही रहे। वहाँ से चलकर श्री वीरेन्द्र जी आर्य के घर जिरादेई प्रखण्ड के मुकुन्दपुर ग्राम पहुंचे। रात्रि विश्राम यहीं हुआ।

दिनांक ४ सितम्बर को श्री वीरेन्द्र आर्य जी के घर हवन किया गया। यहाँ भी आर्यसमाज मुकुन्दपुर नन्दपाली का गठन किया गया। श्री यमुनाप्रसाद जी आर्य को प्रधान, श्री विरेन्द्र जी आर्य को मन्त्री एवं श्री उमेश जी आर्य को कोषाध्यक्ष बनाया गया। भोजन के पश्चात् श्री आशीष कुमार जी के विद्यालय हुसैनगंज प्रखण्ड के उच्च विद्यालय मचकना गए। बच्चों के बीच बहुत सुन्दर कार्यक्रम हुआ। प्रधानाध्यापक सहित सभी शिक्षक-शिक्षिकाएं उपस्थित रहे। वहाँ से प्रखण्ड कार्यालय जिरादेई गए प्रखण्ड विकास पदाधिकारी एवं अंचलाधिकारी को सत्यार्थ प्रकाश भेंट कर प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्रप्रसाद जी की जन्म भूमि देखने गए। एक तख्त था जिसके बारे में लिखा था कि जब महात्मा गांधी जिरादेई आए थे तो इस पर सोए थे। वहाँ से प्रखण्ड कार्यालय दरौली गए। प्रखण्ड विकास पदाधिकारी नहीं मिले। उनके कार्यालय में सत्यार्थ प्रकाश दे दिए। अंचलाधिकारी को सत्यार्थ प्रकाश भेंट किए। थाना जाकर थाना प्रभारी दरौली को सत्यार्थ प्रकाश भेंट किए। वहाँ से प्रखण्ड कार्यालय गुठनी गए। अंचलाधिकारी के एक अधिकारी को सत्यार्थ प्रकाश भेंट किए। प्रखण्ड विकास पदाधिकारी निवास पर थे परन्तु उनका ड्राइवर मिलने नहीं दिया। उनके गाड़ी में सत्यार्थ प्रकाश छोड़ कर थाना गए। थाना प्रभारी गुठनी को सत्यार्थ प्रकाश भेंट कर सिवान सदर के भंटा पोखर ग्राम श्री राम नारायण जी यादव के घर पहुंचे। वहाँ ७ से ११ बजे तक सत्संग किया गया। रात्रि भोजन कर वहीं विश्राम हुआ।

दिनांक ५ सितम्बर को भंटा पोखर में देवयज्ञ के पश्चात् भोजन हुआ। फिर इसी ग्राम के स्वामीनारायण उच्च विद्यालय गए। बच्चों के बीच चरित्र निर्माण सम्बन्धी कार्यक्रम हुआ। यहाँ से श्री वीरेन्द्र जी किसी विशेष कार्यक्रम में चले गए। हम लोग वहाँ से प्रखण्ड कार्यालय मैरवा गए। प्रखण्ड विकास पदाधिकारी मैरवा को सत्यार्थ प्रकाश भेंट कर अंचलाधिकारी से मिलने गए, वे नहीं थे। कार्यालय में सत्यार्थ प्रकाश देकर थाना गए। थाना प्रभारी मैरवा को सत्यार्थ प्रकाश भेंट किए। ये आर्य समाज से पूर्व से ही जुड़े हैं। यहाँ से प्रखण्ड कार्यालय नौतन गए। प्रखण्ड विकास पदाधिकारी एवं अंचलाधिकारी में से कोई भी नहीं मिले। दोनों के कार्यालय में सत्यार्थ प्रकाश देकर थाना गए। थाना प्रभारी को सत्यार्थ प्रकाश भेंट किए। वहाँ से न्यू ढिलन स्टार कैरियर सिवान जाकर सत्यार्थ प्रकाश लिए। दिल्ली से यहीं मंगवाए थे। फिर महाराजगंज गए। रात्रि विश्राम डी ए वी पब्लिक स्कूल में हुआ।

दिनांक ६ सितम्बर को वहीं यज्ञशाला में दैनिक हवन किए। प्राचार्य महोदय के आने पर बच्चों के बीच कार्यक्रम हेतु निवेदन किया। वे छठी एवं सातवीं के बच्चों के बीच कार्यक्रम करवाए। उन्हें अच्छा लगा। वे एक शिविर अपने विद्यालय में लगाने हेतु निवेदन किए। वहाँ से प्रखण्ड कार्यालय महाराजगंज गए। अंचलाधिकारी को सत्यार्थ प्रकाश भेंट किए। प्रखण्ड विकास पदाधिकारी नहीं थे, अंचलाधिकारी को ही उनके लिए भी दे दिए। थाना जाकर थाना प्रभारी को सत्यार्थ प्रकाश भेंट किए। अनुमण्डल पुलिस पदाधिकारी कार्यालय गए। वे थे पर नहीं मिले। उनके कार्यालय में सत्यार्थ प्रकाश एक कर्मचारी को भेंट किए। वहाँ से प्रखण्ड कार्यालय गौरैया कोठी गए। वहाँ अंचलाधिकारी को सत्यार्थ प्रकाश भेंट किए। प्रखण्ड विकास पदाधिकारी के लिए उनके कार्यालय में दे दिए। वहाँ से प्रखण्ड कार्यालय बसन्तपुर गए। प्रखण्ड विकास पदाधिकारी एवं अंचलाधिकारी को सत्यार्थ प्रकाश भेंट किए। आर्य समाज सिवान के प्रधान जी की व्यवस्था में एक मन्दिर पर भोजन हुआ। दो प्रखण्ड एवं दो थाना हेतु आठ सत्यार्थ प्रकाश प्रधान जी को सौंप कर हम लोग मुजफ्फरपुर जिला के लिए प्रस्थान किए। गुरुकुल के प्रधान श्री योग मुनि जी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं होने के कारण उन्हें लेकर मैं गुरुकुल चला। श्री योगीराज जी आर्य और ब्रह्मचारी रमेश जी मुजफ्फरपुर जिले में सत्य सनातन वैदिक धर्म प्रचार यात्रा लेकर गए।

दिनांक १३ सितम्बर को सत्य सनातन वैदिक धर्म प्रचार यात्रा दरभंगा जिला के सिंहवारा प्रखण्ड में प्रवेश कर ३० सितम्बर तक दरभंगा जिला में रहेगी और दिनांक १ अक्टूबर को समस्तीपुर जिला में प्रवेश कर दिनांक २० अक्टूबर तक समस्तीपुर जिला में रहेगी। जिला बेगूसराय में यह सत्य सनातन वैदिक धर्म प्रचार यात्रा दिनांक २१ अक्टूबर को प्रवेश कर दिनांक ७ नवम्बर तक रहेगी।

सनातन वैदिक धर्म के संरक्षण हेतु समर्पित 'वैदिक संसार' पत्रिका के सम्माननीय संरक्षक महानुभाव

श्री मोहनलालजी भाट
वेद ज्ञान पिपासु
लस्सानी दोयम, अजमेर

ठा. विक्रमसिंह जी आर्य
अध्यक्ष
राष्ट्र निर्माण पार्टी, दिल्ली

स्मृति शेष
श्री नेमीचन्द जी शर्मा
गान्धीधाम (गुजरात)

श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य
प्रधान सा.आ.प्र. सभा
अहमदाबाद (गुजरात)

श्री रामफलसिंहजी आर्य
वैदिक प्रवक्ता
भिवानी (हरियाणा)

श्री शिवनारायणजी उपाध्याय
वेद मर्मज्ञ
कोटा (राजस्थान)

आ. सत्यसिन्धु जी आर्य
प्राचार्य : आर्ष गुरुकुल
नर्मदापुरम, होशंगाबाद (मप्र)

आ. आनन्द जी पुरुषार्थी
अ. वैदिक प्रवक्ता
होशंगाबाद (म.प्र.)

आचार्य वाचोनिधिजी आर्य
जीवन प्रभात
गान्धीधाम, गुजरात

श्री दीनदयालजी गुप्ता
प्रधान : आर्य प्र.सभा बंगाल
कोलकाता (प. बंगाल)

श्री रमेशमुनि वानप्रस्थी
वेद सैनिक
कोलकाता (प.बंगाल)

श्री आनन्ददेव जी आर्य
आर्यत्व के प्रतिमान
कोलकाता (प. बंगाल)

श्री जयदेव जी आर्य
उद्योगपति एवं दानवीर
राजकोट (गुजरात)

न्यायमूर्ति सज्जनसिंह कोठारी
पूर्व लोकायुक्त, राजस्थान
जयपुर (राज.)

श्री वेदप्रकाश जी आर्य
आई.ओ.सी.एल.
सवाई माधोपुर (राज.)

अधि.रतनलाल जी राजौरा
उपमन्त्री- आर्य समाज
निम्बाहेड़ा (राज.)

श्री रमेशचन्द्रजी भाट
वैदिक ज्ञान पिपासु
अजमेर (राज.)

कर्नल चन्द्रशेखरजी शर्मा
वेद ज्ञान पिपासु
उदयपुर (राज.)

स्मृति शेष
श्री ओमप्रकाशजी शर्मा
आगरा (उ.प्र.)

श्री अर्जुन जी झलोया
वरिष्ठ समाजसेवी
मन्दसौर (म.प्र.)

श्री महेन्द्र जी आर्य
वरिष्ठ समाजसेवी
अहमदाबाद (गुजरात)

श्री समाधान जी पाटिल
वैदिक धर्मनिष्ठ युवा
जलगाँव (महाराष्ट्र)

श्री रामभजनजी आर्य
वरिष्ठ समाजसेवी
बूढ़ा, मन्दसौर (म.प्र.)

श्री नरेश जी दम्मीवाल
वरिष्ठ समाजसेवी
जोधपुर (राजस्थान)

श्री पूनाराम जी बरनेला
बरनेला चेरिटेबल ट्रस्ट
जोधपुर (राजस्थान)

श्री सीतारामजी शर्मा
वरिष्ठ समाजसेवी
अहमदाबाद (गुजरात)

श्री लेखराज जी शर्मा
टी.पी.टी. कॉन्ट्रेक्टर
भरतपुर (राज.)

श्री लक्ष्मीनारायणजी पाटीदार
(आर्य) संभाग प्रभारी, उज्जैन
विक्रम नगर (मौलाना), म.प्र.

श्री शंकरलालजी लदरेचा
वरिष्ठ समाजसेवी
बीकानेर (राज.)

श्री बालकृष्णजी गुप्त
संयुक्त कलेक्टर (से.नि.)
ग्वालियर (म.प्र.)

श्री अशोक कुमारजी गुप्ता
वैदिक ज्ञान पिपासु
शिवपुरी (म.प्र.)

श्री विनोद जी जायसवाल
वैदिक भामाशाह
रायपुर (छत्तीसगढ़)

श्री ब्रह्मदत्तजी शर्मा
वैदिक धर्म प्रेमी
रोहतक (हरियाणा)

श्री रामचन्द्रजी कारपेन्टर
से.नि. शिक्षक
ब्यावरा (म.प्र.)

श्री शीतलकुमारजी पटेल
वेद भक्त युवा
रायपुर (छत्तीसगढ़)

श्री नानूराम जी जांगिड
जा.ब्रा. जिलाध्यक्ष
धुलिया (महाराष्ट्र)

श्री मोहनलालजी दशोरा
वैदिक साहित्यकार
नारायणगढ़ (म.प्र.)

श्री श्रीराम कुमार आर्य
पूर्व जिला शिक्षा पदाधिकारी
सरसोल खुर्द, शिवहर (बिहार)

श्री अनिल जी शर्मा
युवा समाज चिन्तक
इन्दौर (म.प्र.)

श्रीमती सुमित्राजी - श्री ओमप्रकाशजी शर्मा
योग प्रशिक्षिका उदारमना धर्मनिष्ठ
नरोड़ा, अहमदाबाद (गुजरात)

सुश्री आदर्श आर्या
आर्ष कन्या विद्यापीठ
नजीबाबाद (उ.प्र.)

शुद्धि यज्ञ सम्पन्न किया गया

स्मृतिशेष श्री सुरेशजी (शरद) शर्मा, चौथा संसार वाले, निवासी स्कीम नं. ७४-सी, इन्दौर का निधन २६ अगस्त २०२३ को ७५ वर्ष की आयु में हो गया। आपके परिवार में परम्परा रही है कि किसी के निधन पर वैदिक विधि से शुद्धि यज्ञ किया जाता रहा है। अतः आपके निधन के पश्चात् दिनांक २८ अगस्त को आचार्य प्रणवीरजी शास्त्री, धर्माचार्य आर्य समाज संयोगितागंज (छावनी) इन्दौर के ब्रह्मत्व में तथा वैदिक संसार मासिक पत्रिका के प्रकाशक सुखदेव शर्मा की विशेष उपस्थिति में शुद्धि यज्ञ सुरेशजी (शरद) की धर्मपत्नी श्रीमती लीला शर्मा के मुख्य यजमानत्व में स्वस्तिवाचन तथा शान्तिकरण एवं यजुर्वेद के ४०वें अध्याय के मन्त्रों की आहुतियाँ प्रदान कर सम्पन्न किया गया।

एम.पी.एच.आई.एन.-२०१२/४५०६९ • सम्पादक : गजेश शास्त्री • डाक पंजीयन : एम.पी./आई.डी.सी./१४०५/२०२१-२३

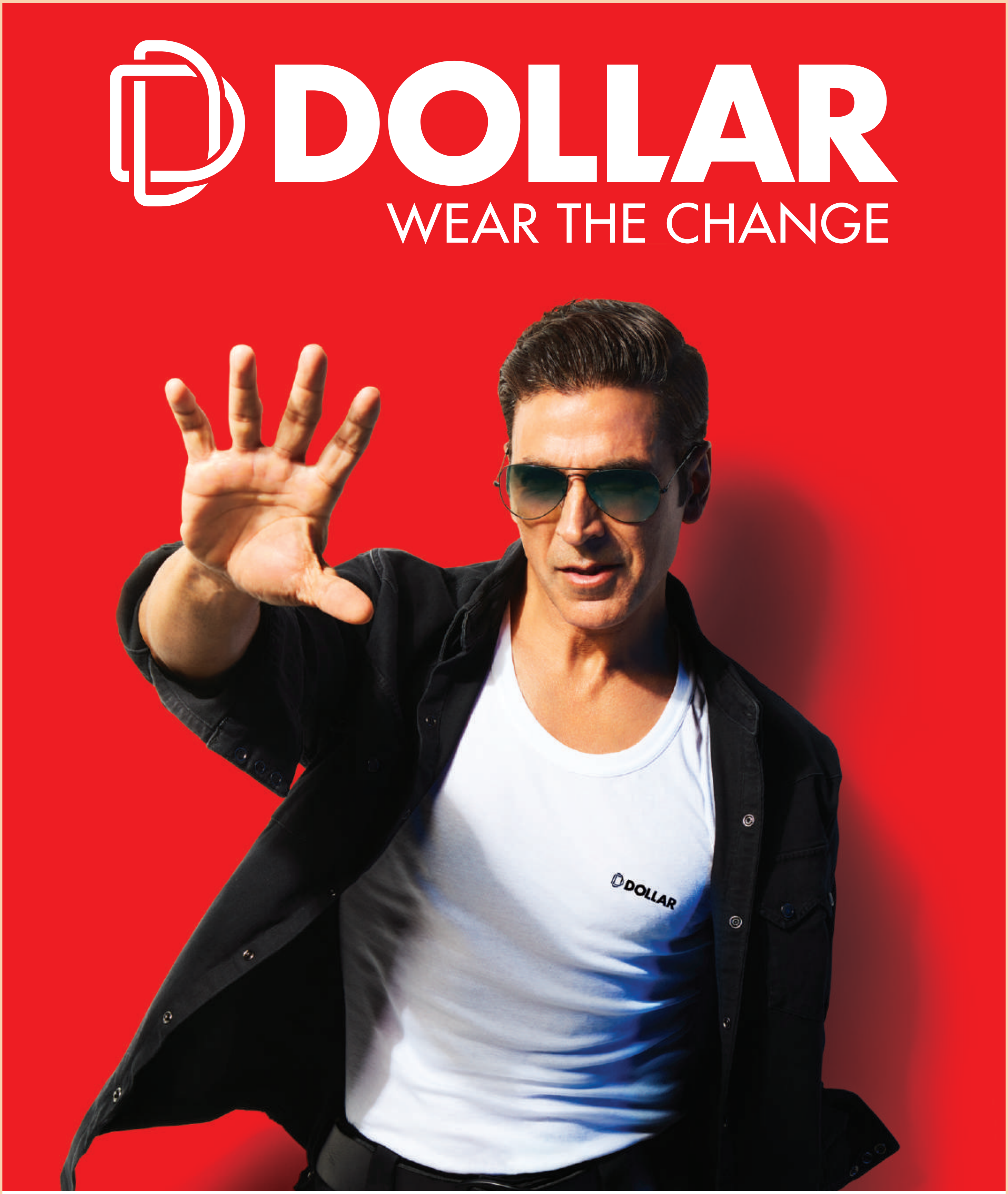

| www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at all leading shopping portals
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक : सुखदेव शर्मा, इन्दौर द्वारा इन्दौर ग्राफिक्स, २४, कुँवर मण्डली से मुद्रित एवं १२/३, संविद नगर, इन्दौर-१८ से प्रकाशित